बीकानेर जिले में स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी काव्य-चेतना

राजस्थान विश्वविद्यालय की एम ए (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत

बनवारी लाल सहू

भूमिका लेखक—
डॉ० कन्हैया लाल शर्मा
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर

बीकानेर जिले में स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी काव्य चे[illegible]

लेखक बनवारी लाल सहू

प्रकाशक—
कल्पना प्रकाशन
दाऊजी रोड
बीकानेर

मूल्य
रू 12.00

मुद्रक
राजश्री प्रिंटर्स
के ई एम रोड
बीकानेर

BIKANER ZILLE MEN SWATANTRYOTTAR
HINDI KAVYA CHETNA
BANWARI LAL SAHU

श्रद्धेय गुरूवर
डॉ० कन्हैया लाल शर्मा को
सादर, सविनय
समर्पित ।

भूमिका

स्वतन्त्रता प्राप्ति, जो परतन्त्रता काल मे साध्य होती है स्वतन्त्रता काल मे साधन बन जाती है। दोना कालो की चिन्तन-धारा व भाव धारा म ऐसा अतर दिखाई देता है, जो अस्ताचल और उदयाचल से प्राप्त प्रकाश मे होता है। प्रथम की लालिमा मे रात्रि के अधकार की आशका निहित रहती है और द्वितीय की अरुणाभा आलोकमय भविष्य का सकेत लिए रहती है। प्रबुद्ध द्रष्टा अपने काल से सुदूर तक झाककर देख लेते हैं और अपना पथ सुनिश्चित कर लेते है। महात्मा गाधी ने जो माग अपनाया था उस पर चलकर हम १५ अगस्त १९४७ को ग तव्य तक पहुचे और स्वतन्त्र हुए।

परतन्त्रता काल म शासक-वग का प्रभुत्व देश की आर्थिक, सामाजिक, सास्कृतिक और राजनैतिक उन्नति को अवरुद्ध कर देता है। परतन्त्र देश के व्यक्ति धीरे धीरे निराशा और हीनता का अनुभव करने लगते हैं। उनका आत्म सम्मान लुप्तप्राय हो जाता है और वे मत का जीवन जीने लगते हैं। उनका हौसला पस्त हो जाता है और वे स्व रूप को पहचानने मे अक्षम हो जाते हैं। सन १९४७ के पूव के भारतीय साहित्य मे निराशा, व्यथा, हीनता आदि की अभिव्यक्ति अनेक वादगत कवियों मे मिलती है और कही इसकी प्रतिक्रिया भी देखने मे आती है। पलायन अथवा अदृश्य शक्ति पर आस्था भी ऐसे काल के साहित्य मे मिलती है। सक्षेप मे, ऐसे काल का साहित्य अस्वस्थ मस्तिष्क की उपज होता है।

१५ अगस्त, ४७ देश की राजनैतिक स्वतन्त्रता का दिन था, पर उसके बाद देश म अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाए घटित हुई हैं, जिन्होने राष्ट्र मन को प्रभावित किया है। देश का विभाजन और रक्त पात, गांधीजी की हत्या, सविधान की स्वीकृति, एक एक करके चार पचवर्षीय योजनाओ का क्रिया वयन ऋण रूप म विदेशी धन का विपुल मात्रा मे आगमन, देशी राज्यो का विलीनीकरण और चीन और पाकिस्तान का आक्रमण, भाषावार प्रा तो का निर्माण, प्रजातान्त्रिक विकेद्रीकरण, अवमूल्यन, बैंको का राष्ट्रीयकरण, चुनाव तथा राजनैतिक अस्थिरता बाधो और नहरो का निर्माण आदि ऐसी महत्वपूर्ण घटनाए हैं जो देशवासियो को अप्रभावित नही रख सकी हैं। सचार व्यवस्था के विकास से देश के विभिन्न भागो की दूरी कम हुई है और इस विशाल देश के एक क्षेत्र में घटित घटना इसके दूसरे छोर को प्रभावित करने लगी है। अत साहित्य सजना चाहे बगाल

म हो अथवा राजस्थान मे, गुजरात म हो अथवा पजाब म, देशव्यापी समान धर्मिता अपनाये हुए है। अत बीकानेरी 'काव्य' का अध्ययन विखडन की प्रवृति से प्रेरित न होकर समग्र हिन्दी काव्य के अश को समझने का प्रयास है। अश से अशी की ओर खड से पूर्ण की कल्पना सभव है और यह सोपान भी है।

राजनैतिक स्वतन्त्रता के पश्चात् परमुखापेक्षी पचवर्षीय योजनाओं के कारण देश को ऋणी होकर जीना पड रहा है—आर्थिक गुलामी म जीना पड रहा है। परतन्त्रता स्वरूप बल्लकर आज भी देश में बनी हुई है। हा, स्वामित्व इग्लैंड से चल कर अमेरिका और रूस पहुच गया है। देश का मस्तिक 'बोहरे,' के सकेत पर अमरिका को बेचा या भेजा जा रहा है या उसे लाल टोपी' पहनायी जा रही है! राजनैतिक दौडो धूप ने देश की पार्टियों के ध्रुवीकरण के साथ साथ जनता को भी दो खेमा म से किसी एक मे धकेल दिया है। इससे हीनता की भावना और अधानुकरण को बल मिला है तथा चिन्तन के नाम पर अनुकरण उभरा है। हिन्दी साहित्य को भी अनुवाद और अनुकरण के रूप मे बहुत सी सामग्री इस काल मे प्राप्त हुई है।

देश का आर्थिक विकास योजनाबद्ध हो रहा है पर आलोच्य काल मे जिस विपुल साहित्य की सजना हुई है वह आबद्ध होकर भी अनाबद्ध है। सन् १९४३ से आरम्भ प्रयोगवाद और १९५३ स आरम्भ नयी कविता' के घेरो मे बधकर चलनेवालो से बाहर भी पर्याप्त काव्य लिखा जा रहा है।

बीकानेर जिले में स्वतन्त्रता म पूव तत्कालीन नरेशो की सकीण स्वाथ प्रेरित विचारधारा के कारण शिक्षा का प्रचार अत्य त म द गति से हुआ। उन्हे जो अमर्यादित अधिकार परम्परा से प्राप्त थ उनके आतक स राजनतिक चेतना राख के नीचे सुलगती आग क समान धुआ ही दे पा रही थी, प्रकाश नही। स्वतत्र चेता अनुभूतिशील मनुष्यो की अभिव्यक्त वाणी-स्वातत्र्य के अभाव मे कु ठित होकर रह जाती थी। एक खास ढर्रे की चारणी अभिव्यक्ति की धारा तब भी प्रवाहित थी। स्वतनता के एक झोके ने वाणी स्वातत्र्य के स्फुलिंग को प्रज्वलित कर दिया और वाग्धारा अनेक स्रोतों म वह निकली।

कालक्रम से दृष्टिपात करने पर हि दी की खडीबोली काव्यरचना की सक्षिप्त उद्धरणी बीकानेर के साहित्य में मिलती है। गत दो दशकों मे देश प्रेम उपदेशात्मकता श्रमिक-कृषक वग के प्रति सहानुभूति, प्रयोगो का आधिक्य, बौद्धिकता का आग्रह आदि कालक्रम से आते से दिखाई देते हैं और फिर सब अपनी अपनी ढफली और अपना अपना राग अलापने लगत हैं पर उदयकालीन स्वर मद

है। बीकानेर मे साहित्य क्षितिज पर अब नयी पीढी छायी हुई है, जो 'नयी कविता' के स्वरो म स्वानुभूतियो को व्यक्त करती है। अपने मुक्त क्षणो को, जो यथाथ से प्रेरित होते हैं वह व्यक्त करती है। उसके द्वारा आस्था अनास्था की अभिव्यक्ति हुई है और उसकी वैयक्तिकता तथा अह उसके काव्य मे स्थान बना सके हैं। उसकी कविता बौद्धिकता से ग्रस्त है। इन्हीं कुछ स्थापनाओ को प्रस्तुत प्रब ध में लेखक ने चौथे अध्याय में व्यक्त किया है। इसमे पूव दूसरे अध्याय मे उसने बीकानेर जिले के कवियो की काव्य रचनाओ का सक्षिप्त परिचय दिया है। 'बहिश्चेतना' शीषक से कलापक्ष के विचार को सर्वांगीण बनाने का प्रयास किया है। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का अ तिम अध्याय लघ्वाकारी है पर महत्वपूण है। लेखक ने कुछ शब्दो तथा भावों को चुनकर उनके द्वारा यह दिखाया है कि प्रत्येक क्षेत्र के साहित्य की निजी शब्द सपति व भाव सपति होती है, जो अपना राष्ट्रीय महत्व रखती है।

'बीकानेर जिले में स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी काव्य चेतना, लघु शोध प्रब ध श्री बनवारी लाल सहू के जो मेरे शिष्य हैं मनोयोग से किये गये परिश्रम का सफल परिणाम है। बिखरी सामग्री को सकलित करने से लेकर उसका विश्लेषण, वर्गीकरण प्रस्तुतीकरण आदि की जटिलताओ मे से निकालते हुए प्रस्तुत शोध प्रब ध का जो सुव्यवस्थित रूपाकार दिया है उसे देखकर मुझे प्रसन्नता हुई है।

सहू का यह प्रथम प्रयास बीकानेर के शोध छात्रों को दिशा और प्रेरणा दे रहा है और मेरा विश्वास है कि भविष्य मे भी देता रहेगा। मैं इसका स्वागत करता हू।

डॉ० कन्हैयालाल शर्मा
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
डूगर महा विद्यालय, बीकानेर

दो शब्द

पिछले दो दशकों में हिन्दी साहित्य का पर्याप्त विकास और विस्तार हुआ और इसमें उत्तरी भारत ने पर्याप्त योग दिया है। स्वतन्त्रता के पश्चात् तो सम्पूर्ण उत्तरी भारत मे साहित्य-चेतना अपने अदम्य उत्साह से अग्रसर हो रही है। इस चेतना म राजस्थान ने भी योग दिया है। हिंदी के क्षेत्र के अन्तर्गत आनेवाले यह क्षेत्र देश के अन्य भागो के साहित्यकारों के साथ कदम मे कदम मिला कर बढ रहा है, पर भारतीय स्तर पर मूल्यांकन की दृष्टि से इसकी उपेक्षा हुई है। कारण यह रहा है कि हिन्दी साहित्य के इस व्यापक प्रचार प्रसार के साथ आलोचकों का ध्यान इस क्षेत्र की ओर नहीं गया, क्योंकि इस से पूर्व यहा पर साहित्य-सृजना के क्षेत्र म उल्लेखनीय कार्य नही हुआ था और न ही तत्कालीन इतिहास लेखकों ने इधर ध्यान दिया था।

प्रस्तुत लघुशोध प्रबन्ध किसी क्षेत्रीय भावना से प्रेरित होकर नही लिखा गया है इसका उद्देश्य तो हिन्दी साहित्य के इस व्यापक विस्तार के विभिन्न क्षेत्रों को प्रस्तुत करने की दिशा में एक प्रयास-मात्र है। ग्रे' के अनुसार कभी कभी "सुन्दर सुन्दर कुसुम भी वन म अनालोचित रह जाते हैं और उनकी सुरभि मरुभूमि मे खो जाती है।' यह प्रयास उस कवि की आशंका से प्रेरणा लेकर किया गया है। क्षेत्रीय आधार पर यदि इसी प्रकार कार्य हुआ तो देश म व्याप्त साहित्यिक चेतना का सही मूल्यांकन होने म सहायता मिल सकेगी। इस प्रकार यह अपने ढंग का पहला प्रयत्न है और मौलिक भी है। मौलिक इस अर्थ म कि बीकानेर जिले के कवियो पर अब तक छुट पुट प्रकार से यदाकदा ही पत्र पत्रिकाओं मे लिखा गया है। प्रकाशित और अप्रकाशित काव्य के बिखरे रत्नों को एकत्र करने और तत्पश्चात् उनका विश्लेषण संश्लेषण करने का यह प्रथम प्रयास है।

प्रथम अध्याय बीकानेर जिले और उसके काव्य परिवेश का है, जिसम जिले की उन सभी परिस्थितियों पर प्रकाश डाला गया है जो यहा की काव्य चेतना से प्रत्यक्ष या परोक्ष सम्बन्ध रखती है। यह क्षेत्र सरस्वती के लुप्त हो जाने का क्षेत्र माना जाता है, जैसा कि यहां के विशाल साहित्य भण्डारो से स्पष्ट होता है। अत आलोच्यकाल की काव्य चेतना को समझने के लिए एक विहंगम दृष्टि प्राचीन संस्कृत और डिंगल साहित्य पर भी डाली गई है और इस क्षेत्र

राजाओ ने साहित्य-रचनाओं म जो योग दिया है, उसकी भी चर्चा हुई है। द्वितीय अध्याय में इस जिले के कवियो की प्रकाशित और अप्रकाशित रचनाओं का संक्षिप्त आलोचनात्मक परिचय दिया गया है और प्रयास यह किया गया है कि कोई महत्वपूर्ण रचना अनालोचित न रह जाये। वैज्ञानिक अध्ययन की दृष्टि से इस अध्याय मे आलोच्यकाल के पूर्व के हिन्दी कवियों पर तनिक विस्तार से विचार इसलिए किया है कि उन्ही कवियो की रचनाए हमारी गवेषणा के आधार शेष अध्यायो मे बनी है। तृतीय अध्याय काव्य-रूप विषयक है। इस क्षेत्र म केवल गीत और मुक्तक आलोच्यकाल मे मिलते हैं। विविध गीत रूपो और मुक्तक प्रकारो के आधार पर यहा के काव्य का रूप निर्धारण किया गया है। चतुर्थ अध्याय का शीर्षक जिले के काव्य की अन्तश्चेतना है। इस अध्याय मे इस क्षेत्र म जो बहुमुखी विषय वस्तु सामने आयी उसका गहराई से अध्ययन किया गया है। पाचवा अध्याय बहिर्चेतना का है जिसमे काव्य के बाह्य पक्ष, भाषा, छन्द, अलकार आदि पर विचार हुआ है, जिसमे यह ध्यान रखा गया है कि इस क्षेत्र के काव्य में उपयुक्त शीर्षको के अन्तगत विचारित विषयो मे क्या मौलिकताए और विशिष्टताए है। वैशिष्ट्य और योगदान इस लघुशोध प्रबन्ध का अन्तिम और महत्वपूर्ण अध्याय है जिसमे मैंने यह दिखाया है कि भाव पक्ष और कला की दृष्टि से यहाँ के काव्य ने शेष हिन्दी काव्य को क्या दिया है और निष्कर्ष रूप में यह बताया है कि यहा का काव्य हिन्दी काव्य की सही प्रतिलिपि नही है अपितु उसमें मौलिक क्षमताए है।

विषय की क्षेत्रीयता मेरे लिए अवश्य ही समस्या बनकर आयी है। साधन और समय के अभाव ने इस अध्ययन को जटिल बनाया है। पत्र-व्यवहार मित्रवर्ग और अध्यापक मेरे इस अध्ययन म सहायक बने हैं। लेखक क प्रयास सदव यह रहा है कि इस काल की कोई महत्वपूर्ण सामग्री छट न जाये, फिर भी किसी कवि विशेष के असहयोग या मेरी असमर्थता से कुछ छूटा है तो इसमे लेखक की विवशता ही समझनी चाहिए।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध डा० कन्हैयालाल जी शर्मा के निर्देशन मे पूरा हुआ है। गुरुवर के पाण्डित्यपूर्ण निर्देशन एव असीम स्नेह के लिए मैं उनका अत्यन्त ही अनुगृहीत हूँ। आदरणीय श्री हरिराम जी तिवारी का मैं अत्यन्त आभारी हूँ जिनका शुभाशीर्वाद ही इस प्रबन्ध मे फलित हुआ है। महाविद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती डा० स्वर्णलता जी अग्रवाल ने विभिन्न संस्थाओ स मेरा सम्पर्क स्थापित कराने म सहायता की है इसके लिए मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ। विद्या-

वाचस्पति श्री विद्याधर जी शास्त्री एव स्वर्गीय श्री नाथूराम जी खड्गावत ने बीकानेर के प्राचीन साहित्य के सम्बन्ध मे मेरी तत्सम्बन्धी जिज्ञासाओ का समाधान किया है इसके लिए मैं इन विद्वानो का अत्यन्त आभारी हू। डूगर महाविद्यालय के व्याख्याता डॉ० मदन केवलिया डॉ० ब्रजनारायण पुरोहित, श्री रामदेव आचार्य वातायन के सम्पादक श्री हरीश भादानी सादूल स्कूल के अध्यापक आचार्य चन्द्रमौलि जी आदि सभी गुरुजनो एव विद्वानो के प्रति मैं अपना हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ जिन्होने समय-समय पर इस प्रबन्ध से सम्बन्धित मेरी कठिनाइयो का निवारण किया है। मैं उन सभी कवियो का भी आभारी हूँ जिन्होने अपनी अप्रकाशित रचनाओ का उपयोग करने दिया है। सेनानी, लोकमत वातायन, सप्ताहान्त आदि पत्र पत्रिकाओ के सम्पादको का आभार मानना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हू, जो मुझे आवश्यकतानुसार पत्र एव पत्रिकाए देते रहे हैं। नरेन्द्र कुमार, कृष्णचन्द्र शर्मा, 'सरल' कन्हैया ओझा, रामस्वरूप बिश्नोई किशनलाल धारणिया आदि मित्र भी धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होने इस प्रबन्ध से सम्बन्धित सामग्री एकत्र करने मे मेरी सहायता की है। डॉ० पूनम दईया एव सरल' न यदि इसके मुद्रण की व्यवस्था न की होती तो शायद मैं इसे आप तक पहुचाने मे असमर्थ ही रहता, इसके लिए मैं उनका आभारी हू।

आदरणीय डॉ० कन्हैयालाल जी शर्मा ने अपने व्यस्त समय मे इस प्रबन्ध की भूमिका लिख कर गुरु स्नेह दिखाया है। श्रद्धेय गुरुवर के प्रति मैं श्रद्धानत हूँ।

अन्त मे, मैं यही निवेदन करना चाहूगा कि यह प्रबन्ध जरा भी काम पडा है उस ही नीर क्षीर विवेकी सरस्वती पुत्रो के समक्ष प्रस्तुत करते हुए सतोष का अनुभव कर रहा हूँ।

बनवारी लाल साहू

स्वतन्त्रता दिवस १९७०

वीकानेर जिले में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य-चेतना

बनवारी लाल सहू

विषयानुक्रमणिका

बीकानेर जिले का काव्य परिवेश

भारतवर्ष सभ्यता और संस्कृति की दृष्टि से विश्व में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्राचीन काल में इस देश में बहुत सी जातियों का उत्थान और पतन हुआ, किंतु इतना-कुछ होने पर भी इसकी सभ्यता एवं संस्कृति को आंच नहीं आयी वह ज्यों की त्यों बनी रही। अपनी समन्वय की विशेषता के फल-स्वरूप इसमें अनेक जातियों का समन्वय हुआ है। बाहर से आने वाली जातियों ने भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से बहुत कुछ सीखा है।

बीकानेर का प्रागैतिहासिक स्वरूप

भारतवर्ष कई प्रांतों में विभक्त है जिसमें से एक राजस्थान है। यही राजस्थान पहले राजपूताना के नाम से जाना जाता था। इस प्रदेश को हम भारतवर्ष की वीर भूमि कह सकते हैं। बीकानेर इसी प्रदेश का एक भाग है, जो कि राजस्थान के उत्तर पश्चिम में है। बीकानेर जिले में दूर-दूर सैकड़ों मीलों तक बालू के टीले ही टीले दृष्टिगत होते हैं। पौराणिक मतों के अनुसार बीकानेर का प्राचीन नाम जांगल देश था।[1] जांगल देश से अभिप्राय खेजड़ा, कैर और आक के शुष्क प्रदेश का भी है।[2] दूसरा कारण यह भी है कि बीकानेर के राजा जांगल देश के स्वामी होने के कारण आज भी जंगलधर बादशाह कहलाते हैं। इसकी पुष्टि बीकानेर राज्य-चिन्ह के लेख से होती है।[3] परन्तु भूगोल शास्त्रियों के अनुसार यह प्रदेश प्रारंभ में रेगिस्तान नहीं था, अपितु जुरैसिक, कौटेशियम और इसोसीन के युगों में बीकानेर और जैसलमेर का भाग समुद्र से घिरा हुआ था।

१— गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा – बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) पृ० १

२— गौरीशंकर आचार्य बीकानेर परिचय पृ० ५

३— गौरीशंकर हीराचन्द ओझा – बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) पृ० ३

जो समुद्र टथिस के नाम से था ।[1] टेरनरी युग म इस स्थिति में परिवतन हुआ और वह भाग पृथ्वी की आन्तरिक नक्तिया के परिवतन के कारण ऊपर उठने लगा। इस युग म अमेरिका का बहुत सा भाग ग्लेशियरा से ढका हुआ था। धीरे-धीरे इस भू परिवतन से भूमि ऊपर उठती गई और समुद्र समाप्त हो गया तथा रेतिला भाग निकल गया । इस प्रकार इस प्रदश का जागल नाम बाद का प्रतीत होता है। इसके अतिरिक्त वाल्मीकि रामायण म इसके मरुस्थल मे परिणत होने की एक सुन्दर गाथा मिलती है।[2]

इन सभी बातों स यह स्पष्ट होता है कि यह भाग पहले समुद्र से ढका हुआ था और धीरे-धीरे पृथ्वी की आ तरिक शक्तिया क परिवतन स समुद्र म विलीन हो गया तथा इस भूभाग की सष्टि हुई। यही कारण है कि इस प्रदेश म आज भी शख, सीप कौडी, गोल पत्थर (Round-Stone) आदि मिलत हैं जो इस बात को प्रमाणित करत हैं कि इस विशाल रेतीले भू-भाग पर कभी समुद्र लहराता था।

बीकानेर के इस रेतीले भाग पर आज कोई भी नदी नही बह रही है। लकिन पुरातत्व की खोजा के आधार पर यह कहा जाता है कि इसकी पश्चिमी सीमा पर पहले सरस्वती नदी बहा करती थी जो आज बिलकुल सूख गई है।[3] इसक अतिरिक्त सि धु नदी की सहायक नदी घग्गर थी, जो पहल हाकड के नाम से प्रसिद्ध

१— गौरीशकर आचाय — बीकानेर परिचय पृ० ५

२— वाल्मीकि रामायण के युद्ध काड के बाइसवें सग मे लिखा है कि जिस समय रामचन्द्र जी ने लका पर चढाई की और उस समय जब समुद्र न रामच द्र जी को माग देने से इन्कार कर दिया तो रामचन्द्र ने समुद्र से माग के लिए प्राथना की लेकिन उस प्राथना का कोई प्रभाव नही पडा। आखिर रामचन्द्र ने क्रोधित होकर अपना तीर सम्भाला। इस पर समुद्र स्वय रामच द्रजी के सामने उपस्थित हुआ और प्राण रक्षा की भीख मागी। समुद्र ने रामचन्द्र के इस बाण को उत्तर मे स्थित द्रुमकल्प भाग पर चलवाकर अपने प्राण बचाय। ऐसा कहा जाता है कि उसी दिन से वहाँ स जल सूख गया और इस मरुस्थल की उत्पत्ति हुई।

३— गौरी शकर आचाय —बीकानेर एक परिचय पृष्ठ ७

थी, इसके उत्तरी भाग मे बहती हुई सिंधु मे जाकर मिलती थी।[1] भूमितल के ऊपर उठ जाने से आज वह बद हो गई है, किंतु उसके सूखे मार्ग का तो पता अब भी चलता है। वर्षा ऋतु मे पानी इसी माग से हनुमानगढ सूरतगढ होता हुआ, अनूपगढ पहुच जाता है जिसे आजकल 'नाली' कहा जाता है।

बीकानेर की स्थापना

जहा सोने की चिडिया भारतवर्ष ने विदेशी आक्रमणकारियो को शताब्दियो से ललचाया है वहा उसका यह भूभाग राजस्थान अपने कुशल और प्रतापी शासको की वीरता और भौगोलिक कारणो से जनित दुर्गमता के फलस्वरूप अपनी स्वाधीनता और अखडता को अक्षुण्य बनाये रहा है। इसके भी एक खड बीकानेर जिसे ने अपनी रेतीली प्रकृति और जनसख्या की स्वल्पता के कारण आक्रमको को अपनी ओर तनिक भी आकर्षित नही किया है। राठौडो का बीकानेर राज्य पर अधिकार होने से पूव यह राज्य बहुत से भागो मे विभक्त था। इनके पूर्व यहा बहुत सी जातिया ने राज्य किया।[2] इन जातियो का क्रम किस किस प्रकार से रहा इसके बारे में निश्चित रूप से कुछ नही कहा जा सकता। हा, इतना अवश्य कहा जा सकता है कि राव बीका से पहले इस क्षेत्र पर जाटो का अधिकार था।[3]

बीकानेर के राजा जोधपुर के राव जोधा के पुत्र बीका के ही वशधर हैं। ऐसा कहा जाता है कि एक दिन राव जोधा अपना दरबार लगाये बठे थे और बीकाजी दरबार मे कुछ देर से आये और आते ही अपने चाचा (कांधल) के कान मे धीरे-धीरे कुछ कहने लगे। इस पर राव जोधाजी ने मजाक करते हुए कहा कि आज चाचा भतीजे मे क्या कानाफूसी (Whisper) हो रही है क्या कोई नये राज्य की स्थापना करने की योजना है? कहते हैं कि इस ताने को सुन कर उसी

१— गौरीशकर आचाय बीकानेर एक परिचय ७

२— गौरीशकर हीराचन्द ओझा – बीकानेर का इतिहास (पहला भाग) पृ० ६६

३— कनल टाड – राजस्थान का इतिहास पृ० ५१२

ण्नि से इन दोनों ने नए राज्य की स्थापना करने का दृढ़ निश्चय कर लिया।[1]

राव बीकाजी नये राज्य की स्थापना करने के लिए एक अच्छी सी सेना का सगठन करके ३० सितम्बर १४६५ (वि० स० १५२२) को जोधपुर से रवाना हुए। कहते हैं कि इस समय राव बीका के साथ केवल १०० घोड़े और ५०० राजपूत थे।[2] बीका ने प्रथम पड़ाव मडोर म डाला। उसके उपरा त व देशनोक पहुचे जहा उन्हे करणीजी के दर्शन हुए तथा उनका आशीर्वाद प्राप्त करके और उनके कहने के अनुसार चाडासर म रहने लगे। इस स्थान के बाद उन्होंने कोडमदसर मे प्रवेश किया और यहा इन्होंने अपने आप को राजा घोषित किया। यहा से जागलू पहुँच कर सांखली के ८४ गांवो पर अपना अधिकार कर लिया। करणीजी की सहायता से य पुगल के भाटी राव शेखा की पुत्री रग कवरी स विवाह करने मे सफल हुए।[3] यही कारण है कि आज भी बीकानेर के नरेश करणी माता म विश्वास रखते हैं।

सन १४७८ म बीकाजी ने कोडमदेसर म एक गढ़ बनवाना प्रारम्भ किया जिसके फलस्वरूप इन्हें भाटियो स युद्ध करना पड़ा। इस युद्ध म बीकाजी सफल अवश्य हुए परन्तु भाटियो की छेड छाड बद नहीं हुई। इस पर राव बीकाजी ने और किसी स्थान पर गढ़ बनवाने का निर्णय किया। इस नये किले के लिए नापा सांखला स सलाह की तथा सन् १४८५ (स० १५४२) म नये किले की नींव राती घाटी पर डाली जो वर्तमान किले से लगभग दो मील दक्षिण-पश्चिम म अवशेष रूप म आज भी मिलता है। इसी किले के आस-पास बीकाजी ने

१— Captain P W Powlett — Gazetter of the Bikaner State P 9

— (ख) गौरीशकर हीराचन्द ओझा —बीकानेर का इतिहास (पहला भाग) पृ० ६०

२— '' '' '' '' '' ''९१

३— Captain P W Powlett — Gazetteer of the Bikaner State P 23

१२ अप्रेल सन् १४८८ (स० १५४५) का अपने नाम पर बीकानेर नगर बसाया।[1] बीकानेर की स्थापना के सम्बन्ध में यह दोहा भी प्रसिद्ध है —

पनर मै पैतालवे सुद वैशाख सुमेर
थावर बीज थरप्पियो, बीके बीकानेर[2]

Bisakh, the month, the day, the second, fifteen four five the year And sixth day of the week when Bika founded Bikaner[3]

बीकानेर जिले का विस्तार और सीमा

वर्तमान बीकानेर जिला २७ १५ से २९ १५ अक्षांश उत्तर मे तथा ७२ २० से ७४ ४० पूर्वी देशान्तर म स्थित है। इसका कुल क्षेत्रफल १०,१५० वर्ग मील है। प्रशासन की सुविधानुसार यह जिला दो उप खडो मे विभाजित है। बीकानेर तथा लूनकरनसर उत्तरी खड म तथा नोखा और कोलायत दक्षिणी उप-खड म है। यही इस जिले की चार तहसीलें हैं। इस जिले मे १२३ ग्राम पचायतें तथा २९ न्याय पचायतें, चार पचायत समितियाँ और ६६० ग्राम है। इसके उत्तर पूर्व म गगानगर और चूरू, पूर्व म चूरू दक्षिण पूर्व मे नागौर और चूरू, दक्षिण म जोधपुर और नागौर दक्षिण पश्चिम म जैसलमेर और जोधपुर तथा पश्चिम

१— बीकानेर की राजधानी के निर्माण के लिए उसने जो स्थान पसद किया था उसका अधिकारी एक जाट था। उस जाट से बीका ने उस स्थान की माग की और कहा — राजधानी बनाने के लिए यदि आप यह स्थान हम दे देंगे तो अपने और आपके नाम को जोडकर मैं इस राज्य का नाम रखू गा। उस जाट ने हर्ष पूवक बीका की इस माग को स्वीकार कर लिया। इसके बाद राजधानी का निर्माण हुआ और मरुभूमि मे बीका ने जिस राज्य की प्रतिष्ठा की, उसका नाम बीकानेर रखा गया। उस जाट का नाम नेरा था।

कर्नल टाड — राजस्थान का इतिहास पष्ठ ५१५

२— गौरीशकर हीराचद ओझा – बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) पष्ठ ९३

३— Captain P W Powlett — Gazetter of the Bikaner State P 3

म पाकिस्तान है। और उत्तर पश्चिम म गगानगर जिला है।

बीकानेर जिले का इतिहास

बीकानेर जिले का इतिहास राव बीका से प्रारभ होता है। १२ अप्रेल, १४८८ से लेकर २० मार्च १९४९ तक बीकानेर एक राज्य के रूप म रहा है, जिसमे वतमान बीकानेर चूरू और गगानगर जिला का क्षेत्र जाना जा सकता है।[2] अर्थात बीकानर, चूरू और गगानगर जिले का सम्मिलित रूप ही सन १९४९ स पहले बीकानर राज्य के नाम म जाना जाता था। लगभग ५०० वर्षो तक बीकानेर राज्य पर एक वश (राठौड) का अधिकार रहा है। सन् १९४९ को बीकानेर राज्य का विलीनीकरण हो गया और राजस्थान का निर्माण हुआ। इस समय बीकानेर राज्य तीन जिलो[2] म बाट दिया गया।

बीकानेर जिले की भौगोलिक विशेषताए

बीकानेर जिले का अधिकाश भाग रेतीला ह जिसम २७ से १०० फीट की ऊचाई तक रेतीले टीले पाय जाते है। बीकानेर मे कुछ कडी भूमि है जो मगरा' कहलाती है। समुद्रतट स बीकानेर जिले की ऊचाई लगभग ७०० से १२०० फीट है। बीकानेर स्वय आसपास क धरातल से ७३६ फीट ऊचे चट्टान पर बसा हुआ है। जिले म कोई स्थायी नदी नही है नाले हैं जो वर्षा ऋतु म पानी स भर जाते हैं।

यहा की जलवायु शुष्क एव गम है। वर्षा के अभाव म इस जिले म जगलो का अभाव है। यहा खेजडा नीम तथा बबूल के पेड प्राय मिलते है। रेत के टीलो पर भी सेवान चना फोग भुरट करील तथा गाठिया घास मिलता है। यहा की मुख्य उपज बाजरा मोठ गवार है। खाद्यान्न की दृष्टि से यह जिला आत्मनिर्भर नही है। बीकानेर जिले का मतीरा प्रसिद्ध है।

इस जिले का मुख्य उद्योग पशु पालन है। बीकानेर का ऊट काफी प्रसिद्ध है। राजस्थान भर म अच्छी नस्ल के ऊट यही स भेजे जाते हैं। यहा का

१— डॉ० करणीसिंह — बीकानेर के राजघराने का केन्द्रिय सत्ता स सम्बन्ध पृ० १

२— बीकानर, गगानगर, चूरू।

दूसरा प्रमुख पशु भेड है । राजस्थान म सबसे अधिक ऊन बीकानेर जिले मे ही होती है । यह जिला ऊन उद्योग के लिए भारत म प्रसिद्ध है । प्रति वष लगभग वीस लाख पौंड अच्छे किस्म की ऊन बीकानेर मे उत्पन्न होती है ।

भूगभ की दृष्टि से यह जिला बहुत ही सौभाग्यशाली है । यह जिला जिप्सम के लिए प्रसिद्ध है । भारत म पाय जाने वाले जिप्सम की सबसे अधिक ६० प्रतिशत मात्रा राजस्थान तथा राजस्थान म सबस अधिक मात्रा जामसर मे उपलब्ध होती है । बीकानर जिले म कोयल और लाल पत्थर की भी खानें हैं ।

बीकानेर की परिस्थितिया

साहित्य और जीवन का अटूट सम्बन्ध है । जीवन की प्रतिच्छाया साहित्य मे झलकती है । एक ओर साहित्य जीवन का अनुकरण करता है और दूसरी ओर वह जीवन का माग प्रदशन भी करता है । मानव जीवन पर कई बातो का गहरा प्रभाव पडता है जैसे उसका राजनैतिक धार्मिक और सामाजिक जीवन । राजनैतिक वातावरण मानव के जीवन म बहुत परिवतन ला देता है । यही राजनैतिक परिवतन साहित्य को भी प्रभावित करता है । विश्व के इतिहास को देखें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि जहा पर भी क्राति हुई उसको साहित्य से बहुत अधिक प्रेरणा प्राप्त हुई ।

अत बीकानेर म काव्य चेतना को समझने से पूव यहा की परिस्थितिया को समझना उचित ही होगा ।

राजनैतिक परिस्थिति (स्वतन्त्रता मे पूर्व)

राव बीका मे लेकर शादूलसिंह के पूर्व तक के इतिहास पर एक दृष्टि –

बीकानेर की स्थापना से लकर स्वतन्त्रता–प्राप्ति तक यहा पर एक ही वश (राठौड) का राज्य रहा है । इसका कारण यह था कि यहा के नरेशो ने अपने राज्य रक्षा के लिए कभी भी अपने प्राणो का मोह नही किया । ऐसे बहुत से अवसर आये जब इन्होने अपनी वीरता का परिचय दिया । राजनैतिक दृष्टिकोण स इस काल को दो भागो म विभक्त किया जा सकता है । प्रथम वह जब भारत वष पर मुगलो ने राज्य किया और दूसरा वह जब यहाँ पर अग्रेजो ने राज्य किया बीकानेर राज्य की यह विशेषता रही है कि इसका सम्बन्ध मुगलो के साथ

मित्रता का रहा है, किंतु यह मित्रता किसी दुर्बलता के कारण नहीं थी। अवसर आने पर इन्होंने मुगलों से युद्ध भी किये। बाबर की मृत्यु के बाद जब कामरां ने सेना सहित भटनेर (हनुमानगढ) पर चढ़ाई कर दी और उस समय यह किला खेतजी (काधल के पौत्र) के अधिकार में था। इस समय खेतजी इस युद्ध में वीर-गति को प्राप्त हुए और यहां मुगलों का अधिकार हो गया। इसके बाद कामरां की सेना बीकानेर की ओर बढ़ी। जब जैतसी को इस बात का पता चला तो वह भी अपनी सेना लेकर चल पड़ा और उपयुक्त अवसर देख कर एक रात को वह अपनी सेना सहित मुगलों की सेना पर टूट पड़ा जिससे कामरां को युद्ध से भागना पड़ा। जैतसी की यह उल्लेखनीय विजय है।[1] जैतसी जोधपुर के राजा मालदेव से युद्ध करता हुआ मारा गया। इससे बीकानेर का बहुत सा भाग जोधपुर के अधिकार में चला गया। लेकिन कल्याण मल ने अपनी चतुरता से मुसलमानों से मित्रता स्थापित करके तथा शेरशाह की सहायता से यह भाग फिर अपने अधिकार में कर लिया। शेरशाह के पश्चात देश में मुगलों का बोलबाला हुआ और हुमायूं ने पुनः शासन हस्तगत किया पर हुमायूं का जीवन भटकते ही बीता। अकबर के समय बीकानेर के महाराजा कल्याणमल ने जो मित्रता मुगलों के साथ की वह मुगलों के पतन तक बनी रही। बीकानेर के नरेशों में से महाराजा अनूपसिंह, महाराजा गजसिंह तथा महाराजा रत्नसिंह को मुगल बादशाहों की ओर से विभिन्न अवसरों पर 'माहीमरातिब' का सर्वोच्च सम्मान प्राप्त हुआ, जो इस बात का सूचक है कि मुगलों के दरबार में बीकानेर का स्थान बड़ा ऊंचा रहा।[2]

कालांतर में औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता और असहिष्णुता के कारण राज्य के केन्द्र से सम्बन्ध टूट गये। ज्यों ज्यों मुगल साम्राज्य पतन की ओर जाने लगा त्यों-त्यों बीकानेर के नरेशों ने अपनी मित्रता में भी कमी कर दी। इस समय जोधपुर ने कई बार बीकानेर को हड़पने का असफल प्रयत्न किया। यह समय बहुत ही संकट का था। देश में कई स्थानों पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी का अधिकार हो गया। मरहठों की शक्ति छिन्न-भिन्न हो गई। राजपूत आपस में लड़ रहे थे। इतनी अव्यवस्था में भी महाराजा गजसिंह ने अपने राज्य की रक्षा

१— डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा – बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) पृष्ठ १३० १३२

२— गौरीशंकर आचार्य – बीकानेर एक परिचय पृष्ठ ४९

बड़ी कुशलता पूर्वक की। अंग्रेजो के साथ बीकानेर के प्रारम्भ से ही अच्छे सम्बन्ध रहे, जिससे बीकानेर मे हर तरफ से सुधार हुए। आवश्यकता पडने पर बीकानेर नरेशो ने अंग्रेजो की धन और जन से सहायता भी की। बीकानेर में डूगरसिंह ने सुधार के कार्य किये। डूगरसिंह के कोई सन्तान न होने के कारण उन्होंने अपने भाई गगासिंह को अपना उत्तराधिकारी बनाया,[1] जो सात वर्ष की आयु (अगस्त ३१, १८८७) मे बीकानेर के स्वामी बने।[2] गगासिंह का शासन-काल बीकानेर राज्य के इतिहास मे स्वर्णयुग माना जाता है। गगनहर के निर्माण का कार्य उनका बहुत ही प्रशसनीय है। गगासिंह ने कई बार अन्तर्राष्ट्रीय मामलो मे भारत का प्रतिनिधित्व किया।[3]

राष्ट्रीय आन्दोलन और बीकानेर —

अंग्रेजो के चुगुल से देश को निकालने का प्रयत्न काग्रेस की स्थापना के साथ ही हो गया था परन्तु महात्मा गाधी के राजनैतिक क्षेत्र मे आने से पहले यह आन्दोलन कुछ सीमित था। गाधी-युग के साथ सार्वजनिक जीवन मे एक नये अध्याय का श्री गणेश हुआ। इस समय राष्ट्र ने परावलम्बी वृत्ति को त्याग कर स्वावलम्बन, असहयोग और सत्याग्रह के मार्ग को अपनाया। एक वर्ष मे (सन् १९२१-२२) स्वराज्य प्राप्ति की आकांक्षा इतनी तेजी से फैली कि देशी राज्यो की जनता जो अब तक सो रही थी वह भी जाग उठी।

बीकानेर की जनता मे भी इन्ही दिनो मे जागृति का श्रीगणेश हुआ। इस समय मे यहा पर अफसरो की रिश्वत खोरी और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठायी गई। इसी समय मे "सद् विद्याचारिणी" सभा की स्थापना हुई जिसके प्रधान श्री मुक्ता प्रसाद वकील और मत्री श्री कालूराम बरडिया बने।[4] इस सभा ने जन जागृति के लिए 'सत्य विजय' और "धर्म विजय' दो नाटक खेले। इन्ही दिनो बीकानेर मे विदेशी कपडो की होली जलाई गई। यह पहला सार्वजनिक राजनैतिक आयोजन था।

१— गौरीशकर हीराचद ओझा — बीकानेर राज्य का इतिहास (दूसरा भाग) पृष्ठ ४८९

२— „ „ „ „ „ „ „ ४९२

३— „ „ „ „ „ „ „ ५४०

४— सम्पादक श्री सत्यदेव विद्यालकार – बीकानेर का राजनैतिक विकास और पडित मघाराम वैद्य पृष्ठ १७

बीकानेर राज्य और अ ग्रेजो के आपसी सम्बन्ध मित्रता के रहे हैं । अत तत्कालीन महाराजा गगासिह इस प्रकार के आन्दोलनों को कैसे पनपने देते ? इसलिए उनसे जहा तक हुआ वे किसी बाहर के राष्ट्रीय नेता को राज्य मे प्रवेश नही करने देते थे । यही कारण था कि जब सन १६२७–२८ मे स्वर्गीय देश भक्त सेठ जमनालाल बजाज रतनगढ मे ब्रह्मचर्याश्रम क उत्सव पर आये तो उन्ह गाडी से उतरने का भी अवसर नही दिया ।[1]

जितनी तजी से बीकानेर राज्य मे जागृति प्रारम्भ हुई शासन की ओर से उतना ही दमन चक्र तेज चला । सन् १६३२ मे दमन-चक्र आरम्भ हुआ जिसके फलस्वरूप कुछ नेताओ पर मुकदमा चलाया गया । वास्तव म राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए दमन उत्पीडन और निर्वासन उनकी (महाराजा) शासन नीति के मूलम त्र बन गये थे ।[2] सेवा समितियो वाचनालयो पुस्तकालयो और शिक्षा सस्थाओ के रूप मे किंचित हलचल भी राज्य को उस समय सहय नही थी । यहा तक कि खादी भडार को भी ये राष्ट्रीय आन्दोलन का एक अडडा मानत थे । प्रजामडल नाम की सस्था से तो महाराजा बहुत भय खात थे । अत प्रजामडल की हत्या ता गभकाल म करत रहे । निष्कष रूप मे यह कहा जा सकता है कि न ता प्रजामडल जसी किसी सस्था को और न ही इस प्रकार की प्रवत्तिया रखने वाले किसी नेता को पनपने दिया ।[3]

परन्तु राष्टीय भावना को दबाना बहुत कठिन होता है । जब प्रजामडल की स्थापना करना बीकानेर मे सम्भव न हुआ तो सन १६३५ म स्वर्गीय श्रीमती लक्ष्मीदेवी आचार्या की अध्यक्षता म बीकानेर राज्य प्रजामडल की स्थापना कलकत्ता म की गई । ४ अक्टूबर १६३६ को रात्रि के ८ बजे प्रजामडल के सदस्या की प्रथम बैठक रतन बाई ट्रस्ट के मकान (बीकानेर) मे हुई जिसम श्री मघाराम इसके प्रधान चुने गय पर तु सन १६३७ म इसके अध्यक्ष और मत्री ब दी बना लिया गया । इसम प्रजामडल समाप्त प्राय हो गया । अब जनता ने नई युक्ति खोज निकाली और प्रजामडल के स्थान पर श्री रघुवरदयाल गोयल

१— स० श्री सत्यदेव विद्यालकार — बीकानर का राजनैतिक विकास और पडित मघाराम वद्य पष्ठ १६

२— , , , २५

३— , , ,, , , २५

आदि ने २२ जुलाई १९४२ को 'प्रजा परिषद्' नामक राजनैतिक संस्था की स्थापना की इसका जीवन काल भी ५–७ दिनो से अधिक न रहा।

९ दिसम्बर, १९४२ को बीकानेर में झंडा सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ और पहली बार उसी दिन दो बजे वैद्यो के चौक मे श्री मघाराम वैद्य के पुत्र श्री नारायण ने तिरंगा झंडा फहराया। २६ जनवरी १९४३ को स्वतन्त्रता दिवस भी मनाया गया।[1] श्री शार्दूलसिंह ने प्रारम्भ मे तो गद्दी पर बैठते ही राजनैतिक बन्दियो को मुक्त कर दिया, परन्तु इन सत्याग्रहियो ने मुक्त होते ही अपना वही काम आरम्भ कर दिया। इसके कुछ दिन पश्चात तत्कालीन गृहमन्त्री महाराज नारायणसिंह भाटी के विरुध एक परचा छपा उसके लिए श्री मघाराम वैद्य को दोषी समझ कर बन्दी बना लिया गया।[2] सन् १९४५ को फिर २६ जनवरी गुप्त रूप से मनाई।

बीकानेर राज्य मे प्रथम राजनैतिक सम्मेलन का आयोजन ३० जून व १ जुलाई १९४६ को रायसिहनगर म करने का निश्चय हुआ। इस आयोजन के सभापति थे श्री सत्य नारायण वकील। राज्य की ओर से झंडा न फहराने का आदेश पहले स ही था। जनता झंडा सहित पडाल मे पहुची।

इसमे श्री गगानगर के श्री बीरबलसिह शहीद हुए। इस घटना को सुन कर जब बीकानेर के गृह मन्त्री २ जुलाई को हनुमानगढ पहुचे तो जनता ने उनके हाथ म ही झंडा द दिया और उस गाडी पर भी झण्डे लगा दिये।

स्वतन्त्रता प्राप्ति पर १५ अगस्त १९४७ को बीकानेर मे भी खुशिया मनाई गई। स्टेडियम में झंडारोहण स्वय महाराजा शार्दूलसिंह ने किया। रात्रि के समय समारोह मनाने के लिए लालगढ पैलेस मे एक राजकीय भोज दिया गया।[3]

शार्दूलसिंह से लेकर भारत के पुनगठन तक बीकानेर की राजनतिक स्थिति —

मार्च १९४३ को महाराजा गगासिह का देहान्त बम्बई मे हो गया और

१— सम्पादक श्री सत्यदेव विद्यालंकार – बीकानेर का राजनैतिक विकास और पंडित मघाराम वैद्य पष्ठ १३९

२— „ „ „ – „ , १४१-१४२

३— डॉ० करणी सिंह – बीकानेर के राजघराने का केंद्रिय सत्ता से सम्बन्ध पृष्ठ ३८२

उनके उपरान्त राज्य का भार उनके सुपुत्र श्री शादूलसिंह ने सभाला। गद्दी पर बठते ही श्री शादूलसिंह ने राजनैतिक बंदियो को मुक्त कर दिया। इसी समय श्री शादूलसिंह न पानी की टूटियो का उपयोग आम जनता के लिए मुफ्त कर दिया। नौकरी के क्षेत्र मे भी जनसाधारण को पहले से अधिक लिया जाने लगा। बीकानेर मे जिस धारा सभा की स्थापना सन् १९१२ मे हुई, उसके अधिकारो म सन १९४६ मे वृद्धि कर दी। इस सभा को व्यापक और जन-प्रतिनिधि बनाने का प्रयत्न किया गया जिसके लिए एक विधान समिति की भी नियुक्ति की गई। श्री शादूलसिंह की बहुत सी घोषणाए कार्यान्वित नही हो पाती थी। विनियोग (बजट) की कुछ मदा पर राय देने का अधिकार धारा सभा को दिया गया। पर चुनाव प्रणाली इतनी सदोष थी कि उसमे ग्राम जनता के किसी भी प्रतिनिधि का चुना जाना सम्भव नही था।

बीकानेर राज्य मे शरणार्थी और शादूलसिंह —

१५ अगस्त सन १९४७ को भारत स्वतन्त्र अवश्य हुआ लेकिन साथ ही म देश के दो टुकडे हो गये। पाकिस्तान से हिन्दू भारतवर्ष मे और भारतवर्ष मे मुसलमान पाकिस्तान मे जाने लगे। पाकिस्तान के साथ लगभग २०० मील तक बीकानेर राज्य की सीमा लगी हुई थी। इस समय म तत्कालीन महाराजा जाति धम स ऊपर उठ कर मनुष्य मात्र की रक्षा म तत्परता दिखाइ और उदारता की नीति का परिचय दिया। पाकिस्तान से आये हुए बहुत से शरणार्थियो के पास कुछ नही था, उनके भोजन और आवास की व्यवस्था भी महाराजा ने की यहा तक कि सुजानगढ म महाराजा शादूलसिंह ने निजी भवन को भी शरणार्थिया को सौंप दिया।[1] इसी समय शरणार्थियो के लिए स्थान स्थान पर शिविर खोल गये। कोलायत म बहुत सी धमशालाए होने के कारण यह शरणार्थियो का केन्द्र सा बन गया था।

शादूलसिंह और एकीकरण —

१५ अगस्त सन १९४७ को भारतवष म स्वतन्त्रता का सूय उदय हुआ। इस समय भारत स्वतन्त्र अवश्य हो गया था परन्तु हमारे देश म इस समय भी बहुत सी समस्याए थी, जैसे- बेकारी, भुखमरी और इससे भी बढ कर थी रियासतो के एकीकरण की। इस समस्या मे राजाओ के सहयोग की बहुत

१— डॉ० करणीसिंह — बीकानेर के राजघराने का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध पृष्ठ ३८८

आवश्यकता थी। ब्रिटिश सरकार की ओर से इन्हें पूर्ण स्वतन्त्रता थी पर रियासतों का इस प्रकार से अलग-अलग रहना देश की एकता के लिए हानिकारक था। राष्ट्रीय एकता के लिए इनका एकीकरण बहुत ही आवश्यक था। राजपूताने का एकीकरण चार सोपानों में पूरा हुआ। सर्व प्रथम संयुक्त राजस्थान राज्य में दक्षिण पूर्व की नौ[1] रियासतों का एकीकरण हुआ। थोडे समय बाद मेवाड़ को भी इसमें मिला लिया गया। इसी काल में अलवर भरतपुर धौलपुर और करौली इन चारों को मिलाकर मत्स्य नाम का एक नया संघ बनाया गया। परन्तु थोड़े समय बाद इस मत्स्य संघ को भी वृहद् राजस्थान में मिला लिया गया। इतना कुछ होने पर भी अब तक एकीकरण अधूरा ही था। जैसलमेर, जयपुर जोधपुर और बीकानेर की रियासतें इस संघ से अलग थी। अथक परिश्रम के बाद ३० मार्च १९४९ को सरदार पटेल द्वारा वृहद् राजस्थान संघ का उद्घाटन किया गया और जयपुर इसकी राजधानी निश्चित हुई।[2] इस एकीकरण में बीकानेर के महाराजा शार्दूलसिंह का त्याग और देश प्रेम प्रशंसनीय है। तत्कालीन भारत के राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद द्वारा ५ सितम्बर १९५४ को बीकानेर में दिये गये भाषण में उनके देश प्रेम व त्याग की भावनाओं का पता चलता है। उन्होंने अपने भाषण में कहा है जो लोग उस समय (विलीनीकरण से पहले) का इतिहास जानते हैं और जिनको लोग उस समय जो कुछ हो रहा था, जानकारी रखते हैं उनको यह बात अच्छी तरह मालूम है कि महाराजा शार्दूलसिंह जी ने भारत देश की कितनी बड़ी सेवा की—— —उन्होंने समझौता करके दूसरे नरेशों को रास्ता दिखला कर केवल बीकानेर को ही नहीं बल्कि और राज्यों को भी भारत के साथ मिलाने का प्रोत्साहन दिया और मदद की। इसलिए भारतवर्ष उनका बड़ा ऋणी है और रहेगा।[3]

१९४७ से लेकर आज तक की राजनैतिक स्थिति —

१५ अगस्त सन १९४७ को भारत वर्षों की परतन्त्रता के बाद स्वतन्त्र हुआ। इस स्वतन्त्रता का कारण जनता में राष्ट्रीय भाव की जागृति थी।

१—बांसवाडा बूंदी, डूंगरपूर, झालावाड, किशनगढ कोटा, प्रतापगढ शाहपुरा और टोंक।

२—डा० करणीसिंह — बीकानेर के राजघराने का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध पृष्ठ ४००

३—गौरीशंकर आचार्य — बीकानेर परिचय ५१

राष्ट्रीय आन्दोलन की जो लहर स्वतन्त्रता से पूर्व देश में प्रारम्भ हुई वह स्वतन्त्रता प्राप्ति तक देश के कोने कोने में फैल गई। बीकानेर में भी राष्ट्रीय भावना के कारण स्वतन्त्रता के लिए काफी आन्दोलन चले, जिसमें कांग्रेस का यहां पर मुख्य हाथ रहा है।

स्वतन्त्रता से पूर्व का इतिहास राजाओं और उनके कार्यों का इतिहास है पर स्वतन्त्रता के पश्चात का इतिहास जनता की पार्टियों का इतिहास है। देश में १९५२ में प्रथम आम चुनाव हुए जिसमें बीकानेर जिला भी अछूता नहीं रहा। इस समय बीकानेर जिले में कांग्रेस जन संघ समाजवादी आदि पार्टियों ने चुनाव में भाग लिया। इस समय प्राय सभी पार्टियों की बुरी स्थिति रही और जीत केवल स्वतन्त्र उम्मीदवारों की ही हुई। नोखा क्षेत्र में कांग्रेस की विजय हुई। साम्यवादी (Communist) पार्टी का इस समय यहां कोई स्थान नहीं था अत उसने इस चुनाव मे भाग भी नहीं लिया।

सन् १९५७ मे बीकानेर में राजस्थान की विधान सभा के लिए एक पद हरिजनो के लिए सुरक्षित कर दिया गया था। इस समय कांग्रेस ने अपनी स्थिति पहले से सुदृढ बनाली थी। अत बीकानेर को छोड़कर अन्य सभी तहसीलों में कांग्रेस की ही विजय हुई और बीकानेर मे समाजवादी पार्टी की विजय हुई। भारतीय लोक सभा के लिए इस समय मे फिर स्वतन्त्र उम्मीदवार की ही विजय हुई। इस चुनाव मे साम्यवादी पार्टी ने भी भाग लिया परन्तु विजय कहीं भी नही हुई। सन १९६२ में भी यहां पर समाजवादी और कांग्रेस ने ही सब स्थान प्राप्त किये परन्तु भारतीय ससद के लिए स्वतन्त्र उम्मीदवार ही जीता। इस समय मे कांग्रेस की विजय बीकानेर से बाहर ही हुई पर शहर मे उसके पर इस समय मे भी नहीं लगे। सन् १९६७ मे कांग्रस की अद्भुत विजय हुई और वह यह कि इस समय उसने बीकानेर शहर मे भी अपना स्थान बना लिया और अन्य क्षेत्रो में भी विजय प्राप्त की। सन १९५२ से लेकर भारतीय लोकसभा के लिए स्वतन्त्र उम्मीदवार की ही विजय होती रही है। इसका कारण बहुत कुछ महाराजा करणीसिंह का व्यक्तित्व ही है।

बीकानेर जिले की सामाजिक परिस्थिति —

आज बीकानेर जिले म प्राय सभी जाति के लोग निवास करते हैं। हिन्दुओं मे ब्राह्मण राजपूत महाजन, खत्री, कायस्थ जाट बिश्नोई चारण, सुनार, सुथार दर्जी कुम्हार तेली लुहार, माली, नाई धोबी गूजर बैरागी गोसाई, स्वामी छीपा, भड़भूजा रैगर, मोची चमार आदि कई जातियां है। इन जातियों म आज कई ऐसी उप जातियां बन गई जिनम आपस म विवाह भी नहीं होता। जगली जातियों में मीणे बावरी और थोरी आदि हैं। मुसलमानो म सैयद शेख, मुगल और पठान आदि कई जातियां है।[1] यहाँ के लोगों मे अधिकाश खेती करत हैं। राजपूत लोग प्रमुख रूप से सैनिक सेवाम नियुक्त हैं। वैश्य वग का प्रमुख धधा व्यापार करना है। यहाँ के मोहता डागा मूधडा रामपुरिया सेठिया आदि वैश्य लोग भारत के प्रमुख व्यापारियो म गिने जाते हैं। अन्य जातियों के लोग प्रधान रूप स नौकरी, दस्तकारी और अन्य प्रकार की मजदूरी का काय करते हैं।

गावो के लोगो का मुख्य खाद्यान्न बाजरा व मोठ है। आजकल गेहूँ और चावल का भी बहुत प्रचलन हो गया है। चावल किसी विशेष त्यौहार पर ही प्रयोग म लिये जाते हैं। गाँवो में प्राय दूध दही व सूखी सब्जियाँ काम म ली जाती है, जिनम सागरी, फली, काचर, खेलरी, केर आदि प्रमुख है। शहर में लोग गेहूँ और हरी सब्जी का प्रयोग करते हैं। मूग और मोठ को विभिन्न प्रकार म प्रयोग में लाते हैं। भुजिया और रसगुल्ला तो बीकानेर क भारत प्रसिद्ध है।

आज शिक्षा के प्रसार से स्त्रियो की दशा में काफी सुधार हो गया है और इनका अपने समाज मे पुरुष के समान ही स्थान है। गावों मे पढी लिखी स्त्रिया की सख्या अवश्य ही कम है। शिक्षा के कारण बाल विवाह भी कम हो

---

१ गौरीशकर हीराचन्द ओझा-बीकानेर राज्य का इतिहास (प्रथम भाग) पृष्ठ २१

गये हैं, परन्तु कुछ जातियों में अब भी यह प्रथा प्रचलित है, पर है बहुत कम। शिक्षा से आज समाज में छुआछूत भी बहुत कम हो गई है। इससे समाज में पहले की तरह किसी प्रकार की ऊँच नीच की भावना नहीं है। यहाँ की शिक्षण संस्थाओं में गरीब छात्रों को निशुल्क शिक्षा दी जाती है। बीकानेर जिले के प्रत्येक गाव में आज स्कूल अवश्य है तथा सभी गांव सडकों द्वारा शहर से जुडे हुए हैं। यातायात में सब प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध हैं। पहले जैसा गावों में किसी भी प्रकार का भय नही है। इस जिले में धोती और कुर्ता पुरुषों की तथा लहगा और चोली स्त्रियों की मुख्य पोशाक है। नगर में पुरुष व स्त्रिया अधिकतर आधुनिक ढग से वस्त्रों का प्रयोग करते हैं। पर्दा प्रथा प्राय समाप्त सी हो गई है। यहा तक कि मुसलमानों में भी बुर्के की प्रथा कम हो रही है परन्तु पूर्णतया समाप्त नही हुई है। विवाह में दहेज आदि की प्रथा भी प्रचलित है, पर इसकी अधिकता नही है। मुर्दों को यहाँ पर जलाया एव जमीन मे गाडा जाता है। मुसलमान मुर्दों को जमीन मे ही गाडते हैं।

बीकानेर जिले की धार्मिक परिस्थिति —

बीकानेर जिले मे मुख्यत वैदिक (ब्राह्मण) जैन सिक्ख और इस्लाम धर्म के मानने वालों की सख्या अधिक है। ईसाई आर्य समाजी और पारसी धर्म के अनुयायी भी यहा थोडे बहुत हैं। वैदिक धर्म मानने वालों मे शैव, वैष्णव शाक्त आदि अनेक भेद हैं, जिनमे यहा वैष्णवों की सख्या अधिक है। इस्लाम धर्म के अनुयायियों के दो भेद-शिया और सुन्नी हैं। इनमें से इस जिले मे सुन्नियों की सख्या अधिक है। इनके अतिरिक्त यहाँ अलखगिरि नाम का नवीन मत भी प्रचलित है तथा बिशनोई नाम का दूसरा मत भी हिन्दुओं में विद्यमान है [1]

बीकानेर जिले में त्यौहारों का बहुत महत्व है त्यौहारों में शील सप्तमी अक्षय तृतीया रक्षा बन्धन दशहरा दिवाली होली आदि मुख्य त्यौहार है। तीज और गनगौर स्त्रियों के मुख्य त्यौहार हैं। इन त्यौहारों के दिन नगर में बहुत ही चहल पहल रहती है। इस दिन स्त्रिया लोक गीत गाया करती हैं। त्यौहारों के अतिरिक्त यहा मेले भी बहुत लगते हैं। प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा को कोलायत में बडा मेला लगता है, जिसमें ऊट बैल आदि का व्यापार भी होता है। बीकानेर से ३० मील दक्षिण पश्चिम में यह स्थित है। यहाँ एक

---

१ गौरीशंकर हीराचन्द ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) पृ० १८

विशाल जलाशय है जिसके किनारे कपिलमुनि का मंदिर है। ऐसा कहा जाता है कि यहां कपिलमुनि का आश्रम था जहां उन्होंने अपनी माता को सांख्य और योग का उपदेश दिया।[1] मुख्य मन्दिर के अतिरिक्त अन्य भी छोटे-छोटे मंदिर हैं। गजनेर बीकानेर से २० मील दक्षिण पश्चिम में बसा हुआ है। यहां पर मुसलमानों का मेला लगता है जिसे 'भुट्टों का मेला' कहते हैं। श्रावण के महीने में शिवबाड़ी और भाद्र पद देवीकुंड सागर में भी मेले लगते हैं, जिनमें बहुत से लोग इक्टठे होते हैं।[2] देशनोक में जो कि शहर से २० मील दक्षिण में है, करणी जी का विशाल मंदिर है। इस मंदिर की विशेषता यह है कि यहां चूहे बहुत संख्या में हैं। वर्ष में दो बार चैत्र और आसोज के शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा से नवमी तक भारी मेले लगते हैं। मुकाम जो बीकानेर से लगभग ५० मील है, वहां प्रतिवर्ष आसोज और फाल्गुन में मेले लगते हैं। यहां पर भारतवर्ष के प्रत्येक कोने कोने से विश्नोई लोग आते हैं और हवन आदि करते हैं। यहां पर एक रेत के धोरे का बहुत अधिक महत्व है।[3] इन मंदिरों के अतिरिक्त बीकानेर में मंदिरों की संख्या इतनी अधिक है कि नगर का कोई भी भाग ऐसा नहीं है, जहां मंदिर न हो। चिन्तामणि का मंदिर, भांडासरजी का मंदिर धूनीनाथजी का मंदिर रतन बिहारी जी का मंदिर श्री लक्ष्मीनाथजी का मन्दिर नागणेचीजी का मन्दिर आदि शहर के मुख्य मंदिर हैं।[4] चाहे कितने भी मन्दिर आज हैं पर एक बात स्पष्ट है कि धर्म पर लोगों का पहले जैसा विश्वास नहीं रहा है पर फिर भी मंदिरों पर भीड़ बहुत रहती है। यहां पर बहुत से देवी देवताओं की पूजा की जाती है। मूर्तिपूजा की प्रधानता है। इसके अतिरिक्त स्त्रियां यहां पर पीपल और खेजड़ी की भी पूजा करती हैं।

---

१ (क) गौरीशंकर आचार्य — बीकानेर परिचय पृष्ठ ८५

(ख) य करुणाकर कृपालु भगवान् कपिल स्वकीये
अत्यल्पे वयसि स्वमात्रे देव हूत्य जग दुद्धरकारक सांख्य योग च
सविस्तर प्रोवाच उपदिष्टवान्

पण्डित विष्णुदत्त शर्मा— श्री कपिलायतन तीर्थ माहात्म्यम् पृष्ठ ३५

२ गौरीशंकर हीराचंद ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) पृष्ठ २६

३— ऐसा माना जाता है कि विश्नोई सम्प्रदाय के प्रवर्तक श्री जम्भेश्वर इसी धोरे पर रहा करते थे। इसी धोरे पर उनकी मृत्यु हुई थी परन्तु उनके शव को मुकाम में दफनाया गया था जहां पर आज भी मंदिर बना हुआ है।

४-गौरीशंकर हीराचन्द ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) पृष्ठ २६

बीकानेर की साहित्यिक परिस्थिति (स्वतन्त्रता से पूर्व) -

बीकानेर क्षेत्र का साहित्यिक और सांस्कृतिक विकास बहुत प्राचीन नहीं है। राव बीका द्वारा बीकानेर राज्य की स्थापना के बाद ही यह विकास प्रारम्भ हुआ है।[1] बीकानेर की स्थापना से पूर्व यहां पर पूजा पाठ से सम्बन्धित साधारण पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य प्रकार की पुस्तकें प्राप्त नहीं हुई है।[2] बीकानेर की स्थापना के पश्चात यहां के प्रायः सभी नरेश साहित्यिक प्रेमी रहे हैं। बहुत से राजाओं ने तो स्वयं भी बहुत-कुछ लिखा है। इसके विपरीत कुछ ऐसे हुए हैं जिन्होंने स्वयं तो कुछ नहीं लिखा, पर अनेक विद्वानों को काव्य रचना करने की ओर प्रेरित किया है जिसमें बहुत से विद्वानों ने यहां रह कर काव्य-ग्रन्थों की सर्जना की है। राव कल्याणमल के पुत्र पृथ्वीराज कृत 'वेली क्रिसन रुकमणी री" का राजस्थानी काव्य में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। इसके अतिरिक्त भी उन्होंने राम और कृष्ण तथा अन्य विषयों पर फुटकर छन्दों की रचना की है। पृथ्वीराज अकबर के नौ रत्नों में से थे। रायसिंह (सन १५७४—१६१२) भाषा और संस्कृत दोनों में अच्छी कविता कर लेता था। उसने 'रायसिंह महोत्सव' और ज्योतिष रत्नाकर" नाम के दो अमूल्य ग्रंथ लिखे।[3] इस समय अनेक विद्वानों ने अनेक ग्रन्थों की रचना की। जैन साधु ज्ञान विमल ने इन्हीं के आश्रय में रह कर शब्द भेद की टीका समाप्त की।[4] कर्णसिंह के समय (सन १६३१ १६६९) में अनेक ग्रंथों की रचना हुई। अब तक उस समय के प्राप्त ग्रंथ इस प्रकार हैं।[5] —

१ साहित्य कल्पद्रुम – यह ग्रन्थ विद्वानों की सहायता से महाराजा ने लिखा है।
२ कर्ण भूषण (प० गंगादास मैथिल रचित)
३ काव्य डाकिनी (प० ,, ,,)
४ कर्णवितस (भट्ट होसिहक कृत)

१— दिवाकर शर्मा – संस्कृत साहित्य के विकास में बीकानेर क्षेत्र का योगदान (अप्रकाशित) पृष्ठ ५४२
२— ,, २१
३— गौरीशंकर हीराचन्द ओझा – बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) पृष्ठ २०१ २०२
४— ,, ,, २०१
५— ,, ,, ,, २५२ २५३

५ कर्णस तोष (कवि मुदल कृत)
६ वत सारावली ।

यह तो स्पष्ट है कि अनूपसिंह से पहले बहुत से ग्रथ बीकानेर मे लिखे गये थे, परन्तु साहित्य का विकास अनूपसिंह के समय मे सबसे अधिक हुआ। वह स्वय भी विद्वान था और उसने बहुत से विद्वानो को आश्रय भी दे रखा था। अनूपसिंह के समय मे सबसे अधिक ग्रथों की रचना हुई। उसने स्वय ने "अनूप विवेक" (तत्र शास्त्र) "काम प्रबोध (काम शास्त्र)" श्रद्धा प्रयोग चिन्तामणि और गीत गोविन्द की अनुपोदय नाम की टीका आदि ग्रथ लिखे।[1] अनूपसिंह के दरबार में सस्कृत के अनेक विद्वान रहते थे जिन्होंने बहुत से ग्रथ लिखे। इन विद्वानों द्वारा लिखे ग्रथ निम्नलिखित हैं।[2]

१— ज्योत्पतिसार (वैद्यनाथ कृत)
२— अनूप व्यवहार सागर (मणिराम दीक्षित)
३— अनूप विलास (मणिराम दीक्षित)
४— अयुतलक्ष होम कोटि प्रयोग (भद्र राम)
५— तीर्थ रत्नाकर (अनन्त भट्ट)
६— पाण्डित्य दपण (श्वेताम्बर उदयचन्द्र कृत)

सस्कृत के अतिरिक्त अनूपसिंह को राजस्थानी मे भी बहुत प्रेम था। उसने शुक सारिका की कथाओं का अनुवाद भी कराया तथा कुछ और भी राजस्थानी ग्रथ लिखे गये। अनूपसिंह को सगीत मे भी बहुत प्रेम था। अत इसके समय म भाव भट्ट ने सगीत अनुपाकुश' अनूप सगीत विलास, अनूप सगीत रत्नाकर, नष्टो द्दिष्ट प्रबोधक, धौपद टीका आदि ग्रथों की रचना की।[3]

महाराजा जोरावरसिंह सस्कृत और भाषा का अच्छा विद्वान था। उसके बनाये हुए दो ग्रथ वद्यसागर और पूजा पद्धति' बीकानेर के पुस्तकालय मे है। भाषा मे उसने रसिक-प्रिया और कवि प्रिया की टीकायें बनायी थी।[4]

---

१ गौरीशकर हीराचन्द ओझा—बीकानेर राज्य का इतिहास (प्रथम भाग) पृष्ठ २८०
२ " " " २८१, २८२
३— २८७
४— " " " ३२२

महाराजा गजसिंह के समय म (सन १७४५–१७८७) गोपीनाथ और सिढायच फतेराय ने क्रमश 'ग्रन्थराज' अथवा महाराजा गजसिंह जी रो रूपक तथा महाराजा गजसिंघ जी रा गीत कविता दूहा नामक ग्रथ लिखे ।[1] इसी प्रकार महाराजा रत्नसिंह के समय म रत्न विनास, रतन रुपक और जस रत्नाकर आदि काव्य ग्रन्थ मिलते हैं ।[2] इन सभी ग्रथा से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि बीकानेर म जितने राजा हुए व सभी साहित्यिक प्रेमी अवश्य रहे हैं। उनम स बहुतो ने तो स्वय ही बहुत कुछ लिखा है । साहित्यिक दृष्टि स अनूपसिंह क शासन काल को स्वणयुग' कहा जा सकता है। आज भी पृथ्वीराज कृत 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' का महत्व बना हुआ है । डूगरसिंह ने शिक्षा के लिए बहुत सी पाठशालाए खुलवायी । सन १९१२ म अपनी रजत जयन्ती अवसर पर महाराजा गगासिंह ने डूगर मेमोरियल कालेज का उद्घाटन किया और इसी समय कचहरियो की भाषा हिन्दी घोषित की ।[3]

बीकानेर मे साहित्य की उन्नति म चारणा, जना एव भाटो का भी विशेष योगदान रहा है जिसके परिणाम स्वरूप आज भी बीकानेर क विविध जैन सग्राहालयो मे लगभग पचास हजार हस्तलिखित प्रतिया विद्यमान है ।[4]

==

१— गौरीशकर हीराच द ओझा – बीकानेर राज्य का इतिहास (दूसरा भाग) पृष्ठ ३५९

२— „ „ ५२५

३— „ „ ५२५

४— गौरीशकर आचाय — बीकानेर परिचय पृष्ठ २२

बीकानेर में हिंदी काव्य सर्जना

स्वातन्त्र्यपूर्व काव्य —

यो तो डिंगल, ब्रज भाषा एव उर्दू के माध्यम से बीकानेर का कवि-समाज अपनी अभिव्यक्ति पहले से करता आया है किन्तु इस काव्य चेतना का प्रकटीकरण हिन्दी के माध्यम से सव प्रथम ई० सन् १६१६ से माना जा सकता है। इस समय के प्रारम्भिक कवियो म श्री नरोत्तम दास स्वामी का नाम सव प्रमुख आता है। स्वामी जी ने भक्ति सम्बन्धी कुछ पदावलिया लिखी। छायावादी काव्य प्रवृतियो से इतर बीकानेर काव्याकाश क अन्य सितारे रामनिवास हरित, गवतमल सारस्वत, सूयकरण पारीक, रामसिंह, वासुदेव गोस्वामी, रत्नलाल गोस्वामी मास्टर बालाप्रसाद और नरपतसिंह आदि थे। इसी समय शम्भूदयाल सक्सेना ने बीकानेर क काव्य क्षेत्र मे अपने प्रथम काव्य सग्रह "मन्वन्तर" द्वारा पदापरा किया। इस सग्रह मे कवि ने प्राचीन आय संस्कृति के उत्कष और आदर्शों को बहुत ही सुन्दर ढग से व्यक्त किया है। कवि अपने देश वासियों को प्राचीनता का आदश बताना चाहता है। इसलिए कविता के लिए प्राचीन विषय चुने हैं। कवि ने फिर से प्राचीन गौरव को जगाने की चेष्टा की है। इसमे 'सती', नवयुग के मानव से, विश्व भारती' आदि कविताए विशेषत पठनीय है। 'मन्वन्तर में भाषा और भाव दोनो का सुन्दर समन्वय है। साराश रूप मे यही कहा जा सकता है कि 'मन्वन्तर' म भारतीय संस्कृति की आत्मा का अनूठा चित्र है।

इसके अतिरिक्त सन् १६२७ मे सक्सेना ने 'उत्सग' और सन १६३३ म अमरलता दो खण्ड काव्य लिखे। उत्सग म चूडावत और हाडा रानी की कथा के साथ साथ मेवाड के राणा और रूपनगर की राजकुमारी चारूमती की कथा को भी प्रस्तुत किया है। ऐसा करने से इस खण्ड काव्य म किसी घटना और पात्र का पूरा विकास नही हो पाया है। यद्यपि शास्त्रीय लक्षणो के अनुसार खण्ड काव्य म कोई उपकथा नही होनी चाहिय और यदि हो तो वह प्रधान कथा के

सहायक रूप मे होनी चाहिये, पर 'उत्सग' मे ऐसा नही हो पाया है। दोना कथाए एक दूसरे से दबी हुई हैं।

सक्सेना का 'ग्रमरलता' वास्तव म एक सफल खड काव्य है, जिसमें राजस्थान के मोहिल पति माणिकराज की कैया कोडमदे की कथा है। कोडमदे मडोरपति ग्रडकमल से विवाह न कर, सादूल के साथ विवाह करती है। जाते समय माणिकराज सादूल को ग्रड कमल से सावधान, रहने की बात कहता है पर सादूल कोई परवाह नही करता। रास्ते मे युद्ध होता है और सादूल मारा जाता है। कोडमदे ग्रपना एक हाथ ससुराल ग्रौर दूसरा हाथ ग्रपने नैहर भेज कर सती हो जाती है।

इस खण्ड काव्य का कथा प्रवाह स्वाभाविक गति से हुग्रा है। कोडमदे और सादून के चरित्र का विकास भी पूर्ण हुग्रा है। कोडमदे का चरित्र शौय एव करुणा का सगम है। कवि ने मध्ययुगीन राजपूती शौय ग्रौर वीरता की एक सुदर झलक प्रस्तुत की है। परन्तु उसमे करुणा ग्रौर अवसाद की भी छाया पडी हुई है। '— और तब तक हम पतन के गर्त से कदापि नही निकल सकेंगे जब तक ग्रपने पूव कृत्यो का अच्छी तरह प्रायश्चित नहीं करते।[1] भाषा शैली की दष्टि से इसमे सहजता देखी जा सकती है।

स्वतन्त्रता से पूव बीकानेर मे राजस्थानी ग्रौर हिदी कविता के क्षेत्र म भरत व्यास का योगदान रहा है। कवि ने अपनी कविताओ के विषय ग्रपने ग्रचल से चुने हैं। इनकी प्रत्येक कविता में मरुदेश प्रेम झलकता है। स्वतन्त्रता से पूव इनकी अधिकतर कविताए वणनात्मक है। कवि कभी तो इस मरुधरा की महिमा बताता है —

'मरुधरा सरस मनहर, मधुरा
मा का ग्राचल है प्यार भर।[2]

\+ \+ \+

काचर ककडी ग्रौर रुचिर बेर
पसे–पसे के सवा सेर'[3]

१—शम्भूदयाल सक्सना — अमरलता' मुख पष्ठ
२—भरत व्यास —मरुधरा ' १
३—भरत व्यास —मरुधरा पृष्ठ २

मरुधरा अपनी अनुवरता के लिए ख्यात है। जब देश के अन्य कवि यहाँ की सरस भूमि की उवरता पर मुग्ध होकर गीतो मे बरस पडते हैं उस समय यह कवि भी इसकी उवरता के गीत गाने लगता है, पर इसकी उर्वरता भिन्न प्रकार की है—इसमें वीर उपजते हैं।

'वीरों की फसल यहा होती
रहता नित आँगन हरा भरा
इसने उपजाया सुकवि चद' [1]

\+ \+ \+

कवियो की फसल यहा होती
है काव्यमयी यह वसुधरा।' [2]

स्वतत्रता से पूव की कविताओ मे कवि की केसरिया पगडी' बहुत ही प्रसिद्ध कविता है। इस कविता में कवि ने केसरिया पगडी का महत्व बताया है और अपने प्रदेश के वीरो को ललकारा है कि इस केसरिया पगडी को धारण करके वीरों ने सदैव अपनी मातृभूमि की आन को रखा है। अत इस समय मे इसको बाधने वालो को भी पीछे नही हटना चाहिये —

"कितनो के सर कुर्बान हुए
कितनो के महल मसान हुए
इस पगडी की लौ म कितने
परवाने थे वलिदान हुए।" [3]

अत में कवि यही आशा रखता है कि यह केसरिया पगडी बनी रहे —

'इससे भी अभिमानी मुख की
भौह अराल हो तनी रहे
यह गगन-ग्रहों म गगा सी
मरु के कण कण में सनी रहे

१— भरतव्यास
२— "
३— '

केसरिया पगडी बना रहे ।' [1]

स्वतन्त्रता से पूव की सभी कविताओ मे कवि ने कही 'चित्तौड' का महत्व बताया है तो कही मरुधरा के 'चौमासे' (वर्षाकाल) का वणन किया है तो कही इस प्रदेश की हरियाली का वणन किया है । निष्कष रूप मे यही कहा जा सकता है कि स्वत त्रता के पूव कवि मरुधारा स वही बाहर निकलता है जहा उसने वीरता की ज्योति जलती देखी है, अ यथा उसने विषय चयन मे अपन आसपास को हा देखा है । इसलिए इनकी कविताओ मे स्थानीय रग (Local Colour) अधिक है। इसके अतिरिक्त भी कवि ने देश प्रेम की भावना को फूकने का प्रयास भी किया है और सोई हुई जनता को जगाने का प्रयत्न भी किया है —

'उठो राष्ट्र के सजग सिपाही
मा के धन, गोदी के लाल
विजय बुलाती तुम्ह खडी
उस पार लिये पूजा का थाल ।[2]

स्वत त्रता से पूव कवि की कविताओ की भाषा बहुत ही सरल है परन्तु उस पर राजस्थानी का प्रभाव भी कम नही है । पर इससे कविता म प्रभावोत्पादकता ही आयी है ।

आचाय चन्द्रदेव शर्मा ने अपनी कविता का प्रारम्भ हास्य और व्यग्य की कविताओ से किया । परन्तु हास्य की अपेक्षा व्यग्य का पुट अधिक है । कवि अपने समाज से अवश्य ही प्रभावति होता है । स्वत त्रता से पूव हिन्दू और मुसलमानो म वैमनस्य की भावना व्याप्त थी उसका वणन भी इन्होने अपनी एक कविता में किया है । इनकी ऐसी कविता म उनका मानवतावादी स्वर मुखर है जो जाति व वग भेद स ऊपर उठकर इन्सानियत की प्रतिष्ठा करना चाहता है । प्रत्येक मनुष्य हिन्दू और मुसलमान आदि होन से पहले मानव होता है फिर बुद्ध और जैस —

१—भरतव्यास — मरुधरा पृष्ठ १
२— — " " ३५

"हम मुसलमान या हिन्दू होने से पहले मजदूर यहा
हम मुसलमान या हिन्दू होने से पहले इसान यहा ।
फिर कैसा यह दगा फिसाद है झगडा हम म कौन कहाँ ।"[1]

इस स्वर के साथ-साथ इनकी प्रारम्भिक कविताओ म आशावादी स्वर भी स्पष्ट रूप से झलकता है जैसे —

"हम नवयुग की भावी आशा हम सोत भाग्य जगा देग
काटा का फूल बना देंगे रोडो को धूल बना देंगे ।" [2]

इस प्रकार चन्द्रदेव शर्मा की कविता मे व्यग्य के साथ-साथ मानवतावादी दृष्टिकोण भी मिलता है । कवि समाज की विद्रूपता से क्षुब्ध है और इसी ने उन्हे व्यग्य का आश्रय लेने के लिए आरम्भ मे ही विवश किया है । ज्यो ज्यो ये विद्रूपताए बढती गई कवि का व्यग्य भी तीव्र होता गया । इसको हम उनकी स्वातन्त्र्योत्तर रचनाओ में देख सकते हैं । पर आशावादी स्वर जो इस समय की कविताओ मे मिलता, वह स्वातन्त्र्योत्तर कविताओ मे नही दिखाई देता है ।

मेघराज मुकुल ने स्वतत्रता से पूव अधिकतर राजस्थानी मे ही कविताए लिखी है, जो किसी न किसी ऐतिहासिक कथा पर आधारित है । मुकुल' की सेनाणी' कविता उस समय म बहुत ही प्रसिद्ध हो गई थी पर राजस्थानी के अतिरिक्त कवि ने हिन्दी कविता की ओर भी अपना ध्यान लगाया और स्वतन्त्रता स पूव कुछ छुट पुट कविताए लिखी भी ।

मेघराज मुकुल की राजस्थानी कविता और हिन्दी कविता के विषयो मे अत्यधिक अन्तर है । राजस्थानी कविता मे जहा एक ओर भारतीय गौरव गाथा सुनाई पडती है, वहा हिन्दी कविता मे इनका स्वर प्रगतिवादी बन गया है । भारतीय गरीबी और इस गरीबा पर होने वाले अत्याचार के चित्रण में कवि पूर्ण सफल हुआ है —

१—आचाय चन्द्रदेव शर्मा — सुदागम' कविता से
२—" " " — भावी आशा' कविता स

'मचा हुआ कुहराम देश म,
आज अ॑धेरी रात म बीते ।
भूखो की आशा के सम्पुट
ज्योति बिना दिखते हैं रीते ।'[1]

शोषको का भयावह और स्वार्थी जीवन का यह चित्रण भी कितना सुन्दर बन पडा है —

कौए और चील स शोषक
भूखो का ले मास उड रहे ।
+ + +
मुर्दो की दावत मे देखो
पापी साहूकार मिले है ।
हँसा-हुआ करते नगे
भूखा पर इनके दाव चले हैं ।'[2]

गरीबी और अत्याचार के आगे जनता विवश हो जाती है । ऐसे समय मे किसी पर भी किसी का विश्वास नही रहता —

चित्र लिखी सी खडी आज
जनता अपना परिहास देखती ।
अपनो पर स अपना ही वह
उठा हुआ विश्वास देखती ।'[3]

एक बात जो मुकुल की कविता म विशेष रूप से देखी जा सकती है वह यह है कि इस प्रकार की गरीबी और अत्याचारा स पीडित मानव का जैसी दशा म हैं वसा दशा म नही छोडा है अपितु उन्हे एक माग दिखाया है जसे —

नए दौर की नई जिन्दगी
को बुलन्द करने अब आओ ।
गड हुए मुर्दो को थोडा
और अधिक गहरा दफनाओ ।

१—मेघराज मुकुल —उमग पष्ठ २७
२— ' ' — २८
३— ' ' —' " ३१

रोम रोम को वाणी देकर
आज नया स्वर पुन उठाओ।
काले और कलंकित शोषण की
छाती पर वज्र गिराओ।"[1]

इस प्रकार से मुकुल की प्रारम्भिक हिन्दी कविता का स्वर प्रगतिवादी था और वही आगे चल कर परिपक्वता को प्राप्त हुआ है ।

इनके अतिरिक्त आचार्य चन्द्रमौलि और मालदान मनुज का स्वतन्त्रता से पूर्व की काव्य सजना मे योगदान रहा है। यह काल बीकानेर जिले की हिन्दी कविता का शैशव काल कहा जा सकता है। इस काल की कविता मे अपरिपक्व कल्पना, अस्फुट अभिव्यक्ति और अप्राजल भाषा उस लडखडाहट की बोधक है जो प्रत्येक शशव काल के कवियो म देखी जा सकती है । स्वतन्त्रता से पूर्व इन कवियो न जो कुछ कहा वह एक दबी जबान से कहा। इसी कारण इस समय के काव्य म गाम्भीर्य नही आ पाया था जो स्वातन्त्र्योत्तर काव्य मे बन पडा है ।

स्वातन्त्र्योत्तर काव्य —

उपयुक्त विवेचन स स्पष्ट है कि बीकानेर म काव्य के क्षेत्र मे छुट पुट प्रयास तो हो रहे थे पर काव्य की धीर गम्भीर धारा उसम नही प्रवाहित हो पायी थी। कवियो की सख्या भी स्वल्प थी और उनके द्वारा लिखा गया काव्य आकार और गुण दोनो दष्टियो स महत्वपूर्ण नहीं था। जब शेष हिन्दी काव्य जगत म काव्य के विविध प्रयोग स्वतन्त्र और पाश्चात्य अनुकरण पर कर चुका था तब तक यहा का कवि देश से कटा हुआ अपनी प्राचीन डिंगल परम्परा या ब्रज काव्य की विषय वस्तु को लेकर हिन्दी में उसे व्यक्त कर रहा था । न उसके पास विषय की विविधता थी और न नवीनता । भाषा शैली म अभिव्यक्ति का वह सामर्थ्य नही दिखाई देता है जो १९४७ तक हिन्दी के काव्य म अर्जन कर लिया था। इस प्रकार उसम प्राचीनता थी और मौलिक उद्भावनाओ का अभाव था। शिल्प की दष्टि से उसका स्वरूप अविकसित और पिछडा हुआ था।

ऐसे काव्य के ही पश्चात आलोच्यकाल म काव्य-सजना को अनेक दिशाए मिली । यहा का कवि कवि-सम्मेलनो और कवि गोष्ठियो, साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओ साहित्यिक सस्थाओ से प्रेरणा प्राप्त कर सहसा उठ खडा हुआ और

१—मेघराज मुकुल —उमग पष्ठ ३२

एक के बाद अनेक कवियों का उदय हुआ और उन्होने काव्य लिखना प्रारम्भ कर दिया यह भिन्न बात है कि इस आलोच्यकाल म भी किसी महाकाव्य या प्रबन्ध काव्य की सृष्टि बीकानेर जिले म नही हुई क्योकि शेष हिन्दी जगत स विछिन्न इस क्षेत्र मे जब प्रथम बार स्वस्थ काव्य चेतना का उदय हुआ तब उसम अपने अस्तित्व और जीवन को सार्थक करने के लिए अनेक रूपता के स्थान पर कुछ रूपो मे स्वय की अनुभूतियो को व्यक्त करने के लिए चुना गया। इसम गीतो और मुक्तको मे ही प्राय अनुभूतिया व्यक्त हुई और शिल्प की अनेक रूपता हिन्दी म विकसित हो गई थी उसे यहा के कवियो ने सहज ही म अपना लिया। इस प्रकार वे देश के काव्य के साथ जुड गये।

फिर भी बीकानेर मे आलोच्यकाल मे काव्य की चेतना जो प्रस्फुटित हुई उसमे हिन्दी के सभी वादो और प्रवृत्तियो का स्वरूप देखा जा सकता है। इस प्रकार यहा के कवियो न हिन्दी के काव्य की थोडे समय तक नकल की जो अधिक वर्षो तक नही चली।

सन १९४७ स पूर्व जो कवि काव्य सृजना म तत्पर थे उन्होने तो अपनी सृजनशीलता को बनाये रखा। अनेक और नये कवि जो इस काल के काव्य क्षेत्र मे आये उनका भी आगे के पृष्ठो म कालक्रम की दृष्टि से परिचय दिया जा रहा है इस परिचय म उनकी रचना और प्रवृत्तियो पर मुख्य रूप से विचार किया गया है। उनके जन्म और शिक्षा दिक्षा आदि के सम्बन्ध म परिशिष्ट मे उल्लेख किया गया है।

शम्भूदयाल सक्सेना —

शम्भूदयाल सक्सेना का साहित्य के क्षेत्र म बहुत सा योगदान रहा है। इन्होने कहानी, उपन्यास नाटक और कविता आदि किसी भी क्षेत्र को अछूता नही रहने दिया है। पर हम यहा उनके काव्य की ही चर्चा करनी है।

'भिखारिन' उनकी, लम्बी एव करुण रस प्रधान कविताओं का सग्रह है। इसम कवि भिखारिन और उसके बच्चे की दयनीय दशा का चित्रण करने म पूर्ण सफल हुआ है। भिखारिन की वेशभूषा एव उसके बच्चे की दशा के साथ ही साथ उसके मनोभावो का बड़ा ही मार्मिक चित्र कवि न पाठक के सम्मुख प्रस्तुत किया है। भिखारिन के धूलि भरे झीने अचल से युक्त चित्र म करुणा को सहज उद्रेक करने की क्षमता है।

"झीना अचल धूलि भरा।"[1]

उसके जीवन का ताना बाना दुखमय है, जिसे वह दिन-रात बुनती है।

'दुख का ताना, दुख का बाना
बुन बुन कर दिन रात बिताना।"[2]

बच्चे को कष्ट से बचाने का हर सफल प्रयत्न करती है। बच्चे की दशा दर्शनीय है।

'मा की गोदी बनी हिंडोला
अचल ही है जिसका चोला।"[3]

भिखारिन की याचना के स्वर तो पाठक को द्रवीभूत ही कर देते हैं। इस पर भी दशक दाता नही बन पाते उनके पत्थर से हृदय नही पिघलते इसलिए तो भिखारिन कहती है —

'यह निष्ठुर जग है दुर्वासा
समझेगा क्या मा की भाषा"[4]

इस पर कुछ उदार और दयालु मनुष्य भिक्षा डाल ही देत हैं उनके लिए भिखारिन आशिष के अतिरिक्त और क्या दे सकती है —

भला करे भगवान तुम्हारा
चिरजीवी हो दान तुम्हारा।[5]

इस प्रकार कवि अपने भावो को व्यक्त करने म पूर्ण सफल हुआ है और करुण-रस के बहाव मे कवि स्वय भी बहा है तथा साथ म पाठक को भी बहा ले गया है। भाषा बहुत ही सरल है तथा उसने भावो का पूर्णतया साथ दिया है।

'रैन बसेरा'' कवि की ६८ कविताओ का संग्रह है। इस संग्रह की अधिकतर कविताए छायावादी प्रवृत्तिया को लिए हुए हैं। उसी प्रकार के इसम विषय हैं जस तारे, बादल प्रात सध्या, नदी आदि। इस संग्रह की कुछ कवि

१— शम्भूदयाल सक्सेना —भिखारिन पृष्ठ १२
२— „ „ „ १३
३— „ „ „ १५
४— „ „ „ २५
५— „ „ „ ७२

ताए प्रकृति विषय की है। कुछ राष्ट्र प्रेम की है। इस संग्रह को पढ़ने से ऐसा लगता है कि शायद कवि नागरिक जीवन म ऊब गया है इसलिए वह गांव की ओर जाने की बात कहता है —

'अब चलो गांव की ओर चलें
नगरो म नाता तोड़ चलें।' [1]

कही कही कवि न गरीबो का भी चित्र खीचा पर कवि का मन वहाँ पर रमा नही है। वेदना मानस म जहाँ कविता म कवि अपने प्राचीन गौरव का स्मरण करक दुखी होता है। 'महायुद्ध' कविता म कवि न युद्ध क दुष्परिणाम एव प्रलयकारी चित्र को प्रस्तुत किया है। प्रकृति का चित्रण भी कवि न किया है पर जहाँ प्रकृति चित्रण हुआ है वहा उसम वेदना, त्याग आदि का वणन उसके द्वारा कर दिया है। फिर भी कवि की कुछ कविताए वास्तव म सुन्दर बन पडी है। 'झिलमिलाता सध्या तारा' 'क्या रोत है शृगाल वन म' वेदना मानस म जहाँ' 'गावो की ओर आदि कविताए विशेष रूप स पठनीय है।

कवि अपने युग के साथ चलता है। समाज सदैव एक जैसा नही रहता है, समय के साथ-साथ समाज बदल जाता है और समाज के साथ साहित्य भी। कवि अपनी खाद्य सामग्री समाज से ग्रहण करता है इसलिए जैसा उस कवि का समाज होगा उसका साहित्य भी निश्चित रूप से वसा ही होगा। यदि एसा नही होता तो वह कवि अपन उद्देश्य मे सफल नही माना जा सकता है। कवि अपने समय और समाज के साथ चलता है यदि वह इनका साथ छोड देता है तो यह बात भी निश्चित है कि समय और समाज भी उसे छोड देते हैं। श्री शम्भूदयाल ने भी युग के बढते चरणो के अनुरूप अपने चरण बढाये हैं इसीलिय वे जो कल थे वे आज नही है —

'कल था जो अब न रहा हू
कह दे यह कोई जाकर।' [2]

लेकिन कवि नीहारिका की भूमिका म लिखता है काव्य की पिछली धारा के साथ उसका सम्पर्क सूत्र स्थापित है।' वास्तव म देखा जाय तो यह बात कवि के लिए अधिक ठीक जान पडती है। बहुत प्रयत्न करने पर भी वह

---

१ शम्भूदयाल सक्सेना — रैन बसेरा पृष्ठ २६
१ शम्भूदयाल सक्सेना नीहारिका पृष्ठ ३५

"नीहारिका" म पछली काव्य धारा से अपना पिड नही छुडा पाया है, और वही पुराना राग अलापने लगा है। वही विषय, वही शैली और वही अन्त्यानुप्रास का मोह यहाँ भी मिलता है। कवि को छायावादी काव्य धारा से अत्यधिक प्रेम है। कहने को चाहे वह यह कहे कि "कल था जो अब न रहा हू" पर ऐसा हुआ नही। राष्ट्र प्रेम की कविताए इस सग्रह की वास्तव मे कुछ सफल कविताए कही जा सकती हैं जैसे–भारत गीत, विजय का मूल्य शेष अभिलाषा आदि। इसके प्रकृति वर्णन मे कोई नवीनता नही है। कुछ वियोग की कविताए भी लिखी है। ऐसी कविता मे कवि का ध्यान आसू बहाना, रोना सिसकना आदि अत्युक्ति पूर्ण वर्णन करने म रहा है।

'सोचा था रो रो कर जलमय एक समुद्र ही बना दूगा।" [1] कवि तुक बदी मे अधिक सजग रहा है। सखी शब्द कविता के आदि से लेकर अत तक प्रयोग किया है। सक्षेप म यही कहा जा सकता है कि इस सग्रह की कविताए कल की है, उसके युग के साथ चल नही पाई।

"प्रतिवेदन के स्वर" नई कविताओ का सग्रह है। इस समय कवि सक्सेना ने अपना पुराना चोला बदल कर नवीन धारण किया है। कवि के शब्दो मे 'पुरातन ने नूतन के लिए माग छोडा है।' [2] इस सग्रह की कविताओ के सभी विषय नवीन है और अभिव्यक्ति भी नवीन है। 'दो बहने कविता के द्वारा कवि ने घडी की दोनो सुइयो का वर्णन किया है। नया कवि अपने दैनिक जीवन मे काम आने वाली वस्तुओं का वर्णन करता है। इस सग्रह म भी कुछ इसी प्रकार की वस्तुओ का वर्णन हुआ है। यहा कवि राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत है। इसमे लगभग सात-आठ कविताए इसी भावना का लेकर लिखी है जिसमे चीन को नीचा दिखाया है और राष्ट्रीय अखण्डता का आदश भारतवासियो के सामने रखा है। कवि न स्तालिन बच्चन हमर शोल्ड गुटर ग्रगू आदि महान पुरुषो को भी अपनी कविता का विषय बनाया है। इस सग्रह म भाषा विवाद, ये उल्लू, यह चादनी रात भारत एक परिचय आदि कविताए विशेष पठनीय है।

श्री शम्भूदयाल के शब्दो म 'समय क साथ उसकी रचनाओ मे नई दृष्टिया सामने आती ही रहती है।' [3] कवि अपने अधुनातन काव्य सग्रह 'रत्न

१	शम्भूदयाल सक्सेना	नीहारिका	पृष्ठ २०
२	" '	प्रतिवेदन के स्वर	–आमुख
३	" '	रत्न रेणु	–प्रवेशक

रेगु' में अपने आपको और अधिक तथा सिद्ध करने के प्रयत्न में है। वह नई पीढ़ी के साथ चलना चाहता है। पर कवि ऐसा कर नहीं पाया है। नई कविता के विषय है—होटल चाय सिगरेट आदि और कवि ने पुराने छायावादी विषय ग्रहण किये हैं जैसे आकाश, चांद, प्रभात आदि। कवि यहां भी छन्द का मोह नहीं छोड़ पाया है। उसने छन्द को अवश्य तोड़ा मरोड़ा है। इन कविताओं में वह गहराई नहीं जो कि वास्तव में कविता में होनी चाहिए। एक दूसरा सत्य है और संग्रह की कोई भी कविता पाठक के हृदय पर स्थायी प्रभाव नहीं छोड़ती। कवि ने केवल विषय के ऊपरी स्तर को छुआ है। उसने नई कविता लिखने के लिए नवीन उपमान अवश्य नई कविता से ग्रहण किये हैं।

इसलिये वे भी इन कविताओं में आकर तक साधारण सा अर्थ देकर मौन हो जाते हैं। कहने का अर्थ यह है कि इसमें कवि का कथ्य कुछ दुर्बल ही है। पर इसमें कवि का अधिक दोष नहीं है। दोष कवि के संस्कारों का है जो उसके रग-रग में व्याप्त है और उसके लिये संस्कारों से पीछा छुड़ाना भी सरल नहीं है उसने संस्कारों को छोड़ने का प्रयत्न अवश्य किया है। कवि की सफलता ही इसी प्रयत्न में है। इतना कुछ होने पर भी इस काव्य संग्रह की कुछ कविताएं अवश्य सुन्दर है, जैसे युद्ध का अंत क्षीण रेखा अकवि से आदि। इन कविताओं में विषय भी नये हैं कथ्य भी शक्तिशाली है और शैली में भी नवीनता है।

आचार्य चन्द्रमौलि —

स्वतन्त्रता के पूर्व से लेकर आज तक बीकानेर में काव्य साधना करने वाले शम्भूदयाल सक्सेना के बाद दूसरा स्थान आचार्य चन्द्रमौलि का है। इनकी प्रारम्भ से लेकर आज तक जितनी कविताएं है उन कविताओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कवि का इन सब कविताओं में एक रूप नहीं रहा है। कवि बीकानेर की काव्य धारा के साथ परिवर्तित होता रहा है। इनके मुख्य रूप से दो काव्य संग्रह है—वैजयन्ती और वीथिका। इनके अतिरिक्त कवि ने दो छोटी छोटी पुस्तकें—पाक को चुनौती और चीन को चुनौती करके भी निकाली है। इन दोनों ही में देश भक्ति की कविताएं है और प्रकाशन काल में इनका प्रचार भी बीकानेर में बहुत हुआ। इनके द्वारा कवि ने समय की मांग को पूरा किया है। यह समय ही ऐसा था जब देश का समस्त कवि वर्ग अपनी स्थायी साहित्य साधना छोड़कर देश में स्फूर्ति और

इनके अतिरिक्त 'वैजयन्ती' में कुछ प्रकृति सम्बन्धी और रहस्य सम्बन्धी कविताएं भी हैं, पर कवि का अधिक ध्यान तो स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात के समय को चित्रण करने में ही रहा है।

इनका दूसरा काव्य संग्रह 'वीथिका' है इसमे भी अधिकतर राष्ट्रीय और प्रकृति सम्बन्धी कविताएं हैं और कुछ शृंगार रस की कविताएं हैं। कवि का प्रकृति वर्णन अधिकांश म आलम्बन रूप म हुआ है या उसका मानवीकरण किया गया है।

चूम चली जाती है लहरें
तपित कूल का आनन प्यारा।[1]
\+ + +
इठलाती आई ऊषा है।[2]

पर फिर भी इनके प्रकृति-चित्रण म कही भी विशेष आकर्षण दृष्टिगत नहीं होता।

राष्ट्रीय कविताओ मे कवि ने अपने देश का गौरव गाया है। इनमें इन्होने जो कुछ कहा है उसम सजना का स्वर अधिक प्रमुख है। वीथिका की अपेक्षा 'वैजयन्ती की राष्ट्रीय कविताए श्रेष्ठतर है। 'वीथिका' की अनेक कविताओ म गाम्भीर्य का अभाव है। ऐसी कविताओं म कभी तो कवि कहता है

निशा शेष है अभी न जाओ
हुआ नही अभिसार है पूरा
रह न जाय वह कही अधूरा'[3]

और कहीं कहता है

'प्रेम प्रेम के लिए है मेरा, नही प्रेम मे मैं वहमी हूँ
सुन्दरता का मैं प्रेमी हूँ।'[4]

इसी प्रकार कभी कवि प्रियतमा को मनाने मे लग जाता है।[5]

१— आचार्य चन्द्रमौलि —वीथिका पृष्ठ ४८
२— ,, , ८४
३— ,, , ३८
४— ,, ,, , ७४
५— ,, —वीथिका , ३७

इन संग्रहों की अनेक कविताएं कवि सम्मेलनों की कविताओं के स्तर से अधिक नहीं बन पाई है। कवि का वक्तृत्व पक्ष इनमें अधिक प्रबल है। कुछ कविताएं रहस्यवाद की कोटि में भी आती है। छलनामय, रहस्यमय, प्रियतम, मनचाही मुक्ति, प्रियका-अवगुंठन आदि इसी प्रकार की कविताएं है। इनमें कवि की व्यक्तिगत साधना का अभाव है और इसलिये इनमें अनुभूति का छिछलापन दिखाई देता है। आचार्य चन्द्रमौलि की "वैजयंती" और 'वीथिका' दोनों काव्य संग्रहों की कविताओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इनकी कविताओं में भावों की पुनरावृत्ति अधिक है। वे एक ही बात को कई कविताओं में कह जाते हैं। इसके अतिरिक्त इनकी कविताओं में हृदय स्पर्श करने की क्षमता कम दृष्टिगत होती है। कवि भाषा का धनी है और छन्द योजना भी अच्छी बन पडी है।

आचार्य चन्द्रमौलि ने हास्य और व्यंग्य की कविताएं भी लिखी है। कम्पोजीटर' इनकी हास्य रस की कविता है। इसके अतिरिक्त 'पत्नीव्रत ऐलान करो' 'क्यू और ये कालेज के स्टूडेंट' आदि इनकी हास्य और व्यंग्य की कविताएं है। यह ठीक है कि आज स्त्री और पुरुष को हर क्षेत्र में समान अधिकार हैं पर इस अधिकार से स्त्रियों ने आज घर का काय छोडकर अपने पतियों को सौंप दिया है इस तथ्य को उन्होंने 'पत्नी व्रत ऐलान करो' कविता में सुन्दर व्यंग्यात्मक ढंग में प्रकट किया है —

> 'खाली घडा पड़ा है कब से
> जल लाकर जलदान करो
> मुन्नी के बालों में कंघी
> करके चोटी गूंथ देना ...
> साडी जम्फर मैले प्रियतम
> धोकर हिम्मत दान करो।"[1]

इससे और अधिक क्या हो सकता है कि पत्नी पति से अपने कपडे धुलवाये। इसी प्रकार का करारा व्यंग्य आज की इस क्यू' व्यवस्था पर कवि ने किया है —

१—आचार्य चन्द्रमौलि —पत्नी व्रत ऐलान करो— कविता में

'लेते टिकट वहा लाइन है
घुमने मे लाइन है
जीने मे प्यारे लाइन है
मरने मे लाइन है ।"[1]

इसी प्रकार इनकी 'ये कालेज के स्टूडेन्ट' कविता मे भी अच्छा हास्य और व्यग्य है।

पिछले दो तीन वर्षो से आचाय च द्रमौलि कुछ नई कविताए भी लिख रहे हैं। इन्होने नई कविताए लिखी है पर इनकी य कविताए इतनी सफल नहा है जितनी कि इनकी हास्य और व्यग्य तथा अन्य पहल की कविताए। हा इतना अवश्य कहा जा सकता है कि कवि म क्रम बद्ध विकास होता रहा है और कवि ने समय के साथ कदम बढाने का प्रयास किया है। कही कही तो ये कविताए बिलकुल गद्य ही बन गई है जैसे —

गाउ की हरी झडी
दिखाई देती है
लाइन क्लियर है
तूफान मेल आ रही है ।"[2]

पर कुछ नइ कविताए अवश्य ही सफल कही जा सकती है। जसे — जीना चाहते हैं —

जीना ता सभी
जीत हैं ।
हमे सभी का—
जीना तो
नही जीना है ।
हम तो वही
जीना है
जिस हम
जीना चाहत हैं । [3]

१—आचाय चन्द्रमौलि — क्यू कविता स।
२— ' ' — तूफान मल कविता से
३—आचाय चन्द्रमौलि — जीना चाहते हैं' कविता स।

इस कवि की एक बहुत बडी विशेषता यह रही है कि कवि अपने समय की काव्य प्रवृत्तियो से पिछडा नही है, उसने बीकानेर मे आगत समस्त साहित्यिक प्रवृत्तिया के स्वर मे स्वर मिलाया है और कवि सम्मेलनो मे पहुच कर अपना नवीनतर रूप प्रस्तुत किया है।

चन्द्रदेव शर्मा

१५ अगस्त सन १९४७ से एक नया युग आरम्भ हुआ। स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ ही कवियो की जबान पर जो पाब दी थी वह पूर्णतया हट गइ और कवि राजनैतिक सामाजिक सभी बातो को स्पष्ट रूप से कहने लगा। इस प्रभाव से बीकानेर भी अछूता नहीं रहा। चन्द्रदेव शर्मा मनुज, मेघराज मुकुल और गगा-राम पथिक उन कवियों म स है जिन्होने इस स्वतन्त्रता का खुल कर उपयोग किया। य सब कवि प्रगतिशील थे। इन्होने अपनी रचनाओ को जन साधारण तक पहुचाने के लिए नई चेतना ' पत्रिका भी निकाली।

चन्द्रदेव शर्मा प्रगतिशील कवियो मे अग्रणी है। इनका मुख्य स्वर विद्रोह का है। इनकी कविताए व्यग्य और हास्य से ओत-प्रोत है। चन्द्रदेव शर्मा ने हिन्दी जगत को बहुत कुछ दिया और बीकानेर की काव्य धारा में एक तीव्र गति ला दी। उन्होने कम समय में बहुत अधिक लिखा है। उनकी मत्यु के उपरान्त उनका एक काव्य सग्रह 'पडित जी गजब हो रहा है" निकला है, जिसमे उनकी हास्य और व्यग्यपूर्ण कविताए है।

साहित्यकार अपने युग का प्रतिनिधित्व करता है। चन्द्रदेव ने अपने समाज को खुली आखो से बहुत समीप से देखा। इससे समाज की अच्छाइया और बुराइया छुप न सकी। रूढिवादी समाज उसकी थोथी परम्पराए खोखली आस्थाए रुग्ण विश्वास और जजरित कुरीतियो आदि ने कवि को विवश कर दिया कि उसने जैसा उन्हें देखा है उनका वैसा ही चित्रण कर दे, जिससे भावी पीढी सचेत हो जाय। कवि के अपने शब्दो मे वतमान समाज में सडान पैदा हो गई है कवि का उसी व्यवस्था से विरोध है। वह देखना चाहता है रुग्ण समाज के स्थान पर स्वस्थ समाज का निर्माण, तभी वह विद्रोह करता है।"[1]

'पडित जी गजब हो रहा है' कविता पुराण पथ पर करारी चोट है।

"सर पिचक गया है ईश्वर का

१— स्व० चन्द्रदेव शर्मा —हमारे कवि (निबन्ध से)

उसका मस्तक उसका ललाट
सड गया आज,
कर रहे वहाँ कीडे बिलबिल ।"[1]

इस कविता का अर्थ यह नहीं है कि कवि नास्तिक है । कवि आस्तिक है परन्तु वह पत्थर का पुजारी नहीं है —

मन्दिर म जो बसता ईश्वर
वह तो पत्थर है पत्थर"[2]

"मुनीम श्यामलाल कवि की अमर कृति है जो बगाल के काल से सम्बन्धित है । किस प्रकार से मुनाफा खोरों ने हजारो को पल म मार डाला, किस प्रकार से भोली बगाल की नारियो की इज्जत छीनी आदि का इसम सजीव चित्रण है —

'उनम थी कुछ जोबन वाली'
+ + +
नित नई परी ले आते थे
रोटी का फन्दा डाल डाल"[3]

'विवाह की बात" मे कवि ने समाज पर करारी चोट की है। उसमे दिखाया है कि सामाजिक बन्धनो के आगे मानव हार मान लेता है —

'पर दयाराम मत रोओ तुम ! हम हिन्दू हैं- यह भारत है !
+ + +
चुप रहो पोछो तुम आँसू बध गया गले जो यहा ढोल,
बस उस बजा ही सुख पाओ, भारत मा की जय बोल ![4]

रामचन्द्र कह गए सिया से ऐसा कलियुग आयगा उनकी प्रसिद्ध रचना है जिसम उन्होने अति आधुनिकता के कुप्रभाव का बहुत सुन्दर चित्रण किया है ।

कवि की लेखनी से समाज का कोई भी क्षेत्र अछूता नही रहा है । राजा

१— स्व० चन्द्रदेव शर्मा —पण्डित जी गजब हो रहा है पृष्ठ ४
२— " " " ६६
३— " " " ५४
४— " " " १२

महाराजा को, नेता, मन्दिर के पंडित आदि सभी को कवि ने आडे हाथ लिया है और इन सब को जैसे ये हैं वैसा ही इनको चित्रित किया है —

' ताजमहल होटल मे बैठे सब राजा महाराजा
सोच रहे सामती युग का उठता देख जनाजा ...
इस जीवित रहने मे अच्छा दारू पी मर जाना ।''[1]

बेटी तेरे बेटा होगा'', अद्भुत भोपा, रूप का बाजार आदि अनेक व्यग्यात्मक कविताए उन्होने लिखी है जो आज पत्रिकाओ मे बिखरी पडी है या अप्रकाशित है ।

इसके अतिरिक्त कवि ने कुछ शुद्ध हास्य रस की भी कविताए लिख कर हिन्दी साहित्य की कमी को पूरा किया है । मालिन, साजन का भ्रम आदि उनकी इसी प्रकार की रचनाए हैं । रोमाटिक कविताए कवि ने कम लिखी है, जितनी लिखी है उनम 'पनिहारिन'' उनकी श्रेष्ठ सुन्दर रचना है । पर कवि का मन ऐसी रचना मे अधिक नही रमा है । घिनौने समाज की नगी दुनिया म उस कभी प्यार नही करने दिया ।

सरकारी पद पर प्रधिष्ठित होने के कारण वह राजनैतिक विषयो पर खुल कर नही लिख सकता था । अत उसे छद्म नाम का आश्रय लेना पडा । इनके जितने छद्म नाम है उतने हिन्दी साहित्य मे किसी भी साहित्यकार के नही है । चन्द्रदव शर्मा ने जो कुछ लिखा निर्भीकता से लिखा । नई और अनोखी सूझ-बूझ, अछूती कल्पना, सीधी सादी भाषा म करारी चोट, विनाश मे नव सृजन की प्ररणा उनके काव्य की विशेषता है । बीकानेर के काव्य जगत म इनका अपना एक युग रहा है और अपने समय मे य बीकानेर काव्य जगत पर छाये रहे । चन्द्र-देव शर्मा ने बहुत से कवियो का निर्माण किया और व्यग्य की शैली को नया रूप दिया । य किसी भी वाद से सम्बधित नही रहे अपितु स्वतन्त्र चेता रहे । आज भी बीकानेर और हिन्दी साहित्य उनका ऋणी है ।

पर बीकानेर और हिन्दी काव्य-जगत का यह दुर्भाग्य हुआ कि १६ जनवरी, १६५६ को चन्द्रदेव शर्मा का अकस्मात निधन हो गया । फिर यह भी समाचार मिले कि उनके हृदय म गति आ गई है । लोगो ने यही समझा कि चन्द्रदेव यमराज स मजाक करने गया होगा और लौट आया है ।

१— सन १६५१ मतवाला पृष्ठ ३२

'ठहरा ठहरा मैं चीख उठा
मैं नरक भला चला क्यो जाऊ गा''[1]

शायद उनके इस विद्रोह से घबरा कर यमदूत ने उन्हें छोड दिया हो। चारो ओर रुशिया के बादल छाये पर कुछ देर वाद हि दी जगत शोक सागर म डूब गया।

मेघराज मुकुल'

'कविता और सगीत मेरे जन्म के साथी रहे हैं।''[2] कवि की इस उक्ति से यह स्पष्ट है कि मेघराज 'मुकुल' कवि और गीतकार दोना हैं। कविता लिखना कोई आसान बात नही है और उसे लिख कर गाना तो और भी अधिक कठिन है। पर मुकुल इन दोनो कार्यो को ही बडी सफलता के साथ निभाये जा रहे हैं। ये हिन्दी और राजस्थानी दोनो म ही लिखते हैं। राजस्थानी की 'सनाणी' इनकी बहुत प्रसिद्ध कविता है। इनकी राजस्थानी कविताओ की यह विशेषता है कि व सभी किसी न किसी एतिहासिक वस्त पर आधारित होती हैं।

मेघराज मुकुल का प्रथम काव्य सग्रह उमग है। जिसमे हिन्दी और राजस्थानी दाना प्रकार की कविताए है। हि दी कविताओं मे कुछ राष्ट्रीय प्रम की कविताए है, जैसे भारत-वन्दना जन जन जाग रहा है आदि। कुछ कविताए प्रगतिवादी काव्य धारा के समीप की है। कवि का मुख्य स्वर विद्रोह का है। यह विद्रोह ईश्वर से धम और अन्धविश्वासो से तथा समाज के शोषक वग आदि से है। इन सब को कवि समाप्त करना चाहता है। इसलिए उसकी सहानुभूति शोषितो की ओर है। वह एक कविता मे उनका चित्र इस प्रकार से प्रस्तुत करता है —

न गी पडी धरा थी पहले, भूख स्वय अब नगा है।
माँ की छाती से चिपटे शिशु को जीन की तगी है ॥[3]

इसी प्रकार कवि मान्यताओं क बारे मे कहता है

शक्ति खो बैठी पुरानी मा यताए,'[4]

\+ \+ \+

१— चन्द्रदेव शर्मा —नरक विद्रोह कविता से
२— मेघराज मुकुल —उमग पृष्ठ ५
३— " " " २०
४— " " " ५३

'जीर्ण पुरातन परम्परा से पल्ला छूटा ।''[1]

कवि देव मनुष्य को अधिक श्रेष्ठ समझता है । इसलिए कहता है —

'आज कितने देव जिनको मनुजता स्वीकार है ?
मैं नया मानव जिसे देवत्व से इन्कार है ।।[2]

इस संग्रह में अधिकतर लय युक्त कविताएं है । वर्ण्य विषय को चित्रित करने में कवि सफल हुआ है । कवि की भाषा में राजस्थानी शब्दों का प्रयोग हुआ है ।

मेघराज मुकुल का दूसरा काव्य संग्रह 'अनुगूंज' सन् १९६७ में प्रकाशित हुआ जिसमें उसकी ४१ कविताएं है । इस संग्रह की अधिकतर कविताएं उस समय की लिखी हुई है जब चीन ने भारतवर्ष पर आक्रमण किया था । स्वयं कवि ने इस बात को स्वीकार किया है ' अनुगूंज' कविता संग्रह शक्ति के क्षणों का सृजन है, जिसमें देश की भावनाएं एक रस होकर व्यक्त हुई है । अधिकांश कविताएं सन १९६३ की है जब आततायी ने इस पावन भूमि पर अपनी कुदृष्टि डाली थी ।'[3]

कवि अपने समय से बहुत अधिक प्रभावित होता है । समय की मांग को वह ठुकरा नहीं सकता है । कवि ने इसमें जिस प्रकार की कविताएं लिखी उनकी उस समय वास्तव में आवश्यकता थी । क्योंकि इस संग्रह की अधिकतर कविताएं सन १९६३ में लिखी हुई है । इन कविताओं के आधार पर एक बात यह भी कही जा सकती है कि इनमें कवि का आशावादी स्वर बहुत प्रबल होकर उभरा है ।

राजस्थान में चारण परम्परा बहुत समय तक रही है । यद्यपि मुकुल का यह काव्य चारण परम्परा में नहीं आता । फिर आक्रमण के संदर्भ में उनका वह रूप उभरा हो जिसमें त्याग और शौर्य की प्रमुखता रही है । माता, बहन, पत्नी आदि सभी अपने देश की रक्षा के लिए बड़े से बड़ा त्याग करने को सदैव तैयार रही हैं । युद्ध के समय में किसी भी वीर के रास्ते में पारिवारिक बंधन नहीं

१—मेघराज मुकुल —उमंग पृष्ठ ६
२— ,, ,, ,, २३
३— ,, ,, —अनुगूंज—'शक्ति के क्षणों का सृजन' शीर्षक में

है अपितु उसकी मा, बहन और पत्नी उसे मातभूमि की रक्षा के प्रति उसको उसका कतव्य समझाती है, जैसे वीर की जननी कहती है —

बेटा तेरी कूख उजागर तब ही होगी
जब तू तेरी मा पर मिट जाएगा ।'[1]

वीर पत्नी की भावनाए भी वीर के उत्साह को ही बढाती है —

'धन्य होऊगी अगर तुम, धव मे निजतन सजाये
ले विजय श्री साथ अपने देहरी पर लौट आये ।
और यदि सयोग वश तुमको वहा मरना पडे तो,
धन्य होऊगी, यही सुन देश के तुम काम आए ।'[2]

एक तरफ सीमा का प्रहरी सिपाही है दूसरी ओर उसकी पत्नी है। पत्नी विजय श्री लाने को लिख कर भेजती है, मा का अनुरोध है कि वह भारत माता को ही अपनी असली मा माने । बहिन अपने धागे की याद दिलाती है —

'भैया अपनी यह मजबूत कलाई देखो
इसमे मैंने दो धागो की राखी बाधी ।
ये दो धागे आन-बान के ही प्रतीक हैं । [3]

कवि अपने देश के सिपाहियों का अपनी इसी मातभूमि के लिये न्योछावर होने वाले शहीदों की याद दिलाता है —

यहा शिवाजी लक्ष्मी बाई, बलिदानो की कहू कहानी ।
यह प्रताप की जन्म-भूमि सघर्षों की दे रही जवानी ।'[4]

बात भी स्पष्ट है कि भारतवर्ष की प्राकृतिक शक्तियां भी भारतवर्ष की रक्षा करती रही है । इन प्राकृतिक शक्तियो का इस दृष्टि से बहुत महत्व है —

'बर्फीले हिमगिरी का अन्तर धधक रहा है,
अब युग युग से सोया शोला भडक रहा है ।

१—मधराज मुकुल	—अनुगूज	पष्ठ ४८
२—' ,,	—	,, ४१
३—,, '	—'	,, ४२
४— ,, ,	—,	६

शत्रु ! आग से मेल ,न कर हिम गल जायेगा
ज्वालामुखी रूप धर तुझे निगल जायेगा ।'[1]

क्योंकि कविता चीन आक्रमण के समय की है। अतः चीन को बहुत अधिक फटकारा है —

जाने कैसी माँ ने जन्म दिया था तुमको
जाने किस धरती ने भार तुम्हारे झेले

+ + +

झूठा तुम्हारा जनक, मा तुम्हारी है छलना,
कपट जाल मे गर्भ धारणा हुई तुम्हारी ।'[2]

सभी कविताओं की भाषा बहुत सरल और स्पष्ट है। राष्ट्रीय चेतना की दृष्टि से बहुत ही अच्छी कविताएं है। बीकानेर के कवियों मे इस प्रकार का यह एक ही संग्रह है। मेघराज मुकुल ने जयपुर रहते हुए 'पथ के पुनीत पाव' काव्य संग्रह और लिखा है।

मालदान देपावत 'मनुज'

मालदान देपावत मनुज देशनोक म पैदा हुए और इन्होने अपनी शिक्षा देशनोक और बीकानेर मे प्राप्त की। साहित्य से इनको बचपन से ही रुचि थी इसलिये इन्होने छोटी उम्र मे कविताए लिखना आरम्भ कर दिया था। कवि ने ज्यादातर कविताए सामाजिक रूढियो धार्मिक अन्धविश्वासो के विरुद्ध ही लिखी पर बीकानेर काव्य जगत का दुर्भाग्य यह है कि 'मनुज सन् १९५३ मे रेल दुर्घटना के शिकार हो गये। कवि समय से ही पहले चल बसा। अभी तो उसम नन्ही नन्ही टहनिया, नवीन नवीन कोपले और किसलय फूट रहे थे, कि अचानक वह क्रूर काल के द्वारा जला दिया गया। इस अभाव का घाव भर जाना कठिन है।

'मनुज' की मृत्यु के बाद इनकी कविताओ का विप्लवगान' के नाम से एक सग्रह छपा। जैसा कि नाम से स्पष्ट है, कवि का मुख्य स्वर इसमे विप्लव का रहा है, जैसे —

'मैं विप्लव का कवि हू मेरे गीत चिरंतन'[3]

१—मेघराज मुकुल —अनुगूंज पृष्ठ ५९
२— ,, ,, ,, ४५
३—मालदान देपावत 'मनुज' —विप्लवगान पृष्ठ २५

इस समय (सन् १९५० ५३) जो कविताए लिखी जा रही थी उनमे विद्रोह स्वर प्रमुख था। अत मनुज का उससे विरत रहना कठिन था। इस स (विप्लवगान) की कुछ कविताए वर्णनात्मक है। कवि राजस्थान म पैदा हु यही बडा हुआ। अत मरुभूमि स उनका प्रेम होना स्वाभाविक ही था। कवि लिए मरुधर का गाव इ द्रपुरी से भी बढकर है —

'तुम इन्द्रपुरी से सुन्दर थे
मेरे मरुधर के सुखद ग्राम,
तेरे रेतीले धोरो पर
उल्लास बिछाती सुबह शाम।'[1]

कवि अपनी कविताओ मे त्यौहारो और उनके गीतो का मोह भी नही छोड प है —

फिर तीजो का त्यौहार सुखद
सखियो क मादक गीत मधुर
झूलो क मस्त झकोरो पर
जात उर उर के अरमान बिखर।[2]

कुछ कविताए उदबोधनात्मक है। ऐसी सभी कविताओ मे कवि अ युग की पतनोन्मुखता से पीडीत है और उसे जगाना चाहता है। इसलिए वह के कवि को नवीन रूप म प्रस्तुत होने के लिए आह्वान करता है। वह चाहत कि वह वसु धरा क उर के छाले भी देखे —

तुमने उस मादक मस्ती के
मधुमय गीत बहुत लिख डाल,
किन्तु कभी क्या देखे तुमने
वसुन्धरा क उर के छाले ?[3]

कवि को इतने से ही सन्तोष नही होता वह तो युग कवि पर व्यग्य क है —

१—मालदान देपावत मनुज' —विप्लवगान पृष्ठ ३३-
३— , , , ३३
४— , , ५५

"मौत यहा पर नाच रही
तुम परियो का आह्वान कर रहे।'[1]

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि कवि ने चाहे किसी भी प्रकार की कविताए क्यो न लिखी हो उसमे विप्लव का स्वर मुख्य दृष्टिगोचर होता है। कवि का किसी भी प्राचीन आस्था के प्रति विश्वास नहीं रहा है, जैसे —

'उस पत्थर के परमेश्वर का अभिसार मिटाने आया हू।"[2]

\+ + +

उस प्रबल पाप के पु न धम की धूल बनाने आया हू"[3]

कवि को तो केवल इसी बात का विश्वास है —

मानव खुद अपना ईश्वर है
साहस उसका भाग्य विधाता
प्राणो मे प्रतिशोध जगाकर
वह परिवतन का युग लाता।"[4]

इसके अतिरिक्त इस सग्रह मे कुछ प्रकृति सम्बधी कविताए भी है। हर स्थान पर प्रकृति मानवीकरण का बाना पहन कर उपस्थित हुई है —

चदा के दपण मे आकर
निशा झाकती है निज यौवन
तारा का शृगार सजा कर।"[5]

मनुज ने बहुत कम समय म बहुत कुछ लिख डाला पर उनके पूर्ण विकास के लिए अभी समय की आवश्यकता थी। इनकी कविताए समय-समय पर देश की विभिन्न पत्रिकाओ मे छपती रहती थी। कवि सम्मेलन की तो आप जान थे। आज उनकी स्मृति स्वरूप हमारे पास केवल 'विप्लवगान' ही है।

डॉ० पुष्करदत्त शर्मा —

बीकानेर से आचार्य नन्दकिशोर द्वारा सम्पादित 'संवेदन इति"

१—	पालदान देपावत 'मनुज'	—विप्लवगान	पृष्ठ	५५
२—	"	"	,	३६
३—	"	,	"	३६
४—	"	"	"	४६
५—	"	"	,	४७

काव्य सग्रह म डा० पुष्कर दत्त शर्मा की कुछ कविताए है । इस सग्रह की कविताए और उसके बाद की कविताओ से ऐसा लगता है कि बहुत ही प्रयास करके कविताए लिखी है । जिस प्रकार से कवि भाव मग्न हो कर कविता लिखता है वह बात इनकी कविताओ मे नही है । इसलिए इनकी कविताए भावनाओ का स्पर्श कम करती है । कविताओ म बौद्धिकता की अधिकता है और अनुभूति की कमी पायी जाती है । 'सासो का चक्रव्यूह' और रात का डिनर' ऐसी ही कविताए है जिनम अनुभूति की कमी है । इनकी कुछ एक कविताओ म रूपक काफी लम्बे हैं । 'सवेदन इति' मे एक इसी प्रकार की कविता है —

"मायूसिया की मेल ट्रेन पर
भागता सा जा चढा हूँ
बिना टिकट
बिना पूछे
+ + +
अ तश्चेतना का टी० टी० सामने खडा है
+ + +
टी० टी० चला गया है
प्रताडन की पनल्टी लगा कर "[1]

डा० पुष्करदत्त शर्मा की कुछ एक कविताए काफी सशक्त भी है । जिनम अनुभूति की कमी नही खटकती । आइसक्रीम' इनकी इसी प्रकार की कविता है । निश्चित मा यताओ और विचारो की पुष्टि मे लिखी गई कविताए बौद्धिकता के धरातल पर बैठी प्रतीत होती है । जिनमे विषय की एकरूपता अधिक है ।

कवि ने कुछ राष्ट्रीय कविताए भी लिखी है । चीन के आक्रमण के समय में लिखी हुइ इनकी यह कविता जिसमे इन्होन अपने देश की एकता की ओर दुश्मना का ध्यान दिलाया है और साथ ही अपने सिपाहियो का भी यह बताना चाहा है कि दुश्मन के पास अपना कुछ भी नही है । सब पराया है और पराई वस्तु दूसरे देश की रक्षा नही कर सकती —

आज उसकी फौज में ताकत पराई
आज उसकी योजानयें सब पराई

१— स० आचाय नन्दकिशोर "सवेदन इति' पृष्ठ ६६ ६७

वह भुना बैटा
पराए शस्त्र से कब तक लड़ेगा
पराई बुद्धि भी कब तक चलेगी ।"[1]

उधर यह दुश्मन को ललकारता हुआ कहता है कि —

"याद रखो यह
कि भारत झुक नहीं सकता
कहीं फिर रुक नहीं सकता
सहन वह कर नहीं सकता
किसी का आक्रमण
किसी का अतिक्रमण"[2]

कवि ने अपनी इस कविता में दुश्मन की कमजोरी और भारत का गौरव दोनों को ही साथ-साथ चित्रित किया है । भाषा पर कवि का पूर्ण अधिकार है । राष्ट्रीय कविताओं में तो कवि ने बहुत ही सरल भाषा का प्रयोग किया है । अन्य कविताओं में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी किया है ।

राजानंद भटनागर —

बीकानेर के आज के कवियों में राजानन्द भटनागर का भी अपना एक स्थान है । यहां की काव्य चेतना में इनका योगदान रहा है । इन्होंने जितनी भी कविताएं लिखी हैं वे सब नई कविताएं" हैं । कवि ने समय की मांग को अवश्य ही समझा है । इनकी ऐसी अनेक कविताएं हैं जो किसी प्रकार का बिम्ब प्रस्तुत नहीं करती । 'युग विवेक', 'आयाम' और विश्वास" आदि कविताओं में अति साधारण अभिव्यक्ति है । इनकी कुछ कविताएं रूढ़िग्रस्त हैं और शिल्प की दृष्टि से भी प्राचीन खंडहर जैसी लगती हैं । "शायद देवता" इसी प्रकार की कविता है । कवि ने कुछ अनास्था युक्त कविताएं लिखी हैं । जिनको उन्होंने 'घुटन नं० १", "घुटन नं०-२" और 'घुटन नं० ३" शीर्षकों में बांधा है । 'घुटन नं०-१" में सपाट अभिव्यक्ति है । "घुटन नं० २" में अवश्य ही कहने का ढंग बहुत अच्छा है और कथ्य रूप में समाज में प्रचलित और परिचित चित्र प्रस्तुत किये हैं ।

१— सं० संहिता विजय हमारी है पृष्ठ २१
२— " , , २२

कुछ कविताओ मे कवि का चि तन बहुत गम्भीर है और अभिव्यक्ति म भी गाम्भीय बना हुआ है। "जिन्दगी" और वात्टेज ' इनकी ऐसी ही कविताए है । राजानन्द की कुछ कविताओ म व्यग्य भी है । कवि का जीवन भीड स आबद्ध है। वह भीड म एकाकीपन अनुभव करता है और अपने आप को छिपाना चाहता है जैसे –

"मेरा भीड मे सिकुडा हुआ
व्यक्तित्व
+ + +
मेरा अकेलापन
स्वत त्र नही, प्रतिबद्ध है
उनसे
जिनस मैं भीड मे
हमेशा अलग
तटस्थ
और अनमिला रहता हूँ।'[1]

भाषा भावानुकूल है । कवि ने कही कही अग्रेजी शब्दा का भी प्रयोग किया है । परन्तु उसस भावाभिव्यक्ति म किसी प्रकार की कमी नही आयी है।

कान्ह महर्षि

कान्ह महर्षि ने राष्ट्रीय, हास्य और प्रेम सम्बन्धी कुछ कविताए लिखी है। कवि की ये कविताए पत्र-पत्रिकाओ म प्रकाशित हुई है तथा एक कविता विजय हमारी है '[2] मे भी प्रकाशित हुई है। कवि जितना राष्ट्रीय कविता मे सफल हुआ है उतना अन्य कविताओ म नही। इसलिए कवि ने इसस सम्बन्धित कविताए लिखी भी कुछ अधिक है । आजादी को बनाय रखन के लिये कवि आत्म बलिदान चाहता है –

'कायम रहती है आजादी
बलिदानों से नये स
वीर विमुख कब हुए

१— राजानन्द भटनागर की एक कविता से

कहा पर हार जीत के भय से
परवानो ने कब सीखा है
घुट-घुट कर मर जाना ।'[1]

एक हास्य रस की कविता मे कवि दाढी का वर्णन करता हुआ लिखता है —

"इस महा समस्या के कारण
नाकों दम नित खटपट है
हम से तो महिलाए अच्छी
जिनका मदान सफाचट है ।"[2]

कवि का यह एक प्रयास मात्र है । कवि ने प्रेम का भी चित्रण किया है —

'मचल जवानी बल खाती है
वहा कहानी बन जाती है ।'[3]

कवि की इन सभी रचनाओं को दखने से एक बात तो स्पष्ट है कि कवि अपने जिले और समय स बहुत पीछे है । कवि आज भी छायावादी युग म बैठा प्रकृति व प्रेम की रगीनी दुनिया मे विचरण कर रहा है ।

बल्लभेश दिवाकर —

कवि और गीतकार बल्लभेश दिवाकर का प्रथम काव्य सग्रह नई वाणी" सन १९५५ मे कलकत्ता से प्रकाशित हुआ । इसमे कवि की कवल सोलह रचनाए है । "नई वाणी' का कवि पूर्ण रूप स चेतनाशील है । कवि ने इसमे भौतिकवादी युग की ओर इशारा किया है । आज नगरो मे मनुष्य से पैसे की कीमत कही अधिक है । इसी बात को कवि कहता है —

पू जी की महता बढी, विषमता छाई
मानव मान के बीच पड गई खाई ।"[4]

दिवाकर का दृष्टिकोण आशावादी है । उन्हे मनुष्य की अच्छाइयो से प्यार है । इस बात को डा० सत्येन्द्र ने भी नई वाणी" के 'दो शब्द' मे लिखा है ।

१— कान्ह महर्षि — बहना मोहित तिलक लगाओ गाओ गीत तराना
२— ,, ,, — "दाढी" कविता स
३— ,, ,, — "प्यार" कविता से
४— बल्लभेश दिवाकर — 'नई वाणी" पृष्ठ ८

कवि आशावादी है और यह उसकी रचनाओ की एक बहुत बड़ी विशेषता है।"[1] कवि के जीवन का यह प्रथम प्रयास है। पर इस आशावादी दृष्टिकोण के कारण आज इतना सफल हो पाया है।

"ओ समाज के कुण्ठित प्राणी" कविता विशेष रूप से भारतीय समाज को लक्ष्य करके लिखी गई है।

'दिवारो म बद नारिया
सिसक-सिसक दम तोड रही है।"[2]

कवि की यह नई वाणी' वास्तव म समाज के लिये एक नई वाणी है। मानव को मानवता का पाठ पढाने का कवि ने बहुत प्रयत्न किया है। आज क समाज की कुरीतिया पर भी कवि ने चोट की है। कवि स्वय कर्मशील है। इस बात को स्पष्ट व सरल शब्दो म व्यक्त करता है —

नाम जग दे या न दे मैं
काम निज करता रहूँगा।'[3]

कवि को नाम की भूख नही है वह तो अपना काम करना चाहता है।

"मैं गीत सुनाता जाऊगा कवि का दूसरा काव्य सग्रह है जिसमें सन १९५५ से लेकर ६३ तक की रचनाए है। इसमे इनकी रचनाए आदर्शवाद व यथार्थवाद के बीच क पथ से गुजरती हुई प्रगतिवादी मैदान मे खडी होकर प्रयोग वाद को सम्बोधित करती है। दिवाकर मूल रूप से गीतकार हैं। इस बात को इन्होने स्वय ने स्वीकारा है —

जिन्दगी पाई है मैंने गीत गाने के लिये
इसलिये बस जी रहा हूँ गीत गाने के लिये।[4]

इस सग्रह मे कुछ तो राष्ट्रीय प्रेम की रचनाए है जैसे मेरा हिन्दुस्तान,' "देश निराला' आदि। अन्य रचनाओ मे जिन्दगी का दर्द मानव की पीडा और समाज के उन बन्धनो को तोडने की दर्द भरी आवाज है जिनमें हमारा सामाजिक जीवन जकडा हुआ है। इन बन्धनो को तोडने का कवि ने प्रयत्न किया है। दिवाकर के अनुसार हृदय का दीपक जलाना चाहिये, मिट्टी के दीपक जलान पर तो आत्म

---

१ बल्लभेश दिवाकर —नई वाणी पृष्ठ ८
२ " " — " " ८६
३ " " — " पृष्ठ ३०
४ " " —मैं गीत सुनाता जाऊगा ' २२

प्रकाश नहीं होगा और इसलिए उससे बहू-बेटियो का अस्मत बिकना नही रुकेगा।

"क्या इसमे बहन बहू बेटी का अस्मत बिकना रुका नही।"[1]

कवि में प्रेम अवश्य है पर दद भरा हुआ है। वह प्रेम भी करना चाहता है पर ठोक बजा कर —

"प्यार मुझ से है तो जलना सीखले
प्यार मुझ से है तो मरना सीखले।"[2]

इस सग्रह की सभी रचनाओ क बारे म यही कहा जा सकता है सारे ससार का दुख दद अपने दामन मे समेट कर इस ससार को अमन, चैन राहत और खुशी के गीत बख्श देना इनका पूरा लक्ष्य है।

रचना शिल्प पुराना है पर रोचक अवश्य है।

'मैं एकाकी नही चलूगा' दिवाकर का तीसरा सग्रह है जो सन् १९६९ म प्रकाशित हुआ। इसमे ६३ से ६६ तक की कविताए है। समझ मे नही आता कि किस कारण से कवि ने यह सग्रह निकाला है क्योंकि इसमे कुल ३१ कविताए और गीत है जिनमें म २३ 'मैं गीत सुनाता जाऊगा' सग्रह में पहले ही प्रकाशित हो चुकी थी।

व्यक्तिवादी दृष्टिकोण स जीवन चलाने पर हम सब कही न कही लोक-तन्त्र की हत्या के कारण न बन जायें इस वेदना स कवि पीडित है। कवि किसी भी प्रकार के वाद से बधा हुआ नही है। इसका प्रमाण है उसकी राष्ट्रीय कविताए विश्वास गीत, मैं' आग बर्फ मे लगी खून से बुझायेंगे' आदि कविताओ मे जहा उसने हमारे राष्ट्रीय सकट के प्रति चुनौती पूरा आस्था प्रकट की है वहा मेरा हिन्दुस्तान,' 'देश निराला 'बोल जय भारती' मे राष्ट्रीय प्रेम भी प्रखर हुआ है। इन कविताओ से स्पष्ट हो जाता है कि कवि भारतीय आत्मा को समझा है —

'हमने मानव की सासो को बख्शा शाश्वत प्यार है
हमे विश्व को कुछ कहने का इसीलिये अधिकार है।"[3]

इनकी कुछ कविताआ मे यौवन का उद्दाम वेग है पर वह ज्वालामुखो

---

१ ,, , —मैं गीत सुनाता जाऊगा पृष्ठ ४७
२ ,, ,, — ,, , पृष्ठ ९
३ ,, ,, —मैं एकाकी नही चलूगा पृष्ठ ४०

की विनाशकारी अग्नि नही है। वह सूय का प्रचण्ड ताप है जो जीवन को उष्णता और प्रकाश प्रदान करता है। कवि बिछुडने का नही मिलाने का काम कर रहा है —

'हर वियोगी को मिलन दे रहा हर प्रयोग को चरण दे रहा।'[1]

इस सग्रह की कुछ कविताए भाव और कला दोनो दृष्टियो से बहुत प्रौढ रूप में प्रस्तुत हुई है।

मोतीचन्द खजाची —

बीकानेर मे छायावादी प्रवृत्ति की कविताए लिखने वाले कवियो म मातीचन्द खजाची भी है। वैसे इन्होने काफी कविताए लिख रखी है पर इन्होने सन् १६५६ के बाद कोई कविता नही लिखी।

कवि ने अधिकतर कविताओ मे मिलन विरह और प्रकृति का वणन किया है। कवि महादेवी के पदचिन्हो पर चल कर प्रेम माग दर्शन और निर्वाण प्राप्ति का साधन मानता है —

चल अकेली दूर तट पर
प्रिय मिलन मत मीति भ्रम कर
स्नेह का दीपक जला ले
राह बीहड तू अकेली
प्रेम मे निर्वाण है री।'[2]

उस पार चल सखे उस पार आदि कविताओं म भी इसी प्रकार से मिलन की बात है। कही इस प्रिय मिलन मे कवि ने आध्यात्मिक मिलन की ओर भी सकेत किया है पर यह सकेत बहुत अस्पष्ट और कम है।

विरह की कविताओ म कवि ने अपने आप को सुमित्रानदन पत की तरह स्त्री क रूप मे प्रस्तुत किया है। जैसे —

'भग्न वीणा के तारो पर सखी
मैं विरह के गीत गाती
+ + +
गायिका मैं हूँ अकेली नीद कैसी।[3]

१—वल्लभेश दिवाकर — मैं एकाकी नही चलू गा' पृष्ठ ६७
२—मोती चन्द खजाची — प्रेम म निर्वाण है री' कविता म
३— " " — मैं विरह का गीत गाती कविता से

कही विरहिन को दीपक सी जलती रहती रूप म चित्रित किया है । मिलन और विरह दोनो प्रकार की कविताओ के आधार पर ऐसा लगता है कि मिलन की अपेक्षा विरह वर्णन म कवि का मन अधिक रमा है ।

कवि की भाषा म कही क्लिष्टता नही है ।

रामदेव आचाय —

रामदेव आचाय का प्रथम काव्य सग्रह अक्षरा का विद्रोह' अगस्त १९-६८ मे प्रकाशित हुआ । इसम इनकी दो तरह की कविताए हैं, लघु कविताए और लम्बी कविताए । इस सग्रह क अतिरिक्त रामदव आचाय की कुछ कविताए 'सवेदन इति' म भी प्रकाशित हुई है (जो इस सग्रह म आ गई है) तथा अय पत्र पत्रिकाओ मे प्रकाशित होती रहती है ।

दोनों प्रकार की कविताओ मे कवि का मुख्य स्वर व्यग्य का है । कवि ने बहुत ही तीखे और गम्भीर व्यग्य प्रस्तुत किये हैं । य व्यग्य आज के मानव आज के समाज आज की व्यवस्था आदि सभी पर है । आज की शासन व्यवस्था पर यह एक करारी चोट है ।

> ओ रे भोंदू जीव !
> यह नही भाग्य का गान
> कि घोडे ढोय बाझ
> औ' गधे चबाये पान ।' [1]

इस प्रकार इनकी मसीहा' कविता आज की दलब दी पर व्यग्य है । 'विद्रूपता, 'तीन समानताए कौवे और आदमी आदि कविताओ म सामाजिक व्यग्य अधिक मुखरित हुआ है । इन कविताओ मे रामदव आचाय का कवि रूप निखरा है । जैसे इनकी 'विद्रूपता कविता मे यह व्यग्य का चित्र भी दृष्टव्य है —

> 'सभी राक्षस
> राम–भक्त हो गय हैं,
> सभी निकम्मे
> व्यस्त हो गये हैं
> कुर्सियो स चिपक गये हैं,

१–रामदेव आचाय —अक्षरा का विद्रोह पृष्ठ ३

सभी विभीषण
नेता बन गये है
सभी तोत और मैना
'राम राम' रट कर
निक्षक हो गये है।'[1]

आज के इस भौतिक युग म मनुष्य का अवमूल्यन हो रहा है और वह वस्तुस्तर पर आ रहा है इससे कवि को असन्तोष है वह तो पुन आदमी की तलाश म है, और सामा य वस्तु से अपना पथक अस्तित्व सिद्ध करना चाहता है —

मैं कोई वाहन तो नही हूँ
कि जब चाहो तब सवारी करलो
मैं कोई चादर तो नही हू
कि जब चाहो तब बिछा लो
जब चाहो तब ओढ लो

\+ \+ \+

मैं कुछ और हूँ
मैं आदमी हूँ।[2]

कवि की कुछ कविताओ मे सरलता की अधिकता है और गम्भीरता की कमी है। कवि की कुछ कविताओ मे रोमाटिक स्वर है। कुछ कविताओ मे कहीं कही भावो की पुनरावृति भी हो गई है जसे इनकी 'आओ मेरे साथ आओ' कविता है। कवि ने बहुत सी कविताओ में कथोपकथन शैली को अपनाया है। कवि की भाषा न उसके भावो का साथ दिया है। भाषा पर कवि का पूरा अधिकार दष्टिगोचर होता है।

भवानीशकर व्यास 'विनोद'

बीकानेर की नई पीढी के कवियो मे भवानी शकर व्यास 'विनोद' हास्य रस के प्रसिद्ध कवि हैं। इनका काव्य सग्रह 'मुझे हसी आती है' में सन

१—रामदेव आचाय —अक्षरा का विद्रोह पृष्ठ १२
२—" " — " " ६

१६६६ तक की कविताए है। इस सग्रह मे दो प्रकार की कविताए है—हास्य रस युक्त और राष्ट्रीय भावना युक्त। हास्य म कही पर भी भद्दापन नही आया है। इनकी हास्य की कविताए अनेक विषयो पर है। आपकी लोकप्रिय रचनाए —रोबीला चश्मा, इसलिए तोन्द को नमस्कार मैं गजा का लोहा मानू, चोटी दाढी, मू छे आदि है। चश्मे के अभाव मे किसी चश्मे बाज पर क्या गुजरती है —

> 'माता सीता को ये सज्जन मालासिन्हा पढ जाए ॥
> ये पढते भरत को भात और हल्का को पढ जाए हल्वा।
> + + +
> आ रहा सामने बैल उसी से मिलने भी जा सकते हैं ॥
> हो भरत मिलाप जहां ऐसा फुटबाल आप बन जाएगे।'[1]

इसी प्रकार तोंद का वर्णन भी हुआ है —

> 'इनका है मोटा पेट सब जगह इनको मिलती है।
> लेकिन ढाबो मे मुश्किल से ही इन्हे इजाजत मिलती है।'[2]
> + + +
> सोए रहते हैं आप नाक से बाजा बजता जाता है।'[3]

व्यास की कविता मे श्रोता एव पाठक को हसा कर लोट पोट कर देने की शक्ति है।

इस सग्रह में व्यास की हास्येतर कविताओ मे राष्ट्र प्रेम की झलक, शोषण, उत्पीडन और सामाजिक कुत्साओं के विरुद्ध प्रबल विद्रोह है। शोषको का ताडव नृत्य, भ्रष्टाचारी और उसके द्वारा जकडे समाज का करुणाजनक चित्रण को अवश्य किया है पर कवि उसकी विभीषिका को देखकर मौन अवश्य हो जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि कवि का मन जितना हास्य रस की कविता मे रमा है उतना अन्य कविताओ म नही।

१—भवानीशकर व्यास 'विनोद' —मुझे हसी आती है पृष्ठ ६-७
२—" " " — " " १
३— " " — " " १

भवानीशंकर व्यास का दूसरा काव्य संग्रह हास्यमेव जयते' है। इस संग्रह म कुल बाइस कविताए है जिनम से नौ कविताए तो वही है जो 'मुझ रहो आती है' म है बाकी सभी नवीन कविताए भी हास्य रस की ही हैं परन्तु पहले की हास्य रस की कविता और इन कविताओ मे एक विशेष अन्तर है। वह यह कि प्रथम संग्रह की हास्य रस की कविताओ म व्यग्य नही है और इन कविताओ मे हास्य व्यग्य से लिपटा हुआ। कही कही पर तो व्यग्य बहुत ही प्रधान हो गया है। कवि की इन कविताओ म व्यग्य एक विशेष ढग से प्रस्तुत हुआ है। कविता का प्रारम्भ साधारण हास्य से है। खटमल का वर्णन करते हुए कवि कहता है —

साडी ब्लाउज, बुशट प ट सब जगह आप घुसपैठ करें।
भूमि सारी गोपाल की है बखटके आप चरें विचरें॥'[1]

परन्तु यह शुद्ध हास्य खिसक कर सामाजिक व्यग्य म परिणत हो जाता है और सामाजिक खटमलो की बात करने लगता है —

'रातो के खटमल से ज्यादा दिन के खटमल है खतरनाक॥
बहियो क खटमल अमर बेन ज्यो खुद ही पनप रहत हैं।'[2]

आज भारतवष म जनसख्या की समस्या बहुत प्रबल होती जा रही है। और हर स्थान पर परिवार नियोजन के पखवाडे मनाये जाते है। हर कोई परिवार नियोजन की बात करता है। बेटी चाहे लूप लगाले पर मा ऐसा नहीं करती —

बेटियाँ लूप लगवाती है माताए जनती रहती हैं'[3]
\+ \+ \+
छ छ बच्चो के बाप लाभ बतलाते लघु परिवारो का।'[4]

इसी प्रकार कवि ने रिश्वत खोरा नेताओ बनियो और चन्दा लेने वालो पर व्यग्य किया है।

य वसूल करके खा जाते हैं गौशाला के भी चन्दे॥
गाया का लेकर नाम आप चदा बटोरते फिरते हैं।

१—भवानी शकर व्यास	—हास्यमेव जयते	पृष्ठ १
२— ,, ,,		, ३
३— , ,		१३
४—		, १४

गायें चरती है घास और गो सेवक चरा चरते हैं" ॥[1]

परन्तु ये सभी व्यग्य हास्य में निलिप्त हैं। कवि हसता भी है और तीखी मार भी करता जाता है। इस प्रकार की कविताओ के अतिरिक्त सग्रह म कुछ शुद्ध हास्य की कविताए हैं जिनमे किसी भी प्रकार का व्यग्य नही है। व्यग्य और हास्य के लिए कवि ने प्रत्यक भाषा के शब्दा का अपना लिया है। ऐसा करन से कवि की कविता प्रभावशाली बन गई है।

बीकानेर म हास्य रस की बहुत कम कविताए लिखी गई है। व्यास से पहले चद्रदेव शर्मा ने अवश्य ही हास्य रस की कविताए लिखी थी उसी काय को इन्होने आगे बढाया है। कवल बीकानेर ही नहीं यदि हम हिन्दी साहित्य के इतिहास पर भी एक दृष्टि डालें ता हम पता चलेगा कि हिन्दी म हास्य रस का अभाव सा है। वीरगाथा काल के कवियो का ध्यान अपने आश्रय दाताओ की प्रशसा तक ही सीमित था। भक्तिकाल के कवियो का ध्यान अपने इष्ट देवता के सामने दोष गिनाने मे या भगवान की लीलाओ म ही व्यतीत हुआ। रीतिकाल के कवियो की लेखनी नायिका के नख शिख से आगे न जा सकी। आधुनिक काल म अवश्य ही हास्य की कुछ कविताए लिखी गई हैं इस दृष्टि मे भवानीशकर व्यास का यह योगदान हिन्दी काव्य के लिए महत्वपूर्ण है।

डॉ० मदन केवलिया—

बीकानेर की नयी पीढी के कवियो म डा० मदन केवलिया का भी स्थान है। आप कहानिया और कविताए दोनो ही लिखते हैं। इनकी कविताए प्राय पत्रिकाओ मे प्रकाशित होती रहती है। इनकी कविताए अधिक लम्बी नहीं है छोटी कविता मे भी ये बहुत कुछ कह जाते हैं। इनकी बहुत सी कविताओ में मार्मिक व्यग्य छिपा रहता है। लेकिन वह व्यग्य कभी हास्य मे लिपट कर और कभी रोमास मे लिपट कर पाठको के सामने आता है। इनका व्यग्य समाज है। एक अस्पताल पर कविता है —

"खून रहित चेहरा की सफेदी
चादरा पर फैल जाती है
मौत के मडराते साया को देख कर
और इधर – कहकहे उठते हैं
ड्यूटी रूम मे इन्कार के

१— भवानीशकर व्यास हास्यमेव जयते पृ० ७०

और फिर इकरार के।"[1]

आज की भौतिक सभ्यता ने भारत को फैशन के नाम पर नग्नता (?) या अर्द्ध नग्नता दी है। कवि की दृष्टि उस पर पहुँचती है और आज की नव युवती पर जो व्यंग्य कवि करता है वह कहने की शैली में अधिक प्रखर और मुखर हो गया है।

'लाज
लड़कियों के कपड़ों में नहीं
पुरुष की आंखों में घर बना रही है।"[2]

इसी प्रकार से आज की तथाकथित प्रेमिका पर व्यंग्य है —

पर शायद तुमने मुझे परख लिया था
महंगाई के साथ घटने वाली मेरी पूंजी
को निरख लिया था।[3]

इनके व्यंग्य बहुत ही स्पष्ट और सरल भाषा में व्यक्त हुए हैं। इनके अतिरिक्त इन्होंने भारत पाक आक्रमण के समय में कुछ राष्ट्रीय कविताएं भी लिखी हैं।

आज की कविताओं में प्रत्येक सामाजिक असामाजिक बात का वर्णन निःसंकोच और बड़े ही चाव के साथ किया जा रहा है। डॉ० मदन केवलिया ने सुहागरात की तूफान से उपमा देकर कहा है कि सुहागरात भी तूफान की तरह गुजर जाती है। जैसे —

'ज्यादा तर तूफान
जल्दी गुजर जाते हैं
और रह जाते हैं
खिंचे नुचे से
शामियाने और कनातें — तूफान की बातें।'[4]

ऐसी कविताओं में भी डा० गणपति चन्द्र गुप्त हिंदी के बड़े अभाव की पूर्ति को

१— डा० मदन केवलिया की अस्पताल कविता से।
२— ,, एक कविता से।
३— , ,
४— मधुमती – फरवरी १९६६ पृ० ५०

दखत हैं।[1]

कवि अनुभव करता है कि आज का युग अधिकतर औपचारिकता का युग है। हम आज प्रत्येक बात मे औपचारिकता निभानी पडती है। इसमे हम सदव वास्तविकता स दूर रहते हैं। इसको कवि ने अपने 'सम्बन्ध कविता म बहुत अच्छे ढग से व्यक्त किया है। जिसे कवि पत्नी तक के सम्बन्ध म पाता है —

"पत्नी अपना फिल्मी सम्ब ध बढाती है।"[2]

यह औपचारिकता कवि के शब्दो म चमक है जिसकी उपस्थिति से कवि घुटन अनुभव करता है —

लगता है मेरे दास्त
कि हर चमकने वाली चीज
साना नही हाती।'[3]

आज इस भौतिक युग म मनुष्य की काई कीमत नही है उसकी तुलना में मशीने अधिक मूल्यवान है। इस बात को भी कवि ने अपनी कविता मे कितने सुन्दर ढग से कहा है —

'देहली
जहा जिंदगी महगी नही
चीजें महगो है।'

सक्षेप मे यह है कि कवि अपनी बात को बहुत ही सरल और स्पष्ट शब्दो म कह जाता है। भाषा की ओर उसने अधिक ध्यान नही दिया है। उदू और अंग्रेजी शब्दो का उनकी कविताओ म काफी प्रयोग हुआ है। कवि ने अपनी सभी कविताओ के लिए नवीन विषयों को चुना है और समय के साथ चलने का प्रयास किया है।

हरीश भादानी—

बीकानेर क काव्य जगत म हरीश भादानी का विशेष स्थान है। आज की कविता और गीतो मे इनका अच्छा योगदान है। पर कवि आज हमारे सामने जिस रूप में है, उस रूप मे प्रारम्भ मे नही था। उसका स्वाभाविक ढग से विकास

१— गणपति च द्र गुप्त —साहित्यिक निबन्ध पृ० ३१२
२— डा० मदन केवलिया की एक कविता से।
३— ,, , ,, ।

हुआ है। इस क्रमिक विकास द्वारा कवि आज की इस स्थिति पर पहुचा है। यह बात भी ठीक है कोई भी व्यक्ति अचानक किसी मजिल पर नहीं पहुचता उसके लिए उसे कई रास्ते पार करने पडते हैं।

अधूरे गीत कवि का प्रथम काव्य सग्रह है। प्रारम्भ मे जिस प्रकार किसी कवि मे हल्की फुल्की भावुकता होती है वह इनके इस सग्रह मे स्पष्ट रूप से झलकती है। इस सग्रह की अनेक कविताए रोमासयुक्त है। इनके अतिरिक्त "मेरा देश" 'एशिया करवट बदल' आदि राष्ट्रीय कविताए भी है। कवि को अपने चारो ओर सामाजिक असमानताए दृष्टिगोचर होती है उनका वर्णन कवि ने अपनी कविता मे किया है। शोषितो की कारुणिक स्थिति का चित्रण तथा शोषक समाज पर व्यग्य आदि कवि के काव्य मे उभरे हैं। 'कफन की दुकान' 'लिफ्टीनेट चाहिए' आदि इसी प्रकार की कविताए हैं। तहजीब सीखना' कवि की श्रेष्ठ व्यग्यात्मक कविता है जिसमे कवि पर भी व्यग्य मिलता है।

> बढती है भुखमरी गरीबी और पाखण्ड
> पाप, अन्याय अगर बढ तो बढने दो।
> पर तेरा क्या उनसे नाता जो मर
> कर भी जीते हैं कई ठोकरें खाकर।
> तुम तो नेत्र मूद कर लिखो प्रीति
> के गीत कल्पना के सागर मे जाकर"[1]

व्यक्तिगत अभावो और पीडा का चित्रण भी कवि ने इस सग्रह मे किया है। यह बात कवि ने स्वय स्वीकार की है। "अधूरे गीत' मे सामाजिक असमानताओ मे उत्पन्न आवेश व्यक्तिगत पीडा और अभाव अधिक उतावले होकर चले हैं।[2] इस सग्रह के उत्तरार्द्ध मे कवि ने अपने प्यार का राग अलापा है।

निष्कर्ष रूप मे यही कहा जा सकता है कि यह कवि का हल्का सग्रह है। छायावादी प्रवृत्ति की झलक इन कविताओ मे स्पष्ट रूप से मिलती है। छायावादी विषय और उसकी ही कल्पना शैली का आश्रय लिया गया है। पर प्रथम काव्य सग्रह होने के कारण कवि को इसमे सफलता कही जा सकती है।

हरीश भादानी का दूसरा काव्य सग्रह सपन की गली" है। इसम

१— हरीश भादानी	अधूरे गीत	पृ० १६
२— ,,	सपन की गली	,, ७

हरीश भादानी नये कवि के रूप म सामने ग्राते हैं। इसम कुछ नयी कविताए है। इस सग्रह म कुछ गीत ग्रौर कुछ मुक्तक भी हैं। इस सग्रह म कवि 'अधूर गीत की रचनाग्रों से कही अधिक दूर दृष्टिगोचर नही होता। कविता का शिल्प ता यत्र ग्रवश्य बदला हुग्रा है। पर कवि न ग्रपनी रोमा स प्रवति को गीतो और मुक्तकों के माध्यम से व्यक्त किया है। इसम कवि की सन १९६१ तक की कविताए है। इस सग्रह की कविताग्रा को देख कर ऐसा लगता है कि इस समय भी कवि पर प्रगतिवादा साहित्य की भावना हावी थी। यहा नवलखन की मात्र सम्भावन दृष्टिगोचर होती है। अभिव्यक्ति अनेक स्थला पर दुबल ग्रौर सपाट है। पर तु कुछ कविताए ऐसी है जिनम नवीनता के साथ ग्रनुभूतिया की प्रखरता भी है। जैस मेरी कवित' ग्रधेरा ओर किरण' ग्रविश्वास की घूंघट' घृणा की घास।

हसिनी याद की हरीश भादानी का तीसरा सग्रह है जिसम ग्रादि स ग्रत तक मुक्तक ही है। इसम कवि क सन १९६२ तक के मुक्तक है। 'हसनी याद का म तीन तरह क मुक्तक है। कुछ ता राष्ट्राय मुक्तक है। कुछ रोमांटिक मुक्तक हैं ग्रौर कुछ ग्रात्मपरक मुक्तक हैं। राष्टीय मुक्तक भी दा तरह क है। एक तो वे जिनम ग्रपन दश का गौरव बताया गया है ग्रौर दूसरे वे जिनम अपन दश क गौरव की प्रतिष्ठा की गई है तथा साथ म दुश्मना का ललकारा गया है। जसे —

> दुश्मनो म कहो हिमालय मे कवल बरफ ही नही है
> दुश्मनो से कहो दिल्ली मे दोस्ती क हरफ ही नही है
> चानिया ! जग ग्राजादी की पाथी पढकर उतरना
> हमारे लिये जिन्दगी मौत म कोई फक नी न ी है।"[1]

पर इसम भी प्रधानता रोमा स युक्त मुक्तका की है। जिनम सयाग ग्रौर वियोग दोना ही स्थितिया का चित्रण है। ग्रात्मपरक मुक्तको म जिनम स्वानुभूत प्रेम और दद की ग्रभिव्यक्ति हुई है।

> 'प्यार ग्रपना न मुझे हो ता मेरा दद ही द दो मुझका,
> ग्रब जो किसी गैर की भूली सो अमानत ही सही।"[2]

---

१ हरीश भादानी हसिनी याद की पृष्ठ ६६
२ ,, ,, ,, ,, ३०

इनके अतिरिक्त कुछ अन्य मुक्तक ऐसे भी है जो हृदय पर अधिक प्रभाव छाप हैं, पर कुछ का प्रभाव क्षणिक होता है ।

'सुलगते पिण्ड" हरीश भादानी का चतुथ काव्य सग्रह है जिसमें सन १९६१ स लकर सन ६६ तक की रचनाए है । इसमे कवि का परिवर्तित रूप स्पष्ट रूप स सामने आता है । गीतकार रूप हरीश का यहा भी चुप नहीं है। कवि ने कुठा के प्रति बगावत की है तथा दीमक लगी आस्थाओ को झाड कर फेंकने का सकल्प किया है । ऐसा लगता है कि कवि हरीश भावो की भाड म खो गया है । इस सग्रह का मुख्य विषय भूख रहा है । उसने एक के बाद अनेक कविताए इसी विषय वस्तु को लेकर लिखी है । सुलगते पिण्ड की ये कविताए 'एक जो चादर हमे दे दी गई है' नींद आ जाती बुरा होता आज तक जितना जिया है कुछ विश्वकर्माओ ने दी ओ हमसे ही गभस्थ पिण्डो, ओ आदमी की सज्ञा स आदि कविताए विशेष रूप से पठनीय है । इनमे अनुभूति की गहराई के साथ-साथ अभिव्यक्ति की सहजता भी है । इस सग्र म कवि ने नयी कविता की टेकनीक को समझा है इसलिए उसकी शिल्प मे भी नवीनता है । शिल्प की दृष्टि स नवीन प्रयोग उनके उपमानो और लाक्षणिक प्रयोगो म देखे जा सकते हैं —

> मेरी यात्राओ का साक्षी
> यह सजयी सूरज । 1
>
> × × ×
>
> कुआरे बाप सा भीरू अधेर' 2
>
> × × ×
>
> बूढे सूरज की सहचरी
> नवली सध्या ने जाये
> कुछ अवैध सपने । '3

सुलगते पिण्ड" की रचनाए अवश्य कुछ बदली हुई है । कवि विषय शिल्प, भाषा व शैली की दृष्टि से प्राचीन को पीछे छोड आया है पर फिर भी उनके अतीत के सस्कार यहा वहा उनकी कविताओ मे बिखरे पडे हैं । कवि के

---

१ हरीश भादानी —एक उजली नजर की सुई पृष्ठ ११
२ " — " " " " १३
३ " " — " " " ४३

स्वर मे अनक स्थलो पर प्रखरता आई है और कही वह साधारण रूप म मिलता है। कवि के पास अनेक स्थलो पर कविता की रेशमी सवेदना होते हुए भी कथ्य का अभाव है। कुछ कविताए अस्पष्ट है और कथ्य को पकडन के लिए पाठक को प्रयास करना पडता है।

"सुलगते पिण्ड" और "एक उजली नजर की सुई" दोनो ही मई सन् १९६६ मे प्रकाशित हुए हैं। दोनों एक ही समय प्रकाशित सग्रह हैं। "एक उजली नजर की सुई' म कुछ तो सन १९६० से पहले के गीत है और बाकी सन ६२ से बाद की कविताए और गीत है। ६० स पहले की रचनाओ के बारे म कवि ने 'एक उजली नजर की सुई" म अपनी ओर से लिखा है "६० से पहले की रचनाए वैयक्तिक पीडाओ की अभिव्यक्ति हैं।——सपने मे बने एक चेहरे की प्रतीक्षा है, प्रतीक्षा की निरन्तरता मे उपजी वदना है। यहा पर भी कवि मुख्य रूप स गीतकार के रूप म ही आया है। उनम बहुत से नवीन उपमानो को ग्रहण किया गया है पर सग्रह म उनके रूपक वास्तव मे ही कुछ बडे है। इस सग्रह मे कवि की अनुभूति की गहराई का आभास होता है। कही पर भी कवि की असमथता दृष्टिगोचर नही होती। 'अधूरे गीत' का कवि यहा तक पहुचते पहुचते बहुत परिपक्व हो गया है।

कविताओ के साथ-साथ गीतो म भी परिवतन हो गया है। इस सग्रह म उनके कुछ नगर बोध से सम्बन्धित गीत है। प्रारम्भ मे जो एक रोमास इनके गीतो में रहता था वह प्राय यहा आते आते पूण रूप स समाप्त सा हो गया है। इनकी कविता और गीत दोनो मे ही साधारण जीवन का चित्रण हुआ है। इसके अतिरिक्त आज मानव मे जो एकाकीपन की भावना प्रबल होती जा रही है उसको भी कवि ने कविता और गीतो मे अभिव्यक्त किया है। मैंने नही', 'क्षण क्षण की छैनी स काटो तो जानू" आदि हरीश भादानी के बहुत ही प्रसिद्ध गीत है।

वास्तव में बीकानेर की काव्य चेतना मे हरीश भादानी का बहुत योग दान रहा है। इन्होने 'वातायन" पत्रिका प्रारम्भ करके तो इस काय को और अधिक आगे बढाया है जिससे बीकानेर के कवियो का भी एक सहारा मिलता रहा है।

गगाराम "पथिक"

गगाराम पथिक" की कविताओ के आधार पर यह कहा जा सकता

है कि कवि का मुख्य स्वर प्रगतिवादी है। पर कवि ने कुछ व्यग्यात्मक कविताए भी लिखी है आज के नेताओ पर कवि ने बहुत ही करारे व्यग्य किये हैं।

प्रजातन्त्र म सबसे अधिक मूल्य वोट का है। मत का महत्त्व है बुद्धि या विचारो का नही। अत प्रत्येक नेता किसी न किसी प्रकार से अधिक स अधिक मत प्राप्त करना चाहता है जिसस वह किसी ऊचे पद पर पहुच सके। इसलिए आज के नेता अपनी जनता को झूठे आश्वासन देकर मत प्राप्त करते हैं। व देश क अच्छे कार्यो के साथ अपना सम्बन्ध स्थापित करते हैं जस —

हमने ही तो इस दिल्ली को
राम राज्य का केन्द्र बनाया।
लोक राज क लाल किले पर
सत्ता का सतरज बिछाया। [1]

ये नेता लोग वोट के लिये जनता का पहले म ही अपनी लम्बी लम्बी योजनाए बता देते हैं। कवि न अपनी कविता 'हम दिल्ली स बोल रहे हैं' म आज क नेताओ पर करारी चोट की है कि किस प्रकार स लोग झूठ बोल कर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहते हैं। अब तक भी भारतवर्ष की बहुत सी जनता अनपढ है इसलिये हमारे नेता इस अनपढ जनता स लाभ उठाते हैं और इनसे अपना स्वार्थ सिद्ध करते रहते हैं। इस बात को कवि ने कहा है —

चौकस रह कर चोर बजारी करते रहते
भोली जनता को भरमाते
भ्रष्टाचार भगाओ क नारे लगवाते
अनपढ की आखो पर पट्टी बाध। [2]

पर कवि समाज क लूटने वालो को यह बताना चाहता है कि अब तुम्हारी दाल नही गलेगी और साथ मे ही कवि उनको उनका कार्य भी बतलाता है —

मच सजा कर सभा सजा कर
चरखा कातो या
गाधी जी की जय बोलो। [3]

१— सेनानी —२६ दिसम्बर, १९५० पृ० ७
२— „ —२५ फरवरी १९५१ „ ५
३— „ „ ५

कवि का मुख्य स्वर प्रगतिवादी है। किसी की कब्र पर महल बना कर आनन्द के साथ रहना कभी भी मानवीय कार्य नही कहला सकता है। पर आज के युग में यह भी होने लगा है। जैसे —

'घी के दीप जले जीवन के दीप बुझा कर
अट्टहास कर रहे महल झोपडी जला कर
तब भूखे नग चिल्लायेंगे सडकों पर।[1]'

पथिक ने अपनी कविताओं मे शोषितो की दीन दशा का वर्णन किया है। साथ म यह भी बताया है कि यह आजादी तब तक भारत मे व्यर्थ है जब तक यहा से गरीबी दूर नही की जाती। क्योकि मनुष्य प्रत्येक काम से पहले अपने पेट की भूख को शात करना चाहता है। जैसे —

'आग लगाओ कागज की आजादी में
भूखा है इसान कि रोटी सपना है।'[2]

कवि ने अपनी कविता म आज के मानव का महत्त्व बताया है कि मनुष्य की कीमत आज पैसे से भी कम है। चारो ओर फले हुए अत्याचार तो और भी अधिक खराब हैं जैसे —

'रोटी महगी इसान बहुत ही सस्त हैं।[3]

पथिक" की बहुत ही कम कविताए प्राप्त हो सकी है। कवि समकालीन बौद्धिकी काव्य प्रवत्तियो के अनुकूल स्वय को ढालता रहा है। कवि ने जो कुछ भी कहा है उसे बहुत ही सरल शब्दो म कह दिया है। भाषा और भाव दोनो म ही किसी प्रकार की क्लिष्टता नही है।

मगल सक्सेना —

मगल सक्सेना का प्रथम काव्य सग्रह मैं तुम्हारा स्वर' सन १९६५ म प्रकाशित हुआ। इस सग्रह म गीत और कविताए है। जहा तक सग्रह के गीतो का प्रश्न है उनम कवि के राष्टीय, लौकिक प्रेम और प्रकृति सम्बन्धी गीत हैं। यद्यपि कवि ने राष्ट्रीय गीत कम लिखे हैं पर जो लिखे हैं उनमे पूर्ण राष्ट्रीय गौरव झलकता है।

१— लोकमत — ३० अक्तूबर, १९५१ — पृ० ३
२— गगाराम पथिक — 'कागज की आजादी' कविता से
३— " — नीरो के वशज' कविता से

हमारी दर म वीरागनाग्रा का नहू बहता
मरा जा भाग न गेली नही का दूध यह कहता
करोडा न अमर जनत म का युद्ध हो नही सकता
हमारा नारी न का दुश्मन घग म गा नहीं सकता । [1]

कवि न लौकिक प्रेम और प्रकृति सम्बन्धी गीत भी सुन्दर बन पडे हैं ।

जहा तक कवि की कविताओ का प्रश्न है, उनक विषय तो उसी प्रकार क हैं जिस प्रकार क इनक गीता म है । पर गीता मे बौद्धिकता का प्रभाव होता है या गीता म स्पष्ट भी कम हल्का सा होता है । वह बात इनकी कविता म निश्चय रूप म नही मिलती । सग्रह की प्रथम कविता युद्ध का आतक' विशेष रूप स पठनीय है । इसम कवि यह बताना चाहता है कि युद्ध म जितना अधिक आतक होता है उतनी बडी हानि भी । कवि की राष्ट्रीय कविताग्रा को छोडकर अधिकतर कविताग्रा म वन्य प्रेम स घिरा हुआ है । पर इसका चित्रण जितना इनक गीता म हुआ है उतना कविताग्रा म नही हुग्रा है । इनकी कविताग्रो क विषय आधुनिक है । सग्रह की अन्तिम कविता राष्ट्रीय है जिनमें कवि ने अपने देश का गौरव गान गाया है । और इस रूपक द्वारा प्रकट किया है —

> य भारत ऐसा देश
> युद्ध क सैनिक जसा देश
> कठ पजाब नाक काश्मीर
> वाजु हम्मार
> पहाडा का सीना रणधीर
> हिमालय तो भारत का नख । [2]

कवि ने कुछ व्यग्यात्मक कविताए भी लिखी है । इनमे 'जनता होटल' 'मास्टर जी' इसी प्रकार की कविताए है ।

कविताग्रा के विषय आधुनिक है पर कविताग्रा मे किसी प्रकार की गम्भीरता और प्रभाव नही है । कविताका मे भावा का एक हल्का सत ही स्पष्ट है । शैली परम्परागत है और नवीन उपमानो को ग्रहण किया गया है । कवि के गीतो पर उर्दू का प्रभाव स्पष्ट नजर आता है ।

१— मगन सक्सेना —मैं तुम्हारा स्वर पृ० २४ (चतुर्थ खड)
२— , ५

'चाद सितारा की बस्ती म यू ही रात गुजर जाती है
कोई याद नही ग्राता है या फिर याद बहुत आती है ।"[1]

कवि की भाषा भी सरल है और उसम उदू के शब्दा का प्रयोग भी काफी माना म हुआ है। क्लिष्टता नाम की बात इनकी कविताग्रा एव गीतो म कही भी नही है ।

मुक्तक शोषक स लिखी गइ कविताए इस सग्रह म बहुत ही कम है । मुक्तको म नीति की बातें भी हैं। इनम ससार क नित्य प्रति के सत्यो को बहुत ही सहज ढग दिया गया है —

'रुलाने को सभी जाते हैं हसता कौन चलता है
जलाकर ही सभी जान, जनन को कौन हरता है
बहुत ग्रच्छा हा इसम तो कि ग्रपना न बने कोई
बिछुडा को सभी मिलते बिछुड कर कौन मिलता है ।"[2]

कवि ने ग्रपने भावो को बहुत ही सरल भाषा म और सीधे ढग से व्यक्त किय हैं।

माणकचन्द रामपुरिया

ग्राज यदि इस राकेट के युग मे कोई बैलगाडी की बात करे तो उससे अधिक हसी की बात ग्रौर क्या हो सकती है । समय और वातावरण के अनुसार जो मनुष्य ग्रपने ग्राप को नही टाल सकता वह कभी भी उन्नति नही कर सकता। माणक चन्द रामपुरिया की कविताग्रा क साथ भी कुछ ऐसी ही बातें हैं। कवि समय से बहुत पीछे है । पर कवि न लिखा बहुत कुछ है । कवि का प्रथम काव्य सग्रह "मधुज्वाल" सन १९५९ म प्रकाशित हुआ । उसके बाद निरन्तर स्वरालोक' आभास कल्लोल' सवेग' ग्रौर सदीप्ति प्रकाशित हुए । काव्य स ग्रहो की स ख्या की दृष्टि से बीकानेर क काव्य म इनका दूसरा स्थान हो सकता है ।

ग्राज इस भौतिकवादो युग मे मानव एक तरफ ग्रपने लिए स्वग क साधना का निमाण कर रहा है और दूसरी ओर ग्रपने विनाश का। इस बात को कवि ने समझा है । "मधुज्वाल की कुछ एक कविताए इसी स्थिति को लकर

१— मगन सक्सना —मैं तुम्हारा स्वर पृ० २२ (ततीय खड)
२— , , " ३२ ( )

लिखी है। जैसे 'विश्वप्रेम' 'पैरीखाना' आदि।

'ठग रहे इस भूमि का मन
यह मनुजता रो रही है
नाश का विष बीज बोकर
शक्ति भू पर आ रही है।[1]

इस संग्रह में कुछ एक कविताएं उपदेशात्मक और प्रकृति चित्रण की है जैसे 'सत्य' 'प्यार' साजना की जो जगाओ आदि।

'स्वरालोक' में छायावाद की सर्वात्मवादी दृष्टि के अनुरूप कवि ने प्रिय का साक्षात्कार व्यापक प्राकृतिक व्यापारों में भी किया है —

जागी उषा किरणा ने छेड़ा मधुबन के संसार को
बजा गया कोई अनजान प्राण प्राण के तार को।[2]

कवि का प्रकृति मोह बहुत अधिक है। इसलिए इस संग्रह की बहुत सी कविताओं में प्रकृति पृष्ठभूमि उद्दीपन और उपमान आदि विविध रूपों में उपस्थित है। प्रकृति नाना रूपों में भाव सहचरण करती है। कहीं असफल प्रेम की पीड़ा स्मृति दश टूटे सपन एवं निष्ठुर प्यार की गाथा है। कवि याद में तड़फता है —

मन को और अभी रोने दो
घाव जरा गहरा होने दो।[3]

कुछ कविताएं मनुहार, उपालम्भ और अनुराग सम्बन्धी हैं। इनमें कहीं पर भी उलझाव आदि नहीं है पर कुछ कविताएं समय से बहुत पीछे हैं। छन्द-व घन में कवि ने परम्परा का मोह नहीं छोड़ा है। कवि ने भाषा का व्यवहार सिद्ध रूप ही ग्रहण किया है जिसमें उर्दू के प्रचलित शब्द भी आ गये हैं।

आज मनुष्य को चारों ओर से संघर्ष करना पड़ रहा है। ऐसा लगता है कि जीने के लिए मानो संघर्ष आवश्यक है। आज एक तरफ मस्तिष्क पुकार रहा है और दूसरी ओर हृदय की आवाज गूंज रही है। प्रेम श्रद्धा आदि मनुष्य को ऊपर उठाना चाहते हैं पर मनुष्य केवल मस्तिष्क की ही बात सुनता है। मस्तिष्क और हृदय की दौड़ में हृदय पीछे रह गया है। इन्हीं बातों को कवि ने

१— माणकचन्द रामपुरिया	स्वरालोक	पृ० ३१
२—	स्वरालोक	२२
३— माणकचन्द रामपुरिया	मधुज्वाल	पृ० ४१

अपने सग्रह 'आभास' मे प्रस्तुत किया है। आभास मे कवि की एक लम्बी कविता है। आज मानव ने प्रकृति पर पूर्ण विजय प्राप्त करली है।

> "खडी प्रकृति मानव के सम्मुख
> खोले भेद भरा नित अन्तर।"[1]

कवि को मानव की बुद्धि से भय है —

> "सदा बुद्धि के इगित पर नर
> चलने वाला गिरा, सम्भालो।"[2]

कवि का इस कविता मे मस्तिष्क पर हृदय की जीत कराने का उद्देश्य स्पष्ट झलक रहा है। इस सग्रह म कवि ने बहुत ही सरल भाषा म भावो को प्रकट किया है।

'कल्लोल' म कवि ने फिर पहले जैसे ही विषयो पर कविता लिखी है। शायद पहले कवि को पूर्ण सन्तोष नहीं हुआ होगा। पर कुछ भी हो कवि प्राचीनता का मोह नही छोड सका है। प्रभात को नये रूप मे प्रस्तुत करता है। सूर्योदय से सबको प्रसन्नता होती है पर कवि कहता है —

> "यह ऊषा मुस्कान आई बन दृगो म रात काली –
> जब चले प्रिय दूर आती
> प्रात कितना क्रूर आती।"[3]

इस सग्रह म एक कविता तुलसीदास के जीवन पर है। कवि ने इस सग्रह म प्रेम प्रकृति आदि कुछ बातो का वर्णन कर अपने सग्रह को पूर्ण किया है।

आज इस भौतिकवादी युग मे ईश्वर पर बहुत कम विश्वास किया जाता है पर कवि इस बात को स्वीकार नही करता है। उसके अनुसार मानव आज किसी न किसी रूप मे उस एक शक्ति से अपने आप को निबद्ध मानता है। इन भावो को व्यक्त करने वाली कविताए कवि ने 'सवग' मे एकत्र की है। प्रकृति प्रेम तो यहा भी साथ मे बना हुआ है।

कवि ने अपने शब्दो मे उनका सदीप्ति एकान्त क्षणो म गुजित आत्म

१— माणकचन्द रामपुरिया	आभास	३८
२— „ ,	„	„ ४३
३— , ,	कल्लोल	पृ० १०

निष्ट भावनाओं का सग्रह है ।'[1] कवि ने इसमें झरनो का गान, सध्या की सलोनी छटा तारो का टिमटिमाना आदि का वर्णन किया है । जिस प्रकार से प्रकृति के व्यापार चलते हैं उसी प्रकार के भाव मानव हृदय में पैदा हो जाते हैं । इन्ही भावों का वर्णन कवि ने इस सग्रह में किया है । कवि इस ससार की क्षण भगुरता के बारे में वर्णन करता है ।

> "कुछ भी नित्य नही है जग में—
> सदा काल की ही बस जय है ।
> अन्त सभी कुछ का निश्चय है ।। [2]

निष्कर्ष रूप मे यह कहा जा सकता है कि कवि मे किसी प्रकार का भी विकास नही है । समय बहुत आगे चला जा रहा है और कवि को उसी छायावादी युग से सन्तोष है । कवि अपनी छन्द रचना मे बहुत ही सफल है । छन्दबद्धता को कवि कही पर भी नही भूलता चाहे वह कविता कैसी भी क्यों न हो जब आवागमन के कोई साधन न थे उस समय तो अवश्य ही बैलगाडी का बहुत महत्व था पर इस युग में नही । ठीक यही स्थिति माणकचन्द रामपुरिया की कविताओ की है । कवि ने समय के साथ चलने का प्रयास नही किया है । कवि की भाषा सर्वत्र भावानुकूल है ।

योगेन्द्र किसलय

बीकानेर से प्रकाशित 'सवेदन इति' के छः कवियो में से एक योगेन्द्र किसलय' है । इस सग्रह की कविताओं के अतिरिक्त भी इन्होने बहुत सी कविताए लिखी है । कवि का व्यग्य बहुत तीखा है । कवि अति साधारण शैली में बहुत ही तीखी बात कह जाता है । इनकी कविता की उपलब्धि भाषा और शब्दों में न होकर अर्थ की गहराई में रहती है । इनकी छोटी कविताए आकार में लघु होने के उपरान्त भी बहुत ही तीखा व्यग्य प्रस्तुत करती है । इनकी कविताए समकालीन सदर्भो के समानान्तर चलती है ।

व्यग्य के क्षेत्र में तो कवि ने बीकानेर के काव्य मे चार चान्द ही लगा दिये हैं । इनकी कविताओं में व्यग्य बहुत ही तीखा और गम्भीर है । जैसे —

१— माणकचन्द रामपुरिया -सदीप्ति के आत्मनिवेदन से
२— ,,

"लोग आजकल पैर दबाने वाली बीवियों को नही
जूते फेंकने वाली लड़कियों को पसन्द करते हैं — —
\+ + +
लोग सारा सीमेंट खा गए हैं
भले दरारें पड़ गयी है, लोग बहुत कुछ पा गए हैं।"[1]

इस प्रकार इन्होंने आजकल के नेताओं पर बहुत ही करारे व्यंग्य प्रस्तुत किये हैं।

अनास्थावादी स्वर इनकी बहुत सी कविताओं मे है। सैक्स भावना कुण्ठा और अनास्था का स्वर अधिक है, पर कवि का मूल स्वर तो इनको समाप्त करने का है। इनकी 'अभिशप्त' अनास्थावादी कविता है जिसमे आस्था का स्वर भी है। इनकी कुछ कविताओं में आक्रोश का स्वर भी है। रोमानियत कवि को बहुत अधिक घेरे हुए हैं जो इनकी कविताओ मे स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है।

किसलय' के कुछ मुक्तक चमत्कार युक्त है, पर कुछ ऐसे हैं जो एक प्रभाव भी पाठक पर छोडते है जैसे —

'कोई चुपके से जाम दुःख के पिला जाता है
बीती यादों का जहर भी तो मिल जाता है
ये इतना आसान नही जितना तुम सुनते हो
करके दिल खाक कहीं एक गीत लिखा जाता है।"[2]

कवि अपने काव्य मे अनुभूति पक्ष को अधिक महत्त्व देता है और उसकी सम्प्रेषणीयता का ध्यान भी कवि को सदैव रहता है। इसके अतिरिक्त इनके कुछ मुक्तक उर्दू शैली के काफी समीप है।

एक विशेष बात तो इनकी कविताओं मे पायी जाती है वह यह कि इनकी कविताए संवेदना से परिपूर्ण होती है जबकि आज की कविता में सम्वेदना का अभाव दृष्टिगोचर होता है। इनकी कविताओं के प्रतीक अति नवीन होते हैं। आधुनिक रहन सहन को इन्होंने बहुत ही समीप से देखा है और इस दृष्टि से इनकी कविताए उन्ही सन्दर्भों मे पाठक के सामने आती है। इनकी कुछ कविताओं का मध्य भाग कमजोर है।

१— योगेन्द्र किसलय की एक कविता से
१— योगेन्द्र किसलय का एक मुक्तक

गौरी शकर 'अरुण'

बीकनेर से प्रकाशित 'सवेदन इति'' बीकानेर मे छ कवियों की नई कविताओ का सग्रह है । उ ही छ कवियो मे मे गौरी शकर 'अरुण' है । पर कवि हम जिस रूप मे 'सवदन इति' मे नजर आया है वह तो कवि का आज का रूप है। कवि का रचना काल तो इससे पहले ही प्रारम्भ होता है । अत इ कविताओं को देखने से पहले हमे कवि की प्रारम्भिक रचनाओ का विश्लेषण भी करना उचित होगा । अरुण की प्रारम्भिक कविताओ मे केवल काव्य रचना का प्रयोग मात्र लगता है । विषय पुराने हैं, शिल्प भी प्राचीन है । कुछ गीत अवश्य ही सु दर है जिनमे आधुनिक समस्याओ को उठाया गया है । इन कविताओ में कही कही कवि का प्रगतिवादी स्वर भी उभरा है, पर फिर भी छायावाद से पूर्ण मुक्त नही हो सका है ।

कवि ने पाक आक्रमण के समय कुछ राष्ट्रीय कविताए भी लिखी है। कवि ने अपनी चेतावनी' कविता म शत्रु को चेतवानी दी है और उसे भारतवर्ष की वीरता की याद दिलाई है ।

> अगर नही विश्वास खोल इतिहास दखल
> हर पत्थर हमस टकराकर, गल जाता है ।
> जो भ काटा चुभा हमारे खाक हो गया
> आकर हर तूफान यहा पर ढल जाता है ।''[१]

सवेदन इति म कवि ने पुराना चोला छोड़ा है और नवीन धारण किया है । इस सग्रह की भी अधिकतर कविताए फैशननुमा है । कुछ इधर उधर क मुहावरे और शब्दो का इकट्ठा करके कविताए लिख डाली है । अधिकतर चालू शब्दो का प्रयोग किया गया है । इन कविताओ से पाठक को सुखद यात्रा की अनुभूति कम होती है और न ही प्रखरता पाठक को आलोडित कर पाती है।

इतना सब कुछ होने पर भी कवि ने समय क महत्व को समझा है और समय क साथ चलन का प्रयास किया है । कवि ने नवलेखन म प्रयास किया है इसक अतिरिक्त कृतघनता'' अपरिपक्वता'' आदि अच्छी कविताए है जिनमे नवीन अभिव्यक्ति है । इस सग्रह के अतिरिक्त अरुण की कविताए यत्र तत्र पत्रिकाओ म प्रकाशित होती रहती है । कवि की भाषा भावनुकूल एव सरल है

प्रकाश परिमल

सवेदन इति काव्य सग्रह म छ कवियो म प्रकाश परिमल भी एक है

१ स० सहिता—विजय हमारी है पृष्ठ ३६

इन कविताओं के अतिरिक्त भी कवि की कविताए पत्र-पत्रिकाओं मे प्रकाशित होती रहती है। इनकी कविताओं मे बौद्धिकता का प्राचुर्य है। विचारो मे उलझन होने से वह जो कुछ अभिव्यक्त करना चाहता है वह भी कभी कभी नहीं कर पाता। इस स्थिति म पाठक के द्वारा उन कविताओं को समझना और अधिक कठिन हो जाता है। कविताओं मे सम्प्रेषण तत्व का अभाव है। इनकी कविताओं म कही कही इतर सदभ भी आ जाते है इसका कारण यह है कि जब यह अनुभूति क्षेत्र मे होता है उसी समय वह विश्लेषण भी आरम्भ कर दता है। इसी कारण उसकी अनुभूति खडित हो जाती है। यह कवि सम्पूर्ण व्यवस्था को अपने विरुद्ध समझता है। कवि मे कही भी खोखला आदर्शवाद नहीं है। जीवन का यथाथ चित्रण कवि ने अपनी कविताओं मे किया है। कवि ने एक कविता मे जीवन और मृत्यु दोनो को बहुत ही सुन्दर ढग से प्रस्तुत किया ह —

'जन्म को
भविष्य के सपनो मे सजा दिया गया है
—व्यथ
और मृत्यु
भूत की उपलब्धिया से लाद दी गई है।'[1]

कवि को वतमान के प्रति बहुत मोह है। वह क्षण भर क आनन्द को ही सब कुछ समझता है —

'मैं क्षणो को
जो किसी आकस्मिक सयोग से यदा कदा जुड जाते है,
अपनी इकाई मे ही
भोगने मे सुरक्षा महसूस करता हू।'[2]

प्रकाश परिमल की कविताओं म दशन का भी पुट रहता है उसका कारण कवि का दशनशास्त्र म एम० ए० स्तर तक का अध्ययन हो सकता है। पर वह अपने दशन को पचा नही सका है। इसलिए इनकी कविता का दशन कुछ उलझन प्रस्तुत करता रहता है।

श्याम केवलिया

श्याम केवलिया 'सरहद्दी' ने बहुत सी कविताए लिखी और उनम से

---

१ सवदन इति पृष्ठ २०
२ सवदन इति पृष्ठ २०

६५ कविताओ का एक काव्य सग्रह 'शबनम' प्रकाशित हुआ है। इसम कुछ तो प्रकृति सम्बन्धी कविताए है, जैसे 'बहारें' यह मौसम' 'चादनी गरमा रही है' 'प्रिय फिर बसन्त कब आएगा' आदि, कुछ राष्ट्रीय कविताए है जैसे मेरा देश अगारो का हार, 'आवाज आह्वान', वतन के वास्ते' आदि। शेष शृगारिक कविताए हैं, प्रकृति सम्बन्धी कविताए परम्परावादी शैली म लिखी गई है। कवि की राष्ट्रीय कविताओ म जनता को जगा देने की शक्ति विद्यमान है। चीन के आक्रमण के समय लिखी कविताओ म चीन को बहुत ललकारा है और अपने देश के सिपाहियो का उत्साह बढाया है । पर इस सग्रह म राष्ट्रीय कविताए अधिक नही है शृगारिक कविताओ मे सयोग और वियोग दोनो प्रकार की कविताए है। ऐसी कविताओ मे बहुत से स्थलो पर भावो की पुनरावति हुई है। कवि की ये कविताए समय मे पीछे है । इनमे किसी भी प्रकार की नवीनता नहीं है । कवि पर उर्दू का बहुत अधिक प्रभाव है। इसी कारण इन कविताओं में भी उर्दू जैसा ही क्षणिक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है ।

पर कवि की कुछ कविताए ऐसी है जिनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि कवि ने बीकानेर के कवियो के स्वर म स्वर मिलाने का प्रयत्न किया है। जैसे उनकी 'नया मोड 'प्रश्न चिन्ह' आदि। इन कविताओ के अतिरिक्त कवि की जो राष्ट्रीय भावना की कविताए है व वास्तव म ही सशक्त कविताए है । इन कविताओ म अधिकतर तो चीन के आक्रमण के समय म लिखी हुई है। चीन के आक्रमण के समय जिस प्रकार की राष्ट्रीयता की आवश्यकता थी कवि ने उस राष्ट्रीय भावना को समझा है और जनता मे देश प्रेम की भावना को जगाने का प्रयत्न किया है। राष्ट्रीय कविताओ में कुछ तो ऐसी है जिनम भारतवर्ष का गौरव बताया गया है । जस —

"बहुत पुराना है इतिहास यहा का
मदिर, मसजिद, गुरुद्वारे बतलाते
सभी एक है भारत के हम वासी
अनुपम सब का देश सभी से प्यारा
+ + +
मानवता का पाठ पढाया जग को
स्वयम् देवताओ ने जिसे सवारा ।"[1]

इसके साथ ही कवि भारत के वीरो को भी नही भूला है -

१— ग्राम कवलिया 'सरहद्दा' —शबनम पृ० ६५

इस धरती के कण-कण से
उन वीरो की
सुनते हैं आवाजे
अपना सब कुछ लुटा दिया था
और खेल गये थे प्राण पर

× × ×

भगतसिंह, शेखर आजाद
राज गुरु बिस्मिल की
अमर आत्मा राह दिखाती हमको ।"[1]

राष्ट्रीय कविताओ म कुछ ऐसी है जिनमे शत्रुओ को ललकारा है —

'चट्टानो से टकराए हो
हमे नही पहचाना तुमने
सुनलो कान खोलकर !

+ × ×

गद्दारो को जिन्दा ही हम
अंतिम नीद सुला देते हैं ।"[2]

+ + +

सुन लो
ससार सुनेगा विस्फोटो को
रोक नही तुम पाओगे फिर
बढ़ते हुए जवानो को । [3]

कवि ने ऐसी कविताओं म बहुत ही सरल भाषा का प्रयोग किया है ।

रामनरेश सोनी

रामनरेश सोनो ने बीकानेर क हिन्दी काव्य मे सन १९६० मे पदार्पण किया है । इन्होने कविता, गीत और मुक्तक लिखे हैं । इनके गीत और कविताओ

१— आम कवलिया सरहद्दी'	—शबनम	पृ०	८०
२— ,, ,, ,,	,,	,,	६८
३— ,,	,,	,,	८१

को देखकर यह कहा जा सकता है कि कवि विषय चयन मे तो समय के साथ है पर शैली प्राचीन है। कवि की प्रारम्भिक रचनाओं पर छायावाद का पूरा प्रभाव है। इनके बाद के गीतो पर नीरजवादी प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर हाता है।

कवि ने अधिकतर वीर रस की कविताए लिखी है जैसे —

"जग को बतला ही दिया कि पौरूष के आगे
विपदाओ की बाधाओ की औकात नहीं
जो सदा ध्वस पर एड मारते चलत हैं
वे दुविधाओ से खायेंगे क्या मात कही।"[1]

इसी प्रकार कवि ने श्रम को लेकर कविता लिखी है। इसम कवि श्रम का महत्व बताता है। कवि ने एक युद्ध को लेकर कविता लिखी है जो प्रस्तुति' में प्रकाशित भी हुई है। इसम कवि ने युद्ध के आतक को बताते हुए यह प्रस्तुत करने की कोशिश की है कि मानव चैन से सास तभी ले सकता है जब युद्ध का भय बिल्कुल नहीं रहेगा।

'तब ही ससार सुखो के सपने देखेगा
तब ही सपने साकार स्वय हो जायेंगे।"[2]

इसके अतिरिक्त कवि ने कुछ राष्टोय और प्रकृति सम्बन्धी कविताए भी लिखी है। अचल गढ की एक रात' कवि की एक लम्बी वीर रस प्रधान कविता है। जिसके प्रारम्भ मे प्रकृति का विस्तत चित्रण हुआ है। प्रकृति को यहा अधिकतर मानवीकरण की शैली में चित्रित किया गया है।

'सो गई धरती गगन की बाह म
सो गई कलिका शिथिल पत्राक मे
सो गई सरिता कगारो से कसी
सो गई लतिका बधी तरू अग म।"[3]

कविताओ की अपेक्षा कवि गीतो में अधिक सफल नजर आता है। कवि की कविताओ में वीर रस की प्रधानता है पर इनके गीतो के विषय भिन्न हैं। आज मानव को धन कितना प्रिय हो गया है। इसको कवि ने अपने एक गीत में

१— रामनरेश सोनी — मिट्टी के कण कविता से
२— ग० नान भारिल्ल प्रेम मक्सेना — प्रस्तुति पृ० ५५
३— रामनरेश सोनी - अचलगढ की एक रात' कविता म।

बहुत ही सुदर ढग से प्रस्तुत किया है —

'बहने बिक जाती है यहा पर रुपया की खनकार पर

\+ + ×

बदल गई है नियत जमाने की माया के नाम पर[1]

इनके गीता म रोमास भी मिलता है । प्रसाद की तरह यह कवि भी सौन्दय व प्रेम क गीत गाता है ।

"तुम उमडी रही घटा बन कर मेरे नभ पर
मैं गीत प्यार का जनम जनम तक गाऊ गा

× × ×

तुम बिखरा दो घनकेश जाल मेरे मुख पर
मैं हिमगिरि बन रस धार स्वय बरसाऊ गा ।"[2]

समय म कवि अवश्य पीछे है । कविता और गीत दोनो मे कवि छायावाद से बहुत प्रभावित है ।

कवि न कुछ मुक्तक शीषक से भी कविताए लिखी हैं । आज इस वैज्ञानिक युग म यन्त्रो का मूल्य अधिक है और मनुष्य का उसकी जाति का मनुष्य ही नही पहचानता । क्योकि आज इस युग म मनुष्य की कोई कविता भी नही रही है । इसी स सम्बधित इनका एक मुक्तक है —

क्या कहूँ मुस्कान मुश्किल हो गई
है सभी इन्सान पर इन्सान को
इन्सान की पहचान मुश्किल हो गई ।"[3]

कवि ने गीत और कविता दोना ही लिखे हैं । पर कवि नये शिल्प की चकाचौध मे नही पडना चाहता । कवि की सभी कविताए छद बद्ध हैं । जिस प्रकार की कविताए य लिख रहे है उस प्रकार की कविताए बीकानेर मे बहुत पहले लिखी जा चुकी थी । इन कविताओ का उस समय म तो बहुत आदर हो सकता था, पर आज इतना नही । पर इतना होते हुए भी कवि की कुछ

१— , ,, एक गीत स
२— ,, ,
३— रामनरेश सोना एक मुक्तक कविता

कविताओं के विषय अवश्य ही अपने समय के हैं।

सरल

बीकानेर की नयी पीढ़ी के कवियों में 'सरल' का भी अपना स्थान है। सरल ने कविताएं व गीत दोनों ही लिखे हैं। गीत बहुत कम लिखे हैं। इनके सभी गीत नगर बोध के हैं और वे भी बहुत मामा य जीवन को लेकर लिखे गये हैं — भोर जगी

घर घर चूल्हे हीटर में
होड लगी।"[1]

सरल की कविताओं के पढ़ने से स्पष्ट होता है कि कवि का स्वर आशावादी है। वह कहीं निराशा के चक्कर में नहीं है। आज इस भौतिकवादी युग में मानव एकाकी होता जा रहा है और उस अपने पथ में हमराही की कमी का अनुभव होता है। इस बात को कवि ने समझा है और उसे अपनी कविता में अभिव्यक्ति दी है — 'कोई भी

हमराही नहीं जो
एक तिनका फेंक दे
सुबह की प्रतीक्षा तक।'[2]

कवि की कुछ एक कविताओं में व्यंग्य भी काफी अच्छा उभरा है।

आज इस युग में औपचारिकता का महत्व बढ़ता जा रहा है। मानव अपना अधिकतर समय इस औपचारिकता में ही नष्ट कर डालता है, पर इस औपचारिकता से किसी का भी काम सफल होना सम्भव नहीं है। इसलिए कवि ने इस औपचारिकता को नकारा है —

"क्या होगा मेरे दोस्तो
मेरी कविता सुनने से
तालियां बजाने से
झण्डा लहराने से
वंदे मातरम गाने से।'[3]

१— वातायन — अप्रेल १९६५ — पृ० ५०
२— — सितम्बर, १९६६ — , २७
३— सरल — 'क्या होगा' —? कविता से

कवि इससे यह भी सकेत करना चाहता है कि यदि ऐसा करने से कुछ होता तो पिछल बीस वर्षो म कुछ हो जाता, पर ऐसा न होकर कुछ और ही हुआ है —

'दिना दिन भूख और बदनीयति के
दास होने जा रहे है।'[1]

इतना ही नही कवि आज की वास्तविक व्यवस्था को बताना चाहता है और जिस बहुत कम लोग जानते हैं।

"राता रात बहिया बदल दी जायेगी
फाइलें गुम हो जायेंगी
और हर हुक्काम की निजी कोठी, कार
और सोहरत बढ जायगी।'[2]

कवि आज की इस वतमान व्यवस्था में परिवतन के लिये प्रयत्नशील है। इसलिये वह उसम परिवतन करना चाहता है और इसलिये एक हलचल पदा करना चाहता है —

"एक पत्थर और फेंका
सोचकर
हलचल मचेगी
लहरें उठेगी।"[3]

पर ऐसा हुआ नही और कवि का सारा प्रयत्न निष्फल हा गया।

कि तु
उछला नही
विगडा नही
ताल का जड–जल
प्रज्ञाहीन व्यक्ति सा
अपलक देखता रहा
मुझे
जैसे मैंने कुछ किया ही नही
उसे कुछ हुआ ही नही।"[4]

---

१ सरल —क्या होगा——? कविता से
२ " — " " " "
३ " —ताल का जल कविता से
४ सरल — " "

पर कवि इससे निराश नही होता है। वह अपना यह प्रयत्न जारी रखता है।

कवि ने अपनी प्रत्येक बात को सरल शब्दो में कहा है और कही पर भी कविता बौद्धिकता क भार स नही दबी है।

लालचद 'भावुक"

लालच द "भावुक" बीकानर के प्रगतिवादी कवि है। आपकी प्रत्येक कविता म प्रगतिवादी स्वर मुख्य रूप से रहता है। कवि भावुक' आज की व्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठाता है और उसको बदलने के प्रयत्न म है। पर यह आवाज उनकी शाति के साथ नही निकलती, अपितु बडे ही गजन-तजन क साथ मुखरित होती है। जब ये कवि सम्मेलनो म कविता पढत हैं तो ऐसा लगता है कि शायद ये अभी इन सब परिस्थितियो को बदल देंग। कवि कही पर भा दबी जबान स कुछ नही कहता है, जो कुछ कहता है स्पष्ट और शसक्त शब्दो के साथ अपन विचारो को पूर्ण विश्वास के साथ व्यक्त करता जाता है —

मैं कवि आवाज देता हूँ, तुम्हे विश्वास स" ।

कवि ने कुछ राष्ट्रीय भावना की कविताए लिखी है। उनमे देश की रक्षा सिर हथेली पर लेकर अपने आन-मान की रक्षा करता हुआ करता है और यही बात वह अपने देश वासियो से कहता है। ऐसी स्थिति म कवि के सामन मौत भी नही ठहर सकती —

मौत होगी सामने, सर ले हथेली पर निकलना

मौत खुद देखेगी तेरे क्रोध का खुल कर मचलना।"[1]

कवि इस बात को स्पष्ट कर देता है कि जब सब देश वासी ऐसी प्रतिज्ञा कर लेंगे तो किसी भी शत्रु का सामना बडी सरलता के साथ किया जा सकता है और एसा करने पर शत्रु का ठहरना असम्भव है —

खुन के कह दो गा कसम अब, भारती के माल की।

इस मेरे अहल वतन स गर किसी ने चाल की।

तो समझलो हम उसी का नाम तक छोडे नही

जि दगी का एक क्षण भी चैन से तोडे नही। -

कवि ने आज की इस प्रजातात्रिक व्यवस्था पर भी बहुत करारी चोट की है। इसक लिए कवि ने शतरज का रूपक बाधा है और शतरज की गोटियो क उपमान द्वारा अपनी बात को स्पष्ट करन म सफल हुआ है। इनकी 'शतरजी

---

१ सम्पादित सहिता — विजय हमारी है' पृष्ठ २२

२ — २

मोहरे' कविता म रूपक और व्यग्य का साथ साथ निर्वाह हुआ है —

"जनतन्त्री के वजीर तो
लकडी के मोहरे
से हो गये हैं।
और ये
प्रशासनिक घोडे
दो सही एक बटा दो के मालिक –
अपने चौकोने मे
घुड चौकिया लगाकर
हाथियो से हाथी
सटा कर भी
निर्णायक मात की
स्थिति नही।"[1]

यद्यपि लालचन्द भावुक ने बहुत अधिक कविताए नही लिखी है, पर जितनी लिखी है उन सब म प्रगतिवादी स्वर ही प्रमुख है। इन कविताओं की भाषा बहुत सरल और स्पष्ट है। कही पर भी किसी प्रकार की क्लिष्टता नही है।

नद किशोर आचाय

आज इस भौतिक युग म औपचारिकता ने मानव जीवन को चारो ओर स जकड लिया है। इस औपचारिकता के कारण कभी-कभी मनुष्य एक दूसरे का सही मूल्याकन नहीं कर सकता। नद किशोर आचार्य की कविताए इस आधुनिक सामाजिक परिवश का स्वीकार करके लिखी गई है। इनकी कवितायें आधुनिक समाज पर तीखा व्यग्य है। आज हम पुरानी सामाजिक मान्यताओ को स्वीकार कर रहे है जिनम बदबू आ रही है जिनसे घुटन होती है, परन्तु फिर भी उनम जी रहे हैं जसे —

"जिसकी मोली बदबू मे
सास भी तो नही लिया जाता
खुल कर

1— सप्ताहात — १८ अगस्त १९६८ से

पर कवि इससे निराश नही होता है। वह अपना यह प्रयत्न जारी रखता है।

कवि ने अपनी प्रत्येक बात को सरल शब्दो मे कहा है और कही पर भी कविता बौद्धिकता के भार स नही दबी है।

लालचद 'भावुक'

लालच द "भावुक' बीकानेर क प्रगतिवादी कवि है। आपकी प्रत्येक कविता मे प्रगतिवादी स्वर मुख्य रूप स रहता है। कवि भावुक' आज की व्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठाता है और उसको बदलन के प्रयत्न म है। पर यह आवाज उनकी शांति क साथ नही निकलती अपितु बड़े ही गजन तजन क साथ मुखरित होती है। जब य कवि सम्मेलनो म कविता पढत हैं तो ऐसा लगता है कि शायद य अभी इन सब परिस्थितियो को बदल देंगे। कवि कही पर भी दबी जबान स कुछ नही कहता है, जो कुछ कहता है स्पष्ट और शसक्त शब्दो क साथ अपने विचारो का पूर्ण विश्वास के साथ व्यक्त करता जाता है —

मैं कवि आवाज देता हूँ तुम्हे विश्वास स" ।

कवि ने कुछ राष्टीय भावना की कविताए लिखी है। उनमे देश की रक्षा सिर हथेली पर लेकर अपने आन-मान की रक्षा करता हुआ करता है और यही बात वह अपने देश वासियो मे कहता है। ऐसी स्थिति मे कवि के सामने मौत भी नही ठहर सकती —

'मौत होगी सामने सर ले हथेली पर निकलना
मौत खुद दखेगी तरे क्रोध का खुल कर मचलना।"[1]

कवि इस बात को स्पष्ट कर दता है कि जब सब देश वासी ऐसी प्रतिज्ञा कर लेंगे तो किसी भी शत्रु का सामना बडी सरलता के साथ किया जा सकता है और ऐसा करने पर शत्रु का ठहरना असम्भव है —

खुल के कह दो खा कसम अब, भारती के लाल को।
इस मेरे अहले वतन स गर किसी ने चाल की।
तो समझनो हम उसी का नाम तक छोडे नही
जिन्दगी का एक क्षण भी चैन से तोडे नही।"[2]

कवि ने आज की इस प्रजातांत्रिक व्यवस्था पर भी बहुत करारी चोट की है। इसक लिए कवि ने शतरज का रुपक बाधा है और शतरज की गोटियो क उपमान द्वारा अपनी बात को स्पष्ट करन म सफल हुआ है। इनकी 'शतरंजी

१ सम्पादित संहिता — विजय हमारी है' पृष्ठ २२
२ — , २

मोहरे' कविता मे रूपक और व्यग्य का साथ-साथ निर्वाह हुआ है —

"जनतन्त्री के वजीर तो
लकड़ी के मोहरे
से हो गये हैं।
और ये
प्रशासनिक घोड़े
दो सही एक बटा दो के मालिक —
अपने चौकोने में
घुड चौकिया लगाकर
हाथियो से हाथी
सटा कर भी
निर्णायक मात की
स्थिति नही।"[1]

यद्यपि लालचन्द भावुक ने बहुत अधिक कविताए नही लिखी है, पर जितनी लिखी है उन सब में प्रगतिवादी स्वर ही प्रमुख है। इन कविताओं की भाषा बहुत सरल और स्पष्ट है। कही पर भी किसी प्रकार की क्लिष्टता नही है।

नद किशोर आचाय

आज इस भौतिक युग म औपचारिकता ने मानव जीवन को चारो ओर से जकड लिया है। इस औपचारिकता के कारण कभी-कभी मनुष्य एक दूसरे का सही मूल्याकन नहीं कर सकता। नद किशोर आचार्य की कविताए इस आधुनिक सामाजिक परिवश का स्वीकार करक लिखी गई है। इनकी कवितायें आधुनिक समाज पर तीखा व्यग्य है। आज हम पुरानी सामाजिक मान्यताओ को स्वीकार कर रहे है जिनमे बदबू आ रही है जिनसे घुटन होती है परन्तु फिर भी उनमे जी रहे हैं जैस —

"जिसकी सीली बदबू म
सास भी तो नही लिया जाता
खुल कर

1— सप्ताहात — १८ अगस्त १९६८ से

और व्म घुटन म
सबूत देते है हम
अपने जिए जीने का ।"[1]

वास्तव म यह जीवन कोई जीवन नही है । आज जीवन क आधारभूत मूल्यो को इतना महत्त्व नही दिया जाता जितना कि जीवन के छिछलेपन को । यह बात भी कवि की दष्टि से वची नही है । आज हम फिल्मी रोमा म पसन्द करते है । किसी लडकी का मुस्करा कर बोलना, भीड म किसी लडकी से शरीर स्पश करना और रोमानी उपन्यास आदि हमारे लिए आन द का विषय बन जाते हैं ।

हमारा रामास
सिनेमा हाल और सस्त रामानी उप यासा तक ही ।
+ + +
पडोस की किसी लडकी
या दफ्तर की लेडी टाइपिस्ट का
मुस्कुरा कर बात कर लेना
और भीड म
किसी औरत क शरीर स्पश
काई सनसनाखज खबर पढन जसा ही है ।"[2]

कवि का सामाजिक जीवन स कुढन है पर उसका स्वर आस्थावान है । इसलिए वह इसका सामना करना चाहता है । सफलता और असफलता की उसे कोई चिन्ता नही है । कवि को आधुनिकता म सचाई कम दृष्टिगोचर होती है –

'चौदह करट सोने का
एक गहना है
हमारी आधुनिकता ।[3]

कितनी मिलावट है आधुनिकता म । इस प्रकार कवि समाज के प्रत्येक पहलू पर व्यग्य करता है । पर यह कवि जीवन की निराश दष्टि को लेकर नही चलता है ।

१— सवेदन इति पृ० २७
२— नन्दकिशोर आचाय मनेन्न इति २६
३— ,, २४

श्री न दकिशोर आचाय की कुछ कविताओं म शिल्प की उत्कृष्टता होत हुए भी सम्प्रेषणीय तत्व की अ पता है । इस प्रकार की स्थिति म उनका काव्य दुबल लगता है और कविता शिल्प का आवरण बन जाती है, पर इनकी कुछ कविताओं म चि तन पक्ष सबल है और अनुभूति पक्ष भी लगभग वैसा ही है ।

बीकानेर मे स्वत त्रता के बाद के इन कवियो के अतिरिक्त भी कुछ कवि और है जि होने कुछ छुट पुट कविताए लिखी है । इनमे भी हमे दो प्रकार के कवि दिखाई द रह हैं । एक वे जि होन स्वत त्रता प्राप्ति क समय एव कुछ बा द मे कविताए लिखी और दूसरे व जि होने इ ही कुछ वर्षो स कविताए लिखनी प्रारम्भ की है । बीकानेर म इन प्रथम प्रकार के कवियो में अम्बिकादत्त शास्त्री गोवि दलाल व्यास, क हैयालाल गोस्वामी बद्रीप्रसाद पुरोहित मुरली-धर व्यास का नाम लिया जा सकता है । इन सभी कवियो ने राष्ट्रीय कविताओ के साथ-साथ कुछ अ य फुटकर कविताए भी लिखी है । गोस्वामी की 'यह ताज-महल" कविता जिसमे उ होने यह बताया है कि शाहजहा और मुमताजमहल स ताजमहल अमर नही है अपितु —

"इसको तो अमर बनाया है
मर मर कर मजदूरा न
जो सिर पर पत्थर उठा उठा
चढ चले ताज के गु बद पर ।"[1]

कवि यह मानता है कि ताजमहल को देख कर हम आज मुमताज और शाहजहा के प्यार को याद करते हैं और उन मजदूरो का कोई भी याद नही करता जि होने इसक निमाण मे अपना जीवन बलिदान किया था ।

खडगावत मालच द दोगर सक्सना धर्मेश शर्मा बुलाकीदास बावरा, घडच द राजीव, चचल हप शिवराज छगाणी विश्वनाथ सचदेव तथा वासु बीकानेरी आदि ने भी कुछ छुट पुट कविताए लिखी है । इन सभी कवियो की कविताए विजय हमारी है' म प्रकाशित हुई है जो सभी राष्ट्रीय कविताए और भारत पाक के आक्रमण क समय म लिखी हुई है । इन कविताओ म इ होने या तो अपन देश की महिमा का वणन किया है या फिर शत्रु को ललकारा है । देश महिमा म मातृभूमि पर बलिदान होने वाले वीरों को भी याद किया है । इन कविताओ के अतिरिक्त इन कवियो ने कुछ स्फुट कविताए और भी लिखी है

१— क हैयालाल गोस्वामी - यह ताजमहल कविता स

जो स्थानीय पत्रों में बिखरी पड़ी है। प्रेम सक्सेना, शिवराम पुनिया श्रीकृष्ण विश्नोई, मालीराम शर्मा तथा नरेन्द्र शर्मा आदि कवियों ने भी कुछ कविताएं लिखी है। प्रेम सक्सेना की कुछ कविताओं में वैयक्तिकता है। वैयक्तिक पीडाओं का कवि ने अपनी कविता में बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है —

"लेकिन ऐसा हुआ नहीं है
हर बार आस नही रात सोई है
और हर बार मेरे घर के एकांत मे
सुनसान ने मुझे धोखा दिया है।"[1]

शिवराम पुनिया ने बहुत कम कविताएं लिखी है। एक कविता मे उन्होंने पीड़ा को बहुत ही सुन्दर ढंग से व्यक्त किया है। युवती और पीड़ा के रूपक से कविता बहुत ही सुन्दर बन पड़ी है —

'तभी से
एक युवती
पीड़ा है नाम जिसका
मिलती है
हर गली - हर मोड़ पर
और फिर
बिन बोले
घूमती है साथ-साथ
रात होने तक।'[2]

कविताओं के अतिरिक्त पुनिया ने कुछ गीत भी लिखे हैं।

आज इस महंगाई के समय मे मनुष्य का जीना बहुत ही कठिन है। और फिर परिवार की गाडी को साथ लेकर चलना तो और भी कठिन है। मनुष्य को मनुष्य का सहारा भी कम मिल रहा है। इसी बात को श्रीकृष्ण ने अपनी कविता में प्रस्तुत किया है और बताया है जब तक मनुष्य मनुष्य में भेद समाप्त नहीं होगा तब तक जीवन यापन करना कठिन है —

१— प्रेम सक्सेना की एक कविता से
२— शिवराम पुनिया की एक कविता से

स्वामी है
राशन चुक गया है
साडी फट गई है
फास नही थी
नाम कट गया है ।
\+ × +
बहुत मुश्किल है जाना
जमी पर
जब तक
आदमी आदमी म भेद है।'[1]

आज क यान्त्रिक युग न मनुष्य का य त्रो जसा ही बना दिया है। मनुष्य का जीवन मशीन बन गया है। उसके चारो ओर मशीन ही मशीन है —

बोध का बालक
बिक गया
य त्रा के पहरुए
खडे हैं चारो ओर ।[2]

इन कवियो क अतिरिक्त बीकानेर मे और भी कवि सम्मेलना म कुछ बाल कवि भी सामने आ रहे हैं पर उनकी कविताए आकार और प्रकार किसी भी दृष्टि से हमारे आलोच्य विषय मे नही आ सकती। इसलिए उनका यहा वर्णन नही किया जा रहा है।

==

१— चान भारिल्ल प्रेम सक्सेना प्रस्तुति पृ० ५४
२— " " " " ४६

बीकानेर जिले के काव्य-रूप

काव्य के तत्व

प्रत्येक मानव में कल्पना, विचारशीलता और अनुभूति विद्यमान है। कविता के लिए भी इन्हीं की आवश्यकता है। इसका अर्थ यह हुआ कि प्रत्येक मानव अपने आप में कवि है। पर वास्तव में ऐसा नहीं है। इसका कारण यह है कि कवि साधारण मानव से कहीं अधिक भावुक एवं विचारशील होता है। वह अपने अनुभवों को अपने तक सीमित न रख कर उन्हें अभिव्यक्त करना चाहता है। कवि अपने हृदय के रस को पाठक तक पहुँचाता है। यदि कवि अपनी अनुभूति को पाठक की अनुभूति न बना सका तो उसकी कविता में निश्चित रूप से कुछ कमी है पर इसके लिए केवल कवि का ही दोष नहीं होता। कभी कभी पाठक या श्रोता का भी दोष होता है। इस प्रकार से काव्य के दो पक्ष हो जाते हैं। अनुभूति पक्ष एवं अभिव्यक्ति पक्ष। जिसे हम भाव पक्ष और कला पक्ष भी कह सकते हैं। काव्य में इन दोनों का अटूट सम्बन्ध है। दोनों का एक दूसरे के बिना कोई महत्व नहीं है। कवि का अनुभूति पक्ष भी प्रबल होना चाहिये और अभिव्यक्ति का पक्ष भी। यदि अनुभूति तीव्र हो और उसे अभिव्यक्त करने के लिए भाषा न हो तो भी वह बेकार है। पाश्चात्य विद्वानों द्वारा प्रतिपादित काव्य के चार तत्व (रागात्मकतत्व, कल्पनातत्व, बुद्धितत्व और शैलीतत्व) इन्हीं दो तत्वों से सम्बन्धित हैं।[1]

काव्य का वर्गीकरण

काव्य को समझने के उपरान्त यह जानना भी आवश्यक है कि काव्य के कितने रूप हैं? काव्य के रूपों की जब हम चर्चा करते हैं तो हमारे सामने पाश्चात्य एवं भारतीय दोनों मत ही आ जाते हैं। दोनों मतों में थोड़ा अन्तर भी है। पाश्चात्य विद्वानों ने काव्य के दो भेद किये हैं – एक विषयीगत (Sub-

---

१— गुलाबराय —काव्य के रूप पृ० १४

jective) व विषय गत (Objective)। विषयीगत मे कवि को प्रधानता मिलती है और विषयगत मे शेष सृष्टि को। पहले प्रकार के काव्य को लिरिक (Lyric) कहते हैं। इसमे गीत तत्व की प्रधानता रहती है। दूसरे प्रकार के काव्य को प्रकथनात्मक (Narrative) कहा गया है, जिसम महाकाव्य आदि काव्य आते हैं।[1]

भारतीय विद्वानो के अनुसार काव्य का विभाजन दृश्य और श्रव्य दो भागों में हुआ है। जो काव्य अभिनीत होकर देखा जाय वह दृश्य काव्य कहलाता है और जिसे कानो स सुना जाय उसे श्रव्य काव्य कहा जाता है। श्रव्य काव्य क अन्तगत गद्य पद्य और मिश्र तीन भेद रखे हैं।[2]

बन्ध की दृष्टि से काव्य के दो भेद किय जा सकते है—प्रबन्ध काव्य और मुक्तक काव्य। प्रबन्ध काव्य वह कहलाता है जिसमे पूर्वापर सम्बन्ध रहता है तथा छन्द एक दूसरे से माला की मनियो स जुड रहत हैं। जिस प्रकार माला का एक भी मनका टूटने पर सारी माला बिखर जाती है उसी प्रकार स प्रबन्ध काव्य म छन्द का महत्व रहता है। प्रबन्ध काव्य मे छन्दो के क्रमो को आगे पीछे नही किया जा सकता। मुक्तक काव्य मे पूर्वापर सम्बन्ध नही रहता। प्रत्येक छन्द अपने आप म पूर्ण एव स्वतन्त्र होता है।

प्रबन्ध काव्य के भी दो भेद किए जा सकते हैं—महाकाव्य और खण्ड काव्य। महाकाव्य म एक विस्तृत कथानक होता है। उसम मानव जीवन की पूर्ण घटनाओ का चित्रण होता है। महाकाव्य की परिभाषा बताते हुए गुलाब राय ने लिखा है ' महाकाव्य वह विषय-प्रधान काव्य है जिसम कि अपेक्षा कृत बडे आकार मे जाति म प्रतिष्ठित और लोकप्रिय नायक क उदात्त कार्यों द्वारा जातीय भावनाओ, आदश और आकाक्षाओ का उद्घाटन किया जाता है।"[3]

खण्ड काव्य मे जीवन की किसी एक घटना का वर्णन रहता है। जीवन की विविधता का इसमे अभाव होता है। इसका क्षेत्र भी महाकाव्य स सीमित होता है।

---

१ गुलाब राय–काव्य क रूप– पृष्ठ १७
२ डा० शकुन्तला दूबे–काव्य रूपा क मूलस्त्रोत और उसका विकास– पृष्ठ ३३
३ गुलाब राय–काव्य क रूप– पृष्ठ ८४

श्री विश्वनाथ मिश्र ने महाकाव्य तथा खण्ड काव्य के बीच की एक स्वतन्त्र विधा मानी है जिसे एकार्थ काव्य कहते हैं। उनका मत है कि 'महाकाव्य में कथा-प्रवाह विविध भंगिमाओं के साथ मोड़ लेता हुआ आगे बढ़ता है किन्तु एकार्थ काव्य में कथा-प्रवाह के मोड़ कम होते हैं।"[1] उन्होंने कामायनी, प्रिय प्रवास और साकेत को एकार्थ काव्य माना है।

मुक्तक काव्य के भी दो भेद किये जाते हैं। गेय मुक्तक और पाठ्य मुक्तक। पर वास्तव में देखा जाय तो जो पाठ्य है वह गेय भी हो सकता है और जो गेय है वह पाठ्य भी हो सकता है। पाठ्य और गेय को यदि हम विषय प्रधान और विषयी प्रधान कहें तो अधिक उचित होगा। गेय पदों में कवि का निजी भावाधिक्य अधिक होता है और पाठ्य मुक्तक में कवि तटस्थ होकर लिख डालता है।

गीति काव्य को अंग्रेजी में लिरिक कहते हैं। इसमें व्यक्तिगत सुख दुख की बात अधिक रहती है। इसमें कवि के व्यक्तित्व की छाप मुख्य रूप से रहती है। भावातिरेक और संगीत इसके मुख्य तत्व है। प्रथम को इसकी आत्मा तथा द्वितीय को इसका शरीर कहा जा सकता है। गुलाब राय ने गीति काव्य की व्याख्या करते हुए लिखा है यह काव्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा अधिक अंत प्रेरित (Spontaneous) होता है और इसी कारण इसमें कला होते हुए भी कृत्रिमता का अभाव रहता है[2]

काव्य रूपों की विवेचना करने के उपरान्त हम कह सकते हैं कि काव्य के निम्नलिखित रूप हो सकते हैं —

१ महाकाव्य
२ खण्ड काव्य
२ एकार्थ काव्य
४ गीति काव्य
५ मुक्तक काव्य

बीकानेर मे काव्य के रूप

उपर्युक्त काव्य रूपों को ध्यान में रखते हुए यदि बीकानेर की काव्य

---

१ सरोजिनी मिश्रा—साहित्यशास्त्र के सिद्धान्त- पृष्ठ २८३
२ गुलाब राय—काव्य के रूप- पृष्ठ ११०

चतना को देखें तो यह स्पष्ट रूप स कहा जा सकता है कि इतने लम्ब समय मे बीकानेर जिले मे हिन्दी मे महाकाव्य और खण्डकाव्य स्वतन्त्रता के पश्चात नही लिखे गये।

विश्व का आदि काव्य कौन सा था और कैसा था इसके बारे म निश्चित रूप से कुछ नही कहा जा सकता। हा यह अवश्य कहा जा सकता है कि प्रारभ मे काव्य मुक्तक शैली मे ही लिखा गया और बाद म प्रबन्ध रूप म। इसका कारण भी स्पष्ट है कि मुक्तक की अपेक्षा प्रब ध काव्य लिखना कठिन है। प्रबध काव्य लिखने क लिय परिपक्वता की बहुत आवश्यकता है। इसलिए यह देखा जाता है कि अधिकतर कवि प्रब धकाव्य बहुत बाद म जाकर लिखते हैं।

स्वत त्रता म लेकर आज तक हम बीकानेर मे किसी भी प्रकार का प्रवध काव्य दृष्टि गोचर नही होता है। हा स्वत न्त्रता से पूव शम्भूदयाल सक्सेना ने अवश्य ही दो खण्ड काव्य लिखे जिनम स 'उत्सग' मे तो कवि दो कथाओ के बीच म उलझ गया है और किसी भी कथा का ठीक तरह से निवाह नही कर सका। स्वतन्त्रता के बाद इस कवि द्वारा भी एसा प्रयास नही किया गया और न ही किसी और कवि द्वारा। हिन्दी साहित्य के छायावादी युग मे अवश्य ही प्रब ध काव्य लिखे गये, प्रयोगवादी युग म यह काय उस गति से नही हो रहा है। जब हिन्दी साहित्य मे भी ऐसा नही हो रहा है तो केवल बीकानेर मे इस काल म कोई प्रब ध काव्य लिखा जाना कैसे सम्भव हो सकता है क्योकि यहा हिन्दी काव्य का ज म हि दी काव्य जगत के बहुत बाद मे हुआ है। बीकानेर के काव्य के लिए यह भी बहुत बडा बात है कि अपनी यात्रा बहुत बाद म प्रारम्भ करके वह आज हिन्दी काव्य जगत के साथ मिल गया है। यहा क कवियो का ध्यान इस यात्रा को पार करक जल्दी से जल्दी हि दी काव्य जगत के साथ मिलने की ओर रहा है इसलिए प्रबन्ध काव्य की ओर ध्यान नही गया।

बीकानेर म हि दी काव्य की यह बाल्यावस्था ही है। काव्य चेतना स्वतन्त्रता क पश्चात ही आयी है। शम्भूदयाल सक्सना न अवश्य स्वतन्त्रता स पूव कुछ लिखा था। इस समय म जितने भी कवि लिख रहे हैं व अधिकतर चालीस वष की उम्र स कम है। आयु की अल्पता अनुभव, और अध्ययन की अल्पता भी प्रब ध काव्य न लिखे जाने का एक कारण है।

आज क इस युग म कवि सम्मेलना का महत्त्व बढता जा रहा है और बीकानेर म कवि सम्मेलना का महत्त्व और भी अधिक रहा है। इस-

लिय आज कल कवि सम्मलन प्रचार के एक साधन बन गय हैं। कवियो का अधिक ध्यान कवि सम्मलनो की ओर ही रहा है और उसम अपने गीत और कविताए सुनाते रहते हैं। इस दृष्टि स प्रब ध काव्य लिखने की ओर ध्यान न जाना सम्भव ही है। हि दी का जो क द्र रहा है और जहा स हि दी जगत का प्रेरणाए मिली है उसम बीकानर जिला बहुत दूर रहा है। उस क्षेत्र स यहा तक जितनी प्रेरणाए मिली उतना इस क्षेत्र म काव्य सजन भी होता रहा है पर इमस अधिक न ही हो पाया है और न ही इमस अधिक सम्भव था।

राजस्थानी म प्रब ध लिखे अवश्य गय थे लकिन आज क कवि उनसे पूर्णतया अछूते है। स्वत त्रता क बाद युग की परिस्थितिया बदल गई और उसक साथ ही साथ समस्याए भी नवीन पदा हाती रही और कवियो का अधिक ध्यान इन बदलती हुई समस्याओ की ओर रहा है। इसलिए किसी प्रब ध काव्य लिखन की ओर ध्यान जाना असम्भव ही है। सन १९४७ स लेकर आज तक देश पर दो तीन बार आक्रमण हो गय रुपय का अवमूल्यन हो गया बकारी, महगाई और जनसख्या की समस्या बढती जा रही है। अत यहा क कवियो का ध्यान इन समस्याओ की ओर जाना भी स्वाभाविक है। ये इन्ही विषयो पर कविताए लिखत रहे और किसी भी प्रकार क प्रबन्ध काव्य लिखन की ओर ध्यान नही दिया।

गीति काव्य

काव्य अपने आप म ही हित कर (शिव) एव आनद दायक (सुदर) होता है। अगर काव्य म लयात्मकता भी समावेश कर दी जाय तो सोन म सुगन्ध हो जाय। काव्य का और सगीत का सम्ब ध बहुत प्राचीन काल स रहा है और आज भी है। यही कारण है कि हम विनय पत्रिका" को पढकर उसस काव्य का आनद ले लते है पर साथ ही उस गा कर सगीत का भी आन द लते हैं। इस दृष्टिकोण का ध्यान म रखत हुए यदि हम बीकानेर के काव्य को देखें तो हमारा ध्यान कुछ गीतकारो पर अवश्य जाता है जिन्होने कविताए और गीत दोनो लिखे हैं और उन्ह कवि सम्मेलनो म अच्छी प्रकार सुनात है। गीतकारो और उनके गीतो को जानन स पहल यह जरूरी है कि हम गीति काव्य को अच्छी तरह स समझ लें।

जस कि पहल लिखा जा चुका है कि मुक्तक क दो भेद होन है पाठय और गेय। इसी गेय को ही गीति काव्य (प्रगीत काव्य) कहते है। अग्रेजी म

प्रगीत काव्य को लिरिक (lyric) कहते है। महादेवी वर्मा के अनुसार "साधारणत गीत व्यक्तिगत सीमा मे तीव्र सुख दु खात्मक अनुभूति का वह शब्द रूप है जो अपनी ध्वन्यात्मकता मे गेय हो सके।'[1] गुलाब राय ने प्रगीत काव्य की परिभाषा बताते हुए लिखा है "सगीतात्मकता और उसके अनुकूल सरस प्रवाहमयी कोमल का त पदावली, निजी रागात्मकता (जो प्राय आत्मनिवेदन के रूप म प्रकट होती है), सक्षिप्तता और भाव की एकता। यह काव्य की अन्य विधाओ की अपेक्षा अधिक अ त प्रेरित (Spontaneous) होता है और इसी कारण इसमे कला होत हुए भी कृत्रिमता का अभाव रहता है।"[2]

उपयु क्त परिभाषाओ के अनुसार गीति काव्य क निम्नलिखित तत्व निर्धारित किय जा सकते हैं —

१ आत्माभिव्यक्ति
२ विचारो की एकता
३ जीवन की मार्मिक अनुभूति
४ सक्षिप्तता
५ कोमल का त पदावली
६ सगीतात्मकता

साधारणतया गीत दो प्रकार के होते हैं। एक साहित्यिक गीत और दूसरा लोक गीत। साहित्यिक गीतो म रचयिता का निजीपन अधिक रहता है। लोक गीतो मे रचयिता का निजीपन तो रहता है किन्तु इन म साधारणीकरण और सामा यता कुछ अधिक रहती है अत वे वैयक्तिक रस की अपक्षा जन रस उत्पन्न कर सकते है। साहित्यिक गीत भी मुख्य रूप म दो प्रकार क होते हैं। प्रथम शुद्ध सवेदनात्मक गीत जैस कबीर मीरा और तुलसी के 'विनय पत्रिका' और दूसर कथाश्रित गीत जैस सूर क नीना सम्ब धी पद [3]

डा० शकु तला दुब न गीति काव्य का विषय क आधार पर छ भागो म विभाजित किया है—प्रेम क गीत भक्ति प्रधान गीत विचारात्मक गीत बुद्धि प्रधान गीत प्रकृति क गीत और सामाजिक गीत।[1]

पाश्चात्य विद्वानो द्वारा भी गीति काव्य क कुछ रूप निर्धारित किय

१ महादेवी वर्मा का विवेचनात्मक गद्य— पृष्ठ १४७
२ गुलाब राय—काव्य क रूप ' ११०
३ गुलाब राय—काव्य क रूप— पृष्ठ १११-१ -
४ डा० शकु तला दुबे—काव्य के रूपस्रोत और उनका विकास पृष्ठ १९

गय हैं ।[1]

१ चतुर्दशपदी, सानट (Sonnet)
२ सबोधन गीत ग्रोड (Ode)
३ शोक गीत एलिजा (Elega)
४ व्यग्य गीत सटाइर (Stire)
५ विचारात्मक रिफ्लेक्टिव (Reflective)
६ उपदेशात्मक डिटेक्टिव (Diadactive)

इन सब गीत प्रकारो मे केवल सानेट म आकार की प्रधानता होती है (चौदह पक्तिया होती है) और शेष सब मे विषय की प्रधानता रहती है । पाश्चात्य विद्वाना न जो गीति काव्य के रूप माने है आज सभी हि दी म मिल जाते हैं ।

सन १९४७ से लेकर अब तक बीकानेर जिल मे गीति काव्य न भी कविता का साथ दिया है । कविता की तरह गीति काव्य म भी समय पर मोड आते गये हैं । यहा के लगभग सभी कवियो न गीत लिखे हैं ।

प्रेम जीवन की सबसे मधुर सबस सुन्दर सबस सबल और सबसे अनोखी अनुभूति है । इसी प्रेम की भावना स प्रभावित होकर मानव कवित्वमय बना और उस गीत काव्य निर्माण की प्रेरणा मिली । गीति काव्य प्रेम पूर्ण हृदय की सच्ची वाणी है । जिस कवि न प्रेम की ज्वाला मे अपन को तपाया नही उसम सच्चे गीति काव्य लक्षण नही प्राप्त हुए । गीति काव्य जितना प्रेम भावना को लेकर निर्मित हुआ है उतना अ य किसी भाव को लेकर नही । प्रेम प्रधान गीति काव्य एक आर शृ गारिक और दूसरी ओर देश भक्ति की भावना स आपूर्ण है ।

प्रेम के दो पक्ष होत है एक सयोग और दूसरा वियोग पक्ष । किसी न प्रेम की मादकता का वर्णन किया है तो किसी ने उसकी विरह व्यथा का । बीकानेर के काव्य म दोनो प्रकार क गीत मिलते है —जैसे

'हम रहे न रहे बात चलती रहे
प्यार जिसको मिला जि दगी भा गई ।
तुम रहो न रहो पर यही सच रह
रूप जिसका रोशनी आ गई ।
भव्यता कुछ दिव्यता कुछ नही
रूप देखा तुम्हारा मजा आ गया ।'[2]

---

१ गुलाब राय—काव्य के रूप– पृष्ठ ११२
२ भगत सक्सेना–मैं तुम्हारा स्वर– पृष्ठ ५६

इसी प्रकार का यह प्रेम सम्बन्धी गीत है —

"पाकर तेरा प्यार आज मैं
नई बहारें लाना चाहूं
तूने गीत दिये जो मुझको
नये राग म गाना चाहू
पर वाणी के तार टूट जाते हैं
गोरी गीत अधूरे रह जाते हैं।"[1]

पर मानव हृदय को जितना विरह प्रभावित करता है उतना संयोग नहीं। इस दृष्टि से जो विरह व्यथा को लेकर लिखे गये गीत हैं वे कहीं अधिक प्रभाव डालते है। संयोग की सीमा बांधी जा सकती है पर वियोग की नही —

'घड़िया बांध लिया करती है
सीमाए संयोग की,
किन्तु गगन तक खिच जाती है
रेखा विधुर वियोग की।'[2]

यहा तक कि कवि ने पीडा को जीवन का एक मात्र सहारा बना लिया है —

पीडा का हर एक इशारा
जीने का बन गया सहारा।[3]

प्रेम प्रधान गीति-काव्य मे दूसरी ओर देश प्रेम के गीत भी आते हैं। जब कोई कवि देश प्रेम एव राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण होकर गीत लिखता है तब उसी भावना के अनुरूप हम उसे देश प्रेम या राष्ट्रीय गीत कहते है। इस प्रकार के गीतों म प्राय वर्णानात्मकता रहने के कारण अन्य गीतो से लम्बे होते हैं। इन गीतो के साथ युद्ध के गीत भी लिखे जाते है। इन राष्ट्रीय गीतो मे अतीत वैभव की स्मृति व भविष्य का उज्ज्वल चित्र एवं युद्ध गीतो म उन वीरो की स्मृति की प्रधानता रहती है जिन्होने देश की रक्षा के लिए अपने प्राण दे दिये। इन गीतो म कवि शोक प्रकट नहीं करता अपितु श्रद्धांजलि के रूप मे उनकी सराहना करता हुआ वीरो का उत्साह बढ़ाता है।

बीकानेर म देश प्रेम एव राष्ट्रीय भावना के गीत लिखे गये है।

---

१ हरीश भादानी-अधूरे गीत-पृष्ठ १८
२ हरीश भादानी-सपन की गली पृष्ठ १७
३ मगन सक्सेना-मैं तुम्हारा स्वर-पृष्ठ २४

अधिकतर ये गीत चीन आक्रमण और पाक आक्रमण के समय के हैं। इनके अतिरिक्त भी समय समय पर इस प्रकार के गीत सामने आते रहे हैं।

> 'डिक्टेटर का प्रथम शत्रु है मेरा हिन्दुस्तान
> मेरा हिन्दुस्तान मुक्ति के दूतों का भगवान
> प्रेम का मन्दिर स्नेह का उपवन मे है सत्य का गीत
> इसके कण कण म गूंजा नित मिलन भरा सगीत।"[1]

कवि की दृष्टि म भारत वष त्याग की मूर्ति है। यह ऐसा देश है जिसने स्वय कष्ट झेल कर दूसरो को सुख शान्ति और सम्मान दिया है।

> 'मेरे देश न ससार को सम्मान दिया है
> सुख शान्ति स्नेह, शक्ति का वरदान दिया है
> माना कि य रहा है खुद हमेशा कष्ट मे
> इस पर भी इसने चैन का सामान दिया है।'[2]

देश प्रेम के गीतो म समूह गान भी गाये जाते हैं। जब वीर युद्ध को चलते हैं तो इस प्रकार के गीत गाये जाते हैं —

> 'हमारी दोस्ती म जो हमे चाहे वही कहले
> मगर जब हम बिगडते हैं दिशाए फडक जाती है
> हमारे दुश्मनो की छातिया भी तडक जाती है।'[3]

कवि वीरो क शरीर म बहन वाले रक्त की महिमा बताता है —

> हमारी देह म वीरागनाओ का लहू बहता
> सदा जो आग स खेली उन्ही का दूध यह कहता
> करोडो के ऊपर जनतन्त्र का युद्ध हो नही सकता
> हमारी शान्ति का दुश्मन घरो म सो नही सकता।"[4]

इस प्रकार हरीश भादानी रामनरेश सोनी आदि ने भी राष्ट्रीय गीत लिखे हैं।

प्रकृति और मानव का सम्बन्ध आदि काल से ही रहा है और काव्य के आदि काल से ही मानव प्रकृति के गीत गाता आ रहा है। गीति काव्य म प्रकृति

---

१ कन्हैया लाल किशोर — मैं एकाकी नहीं चलूंगा — पृष्ठ — ३०
२ कन्हैया लाल किशोर — मैं एकाकी नहीं चलूंगा — पृष्ठ — ३२
३ मदन मकरन्द — मैं तुम्हारा स्वर — पृष्ठ २२
४ " " " , २४

का आलम्बन की अपेक्षा उद्दीपन का चित्रण अधिक हुआ है। कवि के सुखद भाव प्रकृति को सुखद रूप में और उसके दुःखद भाव प्रकृति में दुःखद भाव का प्रतिबिम्बित देखते हैं। इन कवियों ने प्रकृति सम्बन्धी गीत लिखे हैं —

"नीलिमा आकाश की, सागर तरंगो पर उतर कर
पूर्व दृष्टा नयन की, बन वाष्प जो छा जाय भू पर।"[1]

प्रकृति सम्बन्धी गीत 'अधूरे गीत" और "मैं गीत सुनाता जाऊंगा" आदि में भरे पड़े हैं। इन गीतों में अधिकतर छायावादी ढंग के गीत हैं।

इन गीतों के अतिरिक्त बीकानेर में कुछ प्रगतिवादी गीत भी लिखे गये हैं। इस प्रकार के गीतों में अधिकतर शोषितों की कारुणिक स्थिति का चित्रण है और साथ ही विद्रोह का स्वर भी जैसे —

ये धूल भरे काले नंगे गोदी के लाल सिसकते हैं।"[2]
मा की छाती से लाल रक्त जब पानी बन उड़ जाता हो।
फूलों की तरह हंसी हंसता जब शिशु रो रो मर जाता हो।[3]

आज समय बदल गया है और समय के साथ साथ काव्य का बदलना भी आवश्यक हो जाता है। आज के गीतों के विषय में भी परिवर्तन आ गया है। जहां पहले प्रेम गीत और प्रकृति के गीत लिखे गये वहां आज नगर बोध के और सामान्य जीवन का चित्रण गीतों में होने लगा है। आज अन्न प्राप्ति की एक समस्या बनी हुई है उसके साथ ही देश की बढ़ती हुई जनसंख्या इस समस्या को और जटिल बनाती जा रही है।

नगर-बोध के गीतों में आज शहरी जीवन का चित्रण है —

'भोर जगी
घर घर में चूल्हे हीटर में
होड़ लगी।"[4]

"शहर सो गया है
जो रंग रेखे
कंगूरा छतों पर
बिदाती हुई सांझ ने

---

१ मेघराज मुकुल–उमंग — पृष्ठ ४
२ हरीश भादानी–अधूरे गीत — पृष्ठ १४
३ मेघराज मुकुल–उमंग — पृष्ठ १८
४ वातायन—आज का गीत अंक, अप्रेल, १९६५–पृष्ठ ५०

चिमनियों से उठा धुआ
पसर धो गया है।"[1]

नगर बोध के इन गीतों मे हर प्रकार के जीवन का चित्रण हुआ है। जहा एक ओर सायरन बजने पर हलचल सी मच जाती है —

समय पर बजा
ट्यून के पीस सा सायरन

+ + +

बेतहाश इधर स उधर
इकली उभरती अलग थाप।"[2]

वहा दूसरी ओर रात के सन्नाटे मे होने वाला दुष्कर्म भी नही बचा है —

कितने बढ हाथ काले
कुआरे सिन्दूर पर
बासती रात की मदिर सास
प्यास पर प्यास से जाम भर
मसल दी गई नव कली।"[3]

भूख ने मानव को आज किस तरह से व्यस्त कर दिया है। इसका चित्रण भी गीतो मे हुआ है। साथ ही आज के युग म मानव मानव के लिये अजनबी बन रहा है। गीतकार उसस दिल खोल कर मिलना चाहता है।

'आदमी अजनबी आदमी के लिये
तुम्हे मन खोल कर मिलने बुलाया है।"[4]

बीकानेर के काव्य मे इन गीतो म एक स्वाभाविक ढग स विकास दृष्टिगोचर होता है। प्राकृतिक गीतो मे स्वय का मन ही बहल सकता है और किसी प्रकार की उपलब्धि उसस होना सम्भव नही है। लेकिन आज बीकानेर म उस प्रकार के गीत नही लिखे ज रहे है अपितु एस गीत लिखे जा रहे है जिनमे या तो सामा य जीवन का चित्रण है या किसी समस्या का वर्णन है। इन गीतो

---

१ वातायन—आज का गीत अक अप्रैल, १९६५—पृष्ठ ३१
२ — , पृष्ठ ३५
३ — पृष्ठ ३७
४ — गीत अक अप्रैल १९६६—पृष्ठ ४३

मे नय उपमानो का प्रयोग हुआ है । यदि प्रकृति के किसी उपमान को लिया है तो वह भी नय ढग स । कविता क साथ साथ आज के गीतो मे भी व्यग्यात्मकता आ रही है । आज के गीत और कविता का कथात्मक और शिल्पगत अ तर प्राय समाप्त सा हो गया है । मूल रूप मे वह काव्य है । गीतकार रूढिया तोड चुका है । अत वह छ द के ब धना से अपने आपको मुक्त करता जा रहा है । तुक विषयक सगीत आग्रह शिथिल होता जा रहा है ।

मुक्तक काव्य

का य के प्रब ध वग मे एक ओर गीति काव्य को रखत है और दूसरी ओर मुक्तक को । सस्कृत म मुक्तक काव्य रूप की चर्चा प्रथम अग्नि पुराण म मिलती है —

मुक्त श्लोक एकैकश्चमत्कारक्षय सताम् ।[1]

इसके बाद मे बहुत से विद्वाना ने इसकी परिभाषा दी है और काव्यानुशासन म मुक्तक का अथ और भी स्पष्ट हो जाता है ।

"अनि बद्ध मुक्तकादि"[2]

साहित्य दपणकार ने मुक्तक को सवथा मुक्तक के ही अथ मे लिया है —

"छ दो बद्ध पद पद्य तेन मुक्तेन मुक्तकम्"[3]

मुक्तक काव्य के दो भेद किय जाते हैं । एक पाठय मुक्तक और दूसरा गय । गेय मे निजी भावातिरेक की मात्रा कुछ अधिक रहती है । और पाठय मुक्तक म कवि बात को एक निरपेक्ष द्रष्टा या वकील के रूप म कहता है । पाठय मुक्तक प्राय सूक्तियो के रूप मे आते हैं । ऐसे मुक्तक प्राय नीति विषयक, शृ गार विषयक, वीरता विषयक होते हैं ।[4]

गीति काव्य मे भाव पक्ष की प्रधानता रहती है परन्तु मुक्तक का य मे कवि की अनुभूति ज्या की त्या बाहर नही निकलती अपितु उसकी अनुभूति पर बौद्धिकता एव शास्त्रीयता का भार बढ जाता है । अत उसम गीति काव्य का सा स्वरूप नही झलकने पाता । ऐसे का य म कवि का ध्यान अनुभूति क साथ साथ

१— अग्नि पुराण अध्याय ३३७ श्लोक ३३ पृ० — ४२१
२— हेम च द्र काव्यानुशासन, अध्याय ८ सूक्त ५ ६ पृ० ४४६
३— विश्वनाथ कविराज साहित्य दपण परिच्छेद ३१६
४— गुलाब राय — काव्य क रूप — पृ० — १०८

बाह्य अलंकरण की ओर भी रहता है। इसमें कवि बाह्य सौंदर्य की ओर अधिक सचेष्ट रहता है। गीति काव्य में आन्तरिक हृदयावेग को स्थान देना उसका प्रथम कार्य होता है। अतः स्पष्ट है कि मुक्तकों में आत्मनिष्ठता का अभाव हो जाता है। कवि अनेक प्रकार से अभिव्यंजित रूप को सवारने लग जाता है जिससे अनुभूति पीछे रह जाती है। यही आत्माभिव्यंजना का तत्व गीति काव्य को मुक्तक से भिन्न करता है।

पर इसका यह अर्थ नहीं है कि मुक्तक में किसी भी प्रकार का भाव पक्ष नहीं होता। भाव पक्ष के अभाव में किसी भी काव्य की कल्पना करना ही व्यर्थ है। मुक्तक में कवि के भावों पर कवि कर्म का आवरण रहता है। मुक्तक में गूढता भी रहती है। कवि अपना पांडित्य इसी में समझता है कि वह अपनी बात को अधिक से अधिक गूढ बनाने में किस प्रकार से सफल हो सकता है। इस प्रकार से उसमें चमत्कार की प्रधानता आ जाती है। कला पक्ष की प्रधानता हृदय नहीं बुद्धि का हल्का सा सहारा लेकर अनुभूति का महल खडा करता है। परन्तु मुक्तककार के यहां तो बुद्धि के नीचे अनुभूति दब जाती है। नीति उपदेश और आचार सम्बन्धी बातों से हृदय का नहीं बुद्धि का सम्बन्ध है।

मुक्तक में भाषा का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। मुक्तककार की भाषा को समास युक्त होना आवश्यक है। क्योंकि कवि को छोटे से आकार में गागर में सागर भरना होता है। कवि को संक्षेप रूप में प्रत्येक बात को कहना आवश्यक हो जाता है। मुक्तक में चमत्कार और सौन्दर्य के लिए मुहावरों का प्रयोग भी किया जाता है।

बीकानेर के कवियों ने गीतों के साथ साथ मुक्तक भी लिखे हैं। यहां पर अधिकतर मुक्तक राष्ट्रीय, प्रेम सम्बन्धी जीवन दर्शन सम्बन्धी और नीति सम्बन्धी मुक्तक हैं।

राष्ट्रीय मुक्तकों में कुछ तो राष्ट्रीय गौरव के हैं।
राष्ट्रीय एकता की ओर कवि ने अपने मुक्तकों में इशारा किया है —

एक वंश, एक देश एक भाग है
एक साथ एक सांस एक राग है
आन के लिये पचास कोटि प्राण में
एक जोश एक रोष एक आग है।'[1]

१— हरीश भादानी — हंसिनी याद की पृ० — ६७

कुछ ऐसे मुक्तक हैं जिनमे दुश्मनो को चेतावनी दी गई है —

इस उत्तर दिशा को छोडना,
तुमको बहुत महगा पडेगा
सिर्फ हमसे ही नही तुमको,
हवाओ से भी लडना पडेगा।'[1]

कवियो ने परम्परागत मान्यताओ को भी मुक्तको के माध्यम से झकझोरा है –

'जब जब भी गया मन्दिर लगा ऐसा,
आदमी भला है देवता ठगो से।"[2]

कुछ मुक्तक आत्म परक भी लिखे गये हैं। इसमे कवि अपनी ही बात कहता है। चाहे वह अपने प्रेम की हो, चाहे दर्द की और चाहे अपने विश्वास की। कवि को अपने पर पूर्ण विश्वास है कि वह अपने उद्देश्य को छोड नहीं सकता चाहे कुछ भी क्यो न हो जाय, इसलिए वह कहता है —

"तुम मेनका बनो चाहे रम्भा
मेरी कलम रूप की दास नही
कितनी भी सिंगार करो, मुझको
डिगा सकता मेरा विश्वास नही।'[3]

कवि अपने आप को दर्द से जकडा हुआ समझता है और उसी दर्द मे उलझ गया है।

सुबा के आकडे सभी बोले बिना निकल गये,
और हम उलझ रहे हैं सिर्फ दर्द के हिसाब मे।'[4]

बीकानेर मे प्राय सभी कवियो ने जिन्दगी की व्याख्या करने का प्रयत्न किया है कभी जिन्दगी उसे फूल दिखाई देती है तो कभी वह शूल दिखाई देती है —

"जिन्दगी है फूल भी और शूल भी।
जिन्दगी ऊंची शिखा है भूल भी।।

१— हरीश भादानी — हसिनी याद की   पृ० ८६
२— योगेन्द्र किसलय का एक मुक्तक
३— " " "
४— हरीश भादानी — हसिनी याद की   " २७

जिन्दगी को देख दोना आखो से –
जिन्दगी मझधार भी है कूल भी ।।"[1]

इनके अतिरिक्त कुछ अन्य विषयो पर भी मुक्तक लिखे गये हैं जसे गरीबी पर, प्रकृति पर, धार्मिक पाखण्डो आदि पर । परन्तु ऐसे मुक्तको की अधिकता नही है । कुछ मुक्तक तो ऐसे हैं जो केवल शब्दो के चमत्कार म ही समाप्त हो जाते हैं । इनमे पाठक शब्दो के चमत्कार को ही देख पाता है अय किसी वस्तु की प्राप्ति नही कर पाता । यहा के मुक्तको म कही पर क्लिष्टता नही है । इसका कारण यह है कि इन पुस्तको की भाषा बहुत ही सरल है । मुहावरा आदि का प्रयोग यहा क मुक्तको म नही हुआ है । बीकानेर मे अधिकतर चतुष्पदी मुक्तक लिखे गये है । यहा के अधिकतर मुक्तको म प्रथम तीन पक्तियो में सीधा सादी बात कही जाती है और चौथी पक्ति मे बात को इस प्रकार स घुमाकर कहा जाता है कि वह प्रभावशाली हो जाती है । इस प्रकार यहा के मुक्तको की चौथी पक्ति बहुत ही महत्वपूर्ण एव प्रभावशाली होती हैं । कुछ मुक्तक एसे भी हैं जिनकी चारो पक्तिया समान महत्व की होती है । यहा पर कुछ दो पदी मुक्तक भी लिखे गये हैं ।

यहा क कवियो ने इन मुक्तको म परम्परागत छन्दो को छोड दिया है और किसी भी प्रकार के नवीन ब धन को भी स्वीकार नही किया है । यहा क मुक्तक लय और तुक मे बधे हुए हैं पर तु लय और तुक परम्परा स मेल नही खाता ।

==

१— रामनरेश सोनी का एक मुक्तक

बीकानेर काव्य की अन्तश्चेतना (कथ्य)

कवि अपने युग का चितेरा होता है । युग म जो जो सामाजिक घात प्रति-घात, सास्कृतिक उत्थान-पतन, ऐतिहासिक उत्कष अपकष और धार्मिक हेर-फेर आदि चलते रहते हैं कवि उन पर दष्टि रखता है और कभी तो वह उनका यथार्थ चित्र प्रस्तुत कर देता है कभी वह इन्हे इस रूप मे प्रस्तुत करता है जिस ओर वह उस समाज को ले जाना चाहता है और कभी कभी वह परम्परा ग्रस्त हाकर युग स बहुत पीछे रह जाता है — अतीत म या किसी प्रवत्ति-विशेष म फसा रह कर उसी पर मुग्ध रहता है । इस प्रकार उसका भारी सामाजिक दायित्व है और सजक हाने के नाते वह इसका जितनी कुशलता स निर्वाह करता है उतना ही वह अपेक्षणीय बन भी जाता है । उस पर समाज अपनी दष्टि लगाय रहता है और वह समाज को अपनी दष्टि म समाय रहता है । ऐसी पारस्परिक स्थिति से कवि का महत्त्वपूर्ण दायित्व हो जाता है ।

समाज व्यक्तियो की समष्टि है व्यक्ति प्रतिपल परिवतनशील है । उसके विचारा म चि तन म भावनाओ मे प्रत्येक क्षण परिवतन होता रहता है और जब यह परिवतन समस्त समष्टि मे व्याप्त हो जाता है तब वह सामाजिक चेतना का अग बन कर प्रकट होता है और यह सामाजिक चेतना भी व्यक्ति के साथ गतिशील होकर अपने युग को आगे बढाते चलती है पर इसकी गति उतनी तीव्र नहीं होती जितनी की व्यक्ति की ।

व्यक्ति की गति और समाज की गति का क्रम यह है कि प्रथम अधिक गतिशील होता है और द्वितीय म थर गति से आगे बढता है । इससे समाज व्यक्ति से बहुत पिछड जाता है जब यह दूरी विस्तत हो जाती है तब कवि या किसी सामाजिक नेता का कत्तव्य हो जाना है कि उस समाप्त करे । इसलिए समाज म जब — जब ऐसी अवस्थाए उत्पन्न हुई है तब तब ऐसे व्यक्तिया ने आकर ऐसी सामाजिक क्रा तियाँ उत्पन्न की जिससे समाज और व्यक्ति म सामजस्य हो सका है । महात्मा गाधी, दयान द सरस्वती हमारे युग के ही ऐसे

मनीषी है जिन्होंने दोनों के बीच बढ़ती हुई खाई को भरने का प्रयास किया और उन्हें सफलता भी प्राप्त हुई है।

साहित्य जो समाज का चित्र होता है अपनी चाल में भी कुछ सामाजिक चाल के समान होता है और यदि स्थान विशेष का साहित्यकार परिस्थिति वश देश के साहित्यकारों से अलग अलग पड़ा रहे तो उसकी गति और अधिक मन्थर हो जाती है। इससे व्यक्ति और समाज आगे बढ़ने पर भी साहित्य आगे नहीं बढ़ पाता और तब वह आकर्षण हीन बन कर अपने प्रकृत आदर्श से च्युत हो जाता है और उसमें पाठक ऊबने लगता है। रीति काल का साहित्य बहुत दूर चल कर समाज के लिये इसी प्रकार का बन गया था।

विषय वस्तु की नवीनता के साथ साथ कवियों के लिये यह भी आवश्यक है कि वह अपने शिल्प पक्ष को भी नवीन और वस्तु के अनुरूप बनाये रखें। यदि भाषा भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम है तो विषय वस्तु में परिवर्तन के साथ शिल्प में परिवर्तन अपेक्षित हो जाता है ऐसा न होने पर नवीन विषय भी अनुरूप माध्यम के अभाव में अपनी प्रभावक्षमता खो देता है और पाठक में साहित्यिक रुचि बनाये रखने में असमर्थ रहते हैं। भारतेन्दु युग के साहित्यकार ने जब नवीन विषयों को पुराने चोले में प्रस्तुत करना आरम्भ किया तो वह इतना आकर्षक नहीं लगा और इसीलिये बाद में द्विवेदी युग की समाप्ति के साथ अनेक रूपात्मक प्रयोग हिन्दी जगत में हुए। इस प्रकार काव्य मे विषय वस्तु और शिल्प दोनों में सामंजस्य अपेक्षित है। जहां ऐसा नहीं होता वहां कलाकृति पंगु-सी लगने लगती है।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि स्वतन्त्रता पूर्व का युग बीकानेर जिले में वाणी-स्वतन्त्रता का युग नहीं था। सभी रियासतों मे एक विशेष दर्रे के चारणी कवियों को तो प्रोत्साहन और आश्रय मिल रहा था पर अन्य विषयों को लेकर लिखने वाले कवियों को न तो प्रेरणा प्रदान की जाती थी और न उन्हें तत्कालीन नरेशों की ओर से स्वीकृति और मान्यता ही मिली थी। इसलिये या तो कलाकार जन्मते ही कुचल दिये जाते थे या वे अपनी सहज प्रतिभा को इधर उधर मोड़ कर व्यक्त कर पाते थे। कभी कभी तो वे चारणी ढंग से भी कविता या गद्य लिखने के लिये प्रेरित होते थे। वे अभिव्यक्ति के दोनों साधनों के अभाव में प्रकाशन और कवि सम्मेलनों मे कविता पाठ के अभाव में निराशामय जीवन

व्यतीत करते से तथा अपने कवि रूप की हत्या करत से प्रतीत होत थे। ऐसी विषम परिस्थितियो मे भी जिन कवियो ने काव्य जैसी पुनीत प्रतिभा की सेवा करन का प्रयत्न किया है उनमे शम्भुदयाल सक्सेना आदि का उल्लेख पहले हो चुका है। उन सभी कवियो न या तो अपनी कविता क लिय ऐस विषय चुने जो अतीत से सम्बध रखत हैं अथवा जिनका तत्कालीन सामाजिक चेतना से कोइ सम्बध नही और जहा कही उ होने ऐसे विषयो को भी चुना ह जिन पर शेष भारत म निर्भीकता स कविता लिखी जा रही थी वहा उ हाने कुछ ऐसी साहित्यिक युक्तियो को अपनाया है जो इन परिस्थितियों में अपेक्षित होती है।

पर ऐस अकुश मे भी कुछ ऐसे विचारक और कवि ज म लते है जो क्वल अपने हृदय की सच्चाई पर जीत हैं, उनकी अभिव्यक्ति को किसी भी प्रकार अवरुद्ध करना राजतन्त्र की शक्ति की परे की बात होती है। समाज म ऐस व्यक्तियो क्रातिया की है और काव्य म ऐसे ही व्यक्ति नवीन दिशा प्रस्तुत करत हैं। आचाय च द्रदेव प्रभति कवि इसी श्रेणी क हैं। उ होने वह वहा जो उनके हृदय की अनुभूति थी और उसकी शैली मे भी प्रच्छन्नता और परोक्षता क स्थान पर प्रत्यक्षता और ऋजुता मिलती है। ऐस ही कवियो ने इस क्षेत्र के काव्य को शेष हिदी काव्य से सम्बद्ध किया और इस प्रकार हि दी साहित्य म जो कुछ हो रहा था उसका सक्षिप्त सस्करण यहा भी दखने का मिलता है।

देश की स्वतन्त्रता क साथ जब राज्य म भी स्वतन्त्रता मिली ता अनक हृदय सहसा अनेक दिशाओ म बह चले और इसलिए अनक काव्य विषयो पर कविता लिखी जाने लगी। जिन राजनैतिक विषयो को छूना तक पाप था उन पर अब उ मुक्त वाणी वैभव प्रकट हुआ। सामाजिक विषयो म भी अनेक रूपता आयी। कवि के अभिमान का हृष और उल्लास, प्रेम और वदना, घृणा और क्रोध आदि अनेक भाव अनेक दिशाआ म बह चले—अपनी निश्चित परम्परा का छोड कर नव पथ निर्माण मे अग्रसर हुए। शेष राष्ट्र से सम्बन्ध स्थापित होन स तजी के साथ वे सभी विषय और काव्य रूप बीकानेर म प्रकट हुए जो अब तक यहा प्रवश नही पा सकने थे। इस प्रकार कविता की अवरुद्ध चेतना सहसा बहुमुखी होकर प्रकट हुई और इसन एक आर ता पुराने कवियो को नव विषय मिने और दूसरी ओर इस क्षेत्र म नवीन कवियो का उदय हुआ।

बीकानेर के काव्य म प्रकृति चित्रण —

मानव और प्रकृति का सम्बन्ध आदि काल से रहा है। जन्म से मत्यु तक मानव प्रकृति के प्रागण म ही सास लेता है। प्रारम्भ मे प्रकृति अपनी ममता मयी क्रोड मे मानव को धारण करती है और उसका पोषण करती है। प्रकृति के नाना रूपो के साथ कवियो न अपना र गात्मक सम्बन्ध स्थापित किया है और काव्य रचनाओ मे प्रसगानुकूल प्रकृति का उपयोग भी किया है। प्रकृति की गति विधि मे मानव की गति विधि है और मानव की गति विधि मे प्रकृति की गति विधि प्रारम्भ से ही मिलती है। कविता कामिनी के शृ गार मे प्रकृति ने अपना सर्वाधिक योग प्रदान किया है। हिन्दी काव्य में छायावाद से पूव भी प्रकृति चित्रण हुआ है पर इस काल मे कवियो का मन प्रकृति – चित्रण म विशेष रमा है। इस काव्य म प्रकृति पर चेतनता का आरोप किया गया है।

बीकानर प्रकृति की अनुदारता का क्षेत्र है। इसलिए जहा देश क अ य कवियो से सरिता, निझर और पवता के सौ दय पर मुग्ध होकर प्रकृति का मनो हारी वणन किया है वहा बीकानेर का प्रकृति प्रेमी कवि यहा के रेत के बडे-बडे टीबा पर ही मुग्ध हो जाता है और उ ही म उस सौदय दिखाई देता है —

तुम इन्द्र पुरी से सुन्दर थे
मेरे मरुधर के सुखद ग्राम
तेरे रेतीले धोरो पर
उल्लास बिछाती सुबह शाम।"[1]

बीकानेर म श्रावण का महीना बहुत ही सुहावना माना जाता है।[2] इस महीने म यहां की मरुधरा पर एक विशेष प्रकार का सौ दय सा छा जाता है, चारा ओर की हरियाली प्रत्येक के लिए सुखदायी होती है और इस हरियाली से बीकानेर का कवि भी अछूता नही रहा है। राजस्थान म 'सावणियारी तीज'

१ मालदान मनुज – विप्लव गान पृष्ठ—३३–३४
२ यहा के श्रावण मास के लिए एक लोकोक्ति भी प्रसिद्ध है —
'सियालो खाटू भलो, ऊनालो अजमेर,
नागौर तो नित रो भलो सावण बीकानेर।'

का बहुत महत्त्व है। प्रकृति का उस समय का मनोरम दृश्य यहा के समाज मे आनन्द और उत्सव का समय होता है, जो तीज व त्योहार व झूला पर झूलने म प्रकट हाता है —

> "फिर" तीज्यो का त्यौहार सुखद
> सखिया के मादक गीत मधुर,
> झूलो के मस्त झकारा पर
> जाते उर क अरमान बिखर।"[1]

बसत ऋतु क स्वागत मे चारा ओर हरियाली फैल जाती है —

> 'पीपल की फुगनी पर बोली
> पचम स्वर मे कोयल काली,
> मादक मधु ऋतु के स्वागत म
> कोसा तक फैली हरियाली।"[2]

इस प्रकार से बीकानेर के प्रकृति प्रेमी कवियो ने यहा की प्रकृति को खुली आखा से देख कर उसका सौन्दय एव उमसे उत्पन्न होने वाले प्रभाव का सुन्दर चित्रण किया है।

हिन्दी काव्य म प्रकृति का जो परम्परा से वरान चला आ रहा है वैसा चित्रण भी बीकानर क कविया ने किया है। प्रकृति का मानवीकरण रूप द्रष्टव्य है —

> "दीप रजनी ने सजोया
> या दिवस दुख-अश्रु रोया ?
> रश्मि पट मे पाछ कर मुख
> थाम अचल का किनारा
> झिलमिलाता साघ्य तारा।"[3]
>
> \+ + +
>
> ऊषा स्वर्ण लुटाती आती सध्या जाती राग रचायें[4]

---

१ मालदान मनुज–विप्लव गान– पृष्ठ ३३
" " ,, ३३
३ शम्भूदयाल सक्सेना–रैन बसेरा पृष्ठ ६७
४ ' " –नीहारिका पृष्ठ ८२

प्रकृति पर से मानवीकरण के पर्दे को हटा कर उसको स्वतन्त्र रूप मे भी चित्रित किया है —

"तरू तरू पर है किसलय छाया
मादक है बस त लहराया"[1]

इनके अतिरिक्त भी इन कवियो ने प्रकृति को अन्य रूपो म भी चित्रित किया है। छायावादी काव्य मे प्रकृति के जिन रूपा का चित्रण हुआ है उन सभी रूपो का वर्णन बीकानेर क काव्य मे हुआ है। इस प्रकृति चित्रण की सबसे बडी विशेषता यह है कि इसमे स्थानीय रग की स्पष्ट झलक दिखाई देती है।

नारी एव प्रेम का चित्रण

नारी और प्रेम को लेकर विश्व मे जितना साहित्य रचा गया है उतना अन्य विषयो को लेकर नही लिखा गया। वीर गाथा काल में नारी युद्ध का केन्द्र बिन्दु थी। उस समय के अधिकतर युद्ध नारी को लेकर ही हुए हैं। भक्ति काल मे नारी को विषयासक्त का मूल हेतु होने से उससे विरक्त होने की ओर कवियो ने सकेत किया है। रीति काल मे कवियो की दृष्टि उसके नख शिख से दूर नही गई। नवीन काल से छायावादी कवियो ने नारी के सौन्दय एव प्रेम का वर्णन किया है जिसमे सूक्ष्मता और कोमलता है।

नारी का सौन्दय अनमोल है। बीकानेर का कवि कली मे व्याप्त लाली का कारण नारी सौन्दय ही मानता है —

कितनी सुन्दर हो, भोली हो, बडी निराली
कली-कली पर मुग्ध तुम्हारी निखरी लाली'।[2]

कवि को आज का फैशन पसन्द नहीं है वह तो अवगुण्ठन को ही पसन्द करता है —

'लाज तुम्हारी बची रहे प्रिये ! अवगुण्ठन म ही शरमाओ'।[3]

नारी के सौन्दय वर्णन का रूप भी बदल गया है। कवि लोग बहत पहले से नारी के अगो की उपमा कमल खजन पक्षो आदि से देते आय हैं। पर

---

१ आचाय चन्द्रमौलि— वीथिका—पृष्ठ ७८
२ माणक चन्द रामपुरिय— सदीप्ति— ' ११०
३ आचाय चन्द्रमौलि— वीथिका— ' २६

आज का कवि ऐसा नही करता है, वह नारी के समान दुनिया की किसी भी वस्तु को नही समझता है —

"यह सब झूठ है
कि तुम्हारे गालों और फूलो मे
कोई समानता है

× × ×

अब मैं यह समझ गया हू
कि तुम केवल 'तुम हो
और तुम्हारी समानता
दुनिया की
किसी भी दूसरी वस्तु से नही"[1]

नारी के कई रूप है, वह मा बहिन प्रेयसी सभी कुछ है। बीकानेर के कवियों ने नारी के सभी ही रूपा का चित्रण किया है पर तु अधिकता उसम प्रेयसी रूप की है। अन्य रूपा का चित्रण तो केवल राष्ट्रीय कविता म हुआ है। वहा नारी का प्रत्येक रूप राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत है और वह देश के लिये अपने भाई पति, पुत्र सभी को न्योछावर होने को कहती है। ऐसी कविता म मा अपन बेट से कहती है —

बेटा मेरी कूख उजागर तब ही होगी
जब तू मेरी भारत मा पर मर मिट जाएगा।[2]

मानव को नारी कभी देवी के रूप म दिखाई देती है तो कभी नागिन के रूप म और कभी अन्य रूपो मे। इतने अधिक रूपा के कारण वह नारी को समझने में असमथ है और वह सदैव मनुष्य के लिए एक पहेली बनी हुई है, जैसे —

"कौन हो तुम ?
जो कभी तो सुरभिमय करती
धरा को, गगन को कदराओ को—
अपनी केसरिया–कस्तूरी गध से

× × ×

---

१ रामदव आचाय — अक्षरा का विद्रोह — पृष्ठ ७३
२ मेघराज मुकुल — अनुगूज — ' २८

"कभी तुम सुलगती रहती इस तरह की
जैसे बद घर के कपडो मे लगी हो आग,
× × ×
कभी तुम असहाय सी लगती
धरा के वक्ष पर इस तरह कि
जैसे हो गई हो डाल नगी '[1]

इसके अतिरिक्त आज के कवि ने तो नारी को आत्महत्या का पर्याय मान लिया है —

'आत्म हत्या और नारी
दो समान-धर्मी पर्याय है
मेरे इस देश भारत मे ।
आत्म हत्या-बनाम नारी,
नारी पर्याय आत्म हत्या ।'[2]

स्वत त्रता प्राप्ति के उपरा त नारी को समानता का प्रश्न उठा और उसे भी सविधान से समानमताधिकार का अधिकार प्राप्त हुआ । इसस नारी आत्म निभर हो गई और साथ ही उसम पुरुप से आगे बढने की भावना प्रवल हुई । अन कवि का दष्टिकोण भी परिवर्तित हुआ और वह उसे प्रतिद्वन्द्वी के रूप मे देखन लगा —

"साथ-साथ रह चुके बहुत अब चले विरुद्ध दिशाओ को रथ
प्रतिद्वन्द्विनी बनो तुम नर की अधिकारो को तुम अपनाओ'।[3]

अधिकार लिप्सा मे डूबी हुई आज की नारी मानव से हर क्षेत्र मे आगे बढना चाहती है ।

नारी वर्णन के साथ-साथ बीकानेर के कवियो ने प्रेम का चित्रण भी किया है । प्रेम जीवन की सबसे सु दर सबम सबल और सबस अनोखी अनुभूति है । प्यार का आन द बहुत मधुर होता है —

मधुर है प्यार की भाषा
जिसे कहता सदा कोई

---

१ हरीश भादानी— सपन की गली— पृष्ठ २३ २४
२ रामदेव आचाय — अक्षरो का विद्रोह— " ७२
३ शभूदयाल सक्सेना— नीहारिका— पृष्ठ ८१

गहन गम्भीर अन्तर है
जहां खोया सदा कोई"[1]

प्रेम के संसार में घृणा और अविश्वास के लिए कोई जगह नहीं है। प्रेम में दिमाग की नहीं दिल की आवश्यकता है —

"तुम्हारे और मेरे बीच
कृत्रिमता का कोई पर्दा नहीं,
क्योंकि मैंने तुमसे
दिल से प्यार किया है,
दिमाग से नहीं।"[2]

प्रेम ही एक ऐसा है जो मनुष्य के हृदय के तारों को झंकृत कर देता है और इसकी सुगन्धि को संसार की कोई भी शक्ति रोक नहीं सकती —

'प्यार तो निर्बन्ध मादक गन्ध जिसका पथ बरजता कब कहां संसार है ?
प्यार मन के तार की झंकार कोमल और भीष्म शक्ति की तलवार है'।[3]

इस प्रकार से बीकानेर के कवियों ने नारी के विभिन्न रूपों उसके सौन्दर्य एवं प्रेम का वर्णन किया है।

राष्ट्रीय भावना का चित्रण —

जब कवि देश प्रेम की भावना में ओत प्रोत होकर काव्य का निर्माण करता है तो राष्ट्रीय कविता की सर्जना होती है। हिन्दी का यह सौभाग्य रहा है कि इसके काव्य में राष्ट्रीय भावना वीरगाथा काल से लेकर आज तक की कविता में प्रकट या प्रच्छन्न रूप में प्रवाहित हुई है। वीरगाथा काल के काव्य में यह भावना उतनी व्यापक नहीं दिखाई पड़ती जितनी की परवर्ती काव्य में दिखाई पड़ती है। इस समय के चारण भाटों ने अधिकतर अपने आश्रय दाताओं की प्रशंसा की है। भक्ति काल में तुलसी की कविता में यत्र तत्र राष्ट्र प्रेम के उद्गार भरे पड़े हैं। रीति काल के भूषण ने राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर अनेक मुक्तकों की सर्जना करते हुए राष्ट्र नायक वीर शिवाजी के दरबार में भी सम्मान पाया है। व्यापक राष्ट्रीयता का स्वरूप और भावना देश में सन १८५७ के स्व—

१ माणक चन्द रामपुरिया – मधुज्वाल— पृष्ठ ५
२ रामदेव आचार्य – अंधेरों का विद्रोह " ७२
३ माणक चन्द रामपुरिया – स्वरातीत— " ३४

त त्रता सग्राम मे देखन को मिलती है । चाह यह क्राति सफल नही हुइ, फिर भी इसस राष्ट्रीय भावना का देश म विकास हुआ । भारतन्दु काल स लेकर राष्ट्रीय भावना की कविता का विकास उत्तरोत्तर बढता गया और राजनैतिक परिस्थिति के अनुरूप कवियो की भावना मे नवीनता आती गई ।

बीकानेर के स्वातन्त्र्योत्तर काव्य पर भी एक दृष्टि डाले तो यह बात स्पष्ट हो जायेगी कि यहा का प्रत्येक कवि राष्ट्रीय भावना म ओत प्रोत होकर कवि कम मे प्रवृत हुआ है । देश के स्वतन्त्र होत ही यहा क कवियो की अवरुद्ध वाणी भी स्वत त्र हो गई और जो कवि बहुत समय स अपने हृदय म देश प्रेम की भावना दबाये बैठे थे उ ह इस काल मे अभिव्यक्ति मिल गई । युद्ध या अन्य किसी प्रकार से जब देश पर सकट आ जाता है तो राष्ट्रीय भावना का विकास अधिक होता है । ऐस समय म प्रत्येक व्यक्ति अपन दश के लिए मर मिटना चाहता है और कवि गण भी अपना कलम स दश म इस भावना का वमन करते हैं ।

बीकानेर क कवियो ने यद्यपि आलोच्य काल म राष्ट्रीय भावना स प्रेरित होकर कविताए लिखी, पर उसमे विशेष गति तब तब उत्पन्न हुई जब जब देश मे राष्ट्रीय जागृति आइ है । इसलिए बीकानेर के कवियो न एक तो उस समय राष्ट्रीय कविताए लिखी जिस समय देश स्वतन्त्र हुआ था । इस समय म देश वासियो क हृदय म प्रसन्नता की कोई सीमा नही थी, क्योंकि न जाने कितने वर्षों का परतन्त्रता के पश्चात देश स्वतन्त्र हुआ था । इस प्रसन्नता को कवियो न अपनी कविता क माध्यम स व्यक्त किया है —

> "मिट गई कालिमा है नभ स
> मस्तक पर कु कुम – राग विमल
> आई स्वतन्त्रता ले ऊषा,
> खिल गया देश का हृदय कमल । [1]

इस समय की कविता आनद और उत्साह स परिपूर्ण है । कवियो ने अपने देश के वैभव का बहुत वर्णन किया है, इसलिए वह वैभव पूर्ण भूमि पर बार बार जन्म लेना चाहता है —

> सरिताओ का दश हमारा यही हस होत हैं
> यही ओढ कर हिम की चादर शैल शिखर सोते हैं ।' [2]

---

१ आचार्य चन्द्रमौलि – वैजयन्ति पृष्ठ १
२ शम्भूदयाल सक्सेना – निहारिका— ८४ ८५

इस लिए वह चाहता है कि —

"इसका पग कीट भी होना मेरे मन भाता हो
उड़ते हुए वायु म इसके कण कण स नाता हो
फिर फिर जन्मू म पुन पर रहू न इसस न्यारा ।"[1]

यहा कवियों न यह बतान का प्रयास किया है कि भारत वप ने ही विश्व को मानवता का पाठ पढ़या है । स्वय कष्ट म रहकर भी दूसरा को सुख और शाति दी है —

"मेर देश न ससार को सम्मान दिया है
सुख-शाति, स्नेह भक्ति का वरदान दिया है
माना कि ये रहा है खुद हमेशा कष्टा म
इस पर भी इसने चैन का सामान दिया है'[2]

स्वतत्रता के उपरान्त देश पर दो देशा के आक्रमण हुए हैं और इन दोना अवसरा पर बीकानेर के कवियो ने बहुत सी कविताए लिखी है । अपनी मात-भूमि की रक्षा करने के लिए तथा वीरा म नया उत्साह भरने के लिए कविया न अपनी मातृ भूमि पर न्योछावर होने वाले वीरो को याद किया है —

"यहा शिवाजो, लक्ष्मी बाई, बलिदाना की कहे कहानी
यह प्रताप की जन्म भूमि, सघर्षों को दे रही जवानी ।'[3]

वह अपनी मात भूमि पर आंख उठान वाले शत्रु को कुचल देना चाहता है । वह अपने वीरो से यही कहता है —

नेफा और लद्दाख बुलाते
आज तुम्हे भारत के वीर
आते हुए लुटरा को तुम
बढ कर देना छाती चीर ।"[4]

आक्रमण के समय की कविताओ म शत्रु को भी चेतावनी दी है और

---

१ शम्भूदयाल सक्सना – नीहारिका— पृष्ठ १३
२ बल्लभेश दिवाकर – मैं एकाकी नही चलू गा " ३२
३ मेघ राज मुकुल — अनुगू ज — " ६
४ ओम केवलिया — शबनम — " ७३

उस उसकी दुबलता और भारतवष से युद्ध करने पर क्या फल मिलेगा वह भी पहल से ही बता दिया है। कवि अपन शत्रुओं को कामता है —

> "जाने कैसी मा न जन्म लिया था तुमको,
> जाने किस धरती न भार तुम्हारे भन
>
> + + +
>
> भूठ तुम्हारा जनक मा तुम्हारी है छलना
> कपट जान म गभ धारणा हुए तुम्हारी"[1]

कवि अपन शत्रु को पहले स ही सचेत कर देना चाहता है —

> सुन लो
> ससार सुनेगा विस्फोट को
> रोक नही तुम पाओग फिर
> वहत हुए जवानो को"[2]

इस प्रकार से बीकानेर म बहुत सी राष्ट्रीय कविताए लिखी गई है। आक्रमण काल म देश के प्रत्येक नागरिक का ध्यान देश की ओर रहता है और तब व्यक्तिगत स्वार्थो को छोड दिया जाता है। इस दृष्टि स कवियो का भी यह कत य हो जाता है कि वे भी अपन ग्रन्थ की जनता म राष्ट्रीय भावना का सचार करें। जिससे जनता देश की सुरक्षा म अधिक स अधिक योग दान कर सक। बीकानेर के कवियो न भी इन दोनो अवसरो पर अपन कत य का पालन किया है और नागरिको म राष्ट्रीय भावना का विकास भी किया है।

शोपक-शोपितो के प्रति प्रगतिवादी दृष्टि

यहा के कवि ने समाज को दो वर्गो म रख कर देखा है—शोषक वग एव शोपित वग। शोषक वग पूजीवादी व्यवस्था को बनाये रखना चाहता है। जब तक पूजीवादी व्यवस्था बनी रहेगी तब तक शोषण भी चलता रहेगा और जब तक शोषण चलता रहेगा तब तक शोषित वग अपना जीवन सुख से व्यतीत नही कर सकता। ऐसी स्थिति म शोषक और शोषितो क बीच गहरी खाई बनी रहेगी। यहा के प्रगतिवादी कवि यह नही चाहते कि एक व्यक्ति तो वातानुकूलित

१	मेघ राज मुकुल	— अनुगूज	—	पृष्ठ	४५
२	ओम केवलिया	— शबनम	—		८१

कक्षा म विश्राम कर और दूसरा सडको पर भोजन और वस्त्र के अभाव म सर्दी मे ठिठुरता रह । इस प्रकार से एक मनुष्य का खून चूस कर दूसरा मनुष्य सुख की नीद सोता रहे ऐसे व्यक्ति इन कवियो की दृष्टि मे मानव कहलाने के योग्य नही है —

"मानव होकर जो दानव का
है रूप लिय फिरते कराल ।"[1]

इसलिए ऐसे मानव को कवि 'नरक कीट', वासना पक मे सने, कलुषदाग आदि रूपो म देखता है —

अरे नरक के कीट ।
वासना पक निमज्जित ।

× × ×

'वसुधा के वपु पर रे, कलुष दाग तुम निश्चल
शोषक रे, दुर्दान्त दस्यु, गर्वोन्नत प्रतिपल" ।[2]

कवि की दृष्टि मे शोषको की स्थिति कौए और चील से श्रेष्ठ नही है —

"कौए और चील से शोषक,
भूखो का ले मास उड रह ।
प्रभुता के वरदान दीन की
आत खीच कर पट भर रहे ।'[3]

वह इन शोषको का वीभत्स चित्र प्रस्तुत करता हुआ कहता है कि य मानव को खाने वाले तथा लाहू पीने वाले हैं —

"क्या कभी सुना भी है तुमने
मानव, मानव को खाता है,
पीकर लोहू, चाटकर जीभ,
फिर हसकर दात दिखाता है । [4]

---

१ आचार्य चन्द्रदेव — पडितजी गजब हो रहा है— पृष्ठ ५६
२ मालदान देपावत मनुज— विप्लवगान— " ३२
३ मेघराज मुकुल— उमग— " २८
४ मालदान देपावत मनुज— विप्लवगान— " ३६

इस प्रकार स इन कवियो को समाज क उस वग से अत्यन्त घणा है जो समाज के दूसरे वग का शोषण करता है और उन्हे मानव नही समझता है। इनकी दृष्टि म सबमे नीच व्यक्ति शोषक है। इसलिए इन्होने अपनी कविताओ स इनक प्रति खूब घणा व रोष प्रकट किय है।

इन प्रगतिवादी कवियो ने जितनी अधिक घणा और रोष शोषक वग क प्रति प्रकट किया है, उतनी ही शोषित वग क प्रति सहानुभूति दिखाइ है और कारुणिक स्थिति का चित्रण किया है। शोषण से बढकर मानव क लिए और कोइ अभिशाप नही है। आज के युग म शोषण की चक्की क पाटो म पिसन वाले मजदूर किसान और पीडितो का विपन्न स्थिति का इन्होन वणन किया है —

> नगी पडी धरा थी पहले भूख स्वय अब नगी है।
> मा की छाती से चिपटे शिशु को जीन की लगी है॥
> प्यासी आखें बता रही है, खून चूकता जाता है।
> नगा भूखा ऐयाशी पर ब्याज चुकता जाता है॥ [1]

शोषक वग द्वारा शोषित वग को इतना अधिक कुचल दिया जाता है कि उसक बडे स बडे शोषण का भी विरोध नही कर सकता। ऐसी स्थिति मे शोषित वग अपनी विवशता के कारण उनके शोषण को सहन करता रहता है —

> "देखो वह शैशव पिसता है
> शोषण के तीखे आरा मे
> देखा वह यौवन बिकता है
> गली गली मे बाजारा मे।"[2]

शोषित अपग है और विवश है व तो केवल आह भर सकत है उसी का व्यापक प्रभाव कवि ने दिखाया है —

> "शोषित जन क उच्छवासो स
> वह काप रहा अपनी अम्बर।"[3]

इस ससार मे शोषितो का जीना तो वैस ही बहुत दूभर हो जाता है और अकाल

१ मेघराज मुकुल— उमग— पृष्ठ २०
२ मालदान दधावत मधुप— विप्लवगान— " ५६
३ " " " " " " ७८

म तो इसकी स्थिति और भी अधिक दयनीय बन जाती है तब तो इन्हे मृत्यु का ही आलिंगन करना पडता है। कवि ने बगाल के अकाल का वर्णन किया है —

> "लाखा मरते हैं बगाली,
> सब अन्न बिना, भूखे, जजर।"[1]

सारे जीवन कठिन म कठिन मेहनत करने वाले मजदूर को मत्यु के समय कफन भी नही मिलता। इसम बुरी स्थिति उन गरीबो की और क्या हो सकती है।

शोषिता म श्रमिक वग के अतिरिक्त कृषक वग भी आता है, जो श्रम तो बहुत करता है परन्तु रहता नगा, भूखा ही है। ऐसी विपन्नता मे वह अपने खेत म प्रसन्नता स काम नही कर सकता, क्योकि करके मार से आज वह दब सा गया है —

> "कर्मठ किसानो के खेतों पर
> आतक ध्वजा फहराती है
> इनके व देवस लगान देख
> कर मानवता थर्राती है।'[2]

शोषितो के करुण गान के साथ साथ शोषको का प्रभाव नारी के चारित्रिक पतन पर भी दिखाया गया है। उससे इन हीन काय के पीछे गरीबी का हाथ अवश्य रहता है। अपनी पट की ज्वाला को शान्त करने के लिए उन्हे यह सब कुछ करना पडता है और उसको बढावा देते है पैस वाल —

> 'वे उस दुकान पर जाते हे
> जिस पर यौवन बिकता रहता है
> पैसे पैसे के बदले म
> जो मिट्टी म मिलता रहता है।"[3]
>
> × × ×
>
> रूप का बाजार लगता है यहा पर, नित नई होकर बिका करती जवानी।[4]

इस प्रकार इन कवियो ने अपने चारो ओर तथा देश मे व्याप्त शोषक का चित्रण

---

१ आचाय चन्द्र देव— पडितजी गजब हो रहा है— पृष्ठ ५२
२ मालदान देपावत मनुज— विप्लवगान— " ३५
३ " " " " " ३६
४ आचाय चन्द्रदेव पण्डितजी गजब हो रहा है— पृष्ठ २७

किया है।

रूढियो एव परम्पराओ का खडन तथा सामाजिक क्रान्ति की भावना

बीकानेर के प्रगतिवादी कवियो ने सामाजिक और धार्मिक रूढियो का खडन किया है। समाज मे जितनी भी रूढिया एव परम्पराए हैं, ये सभी कवि इनसे मुक्त होना चाहते हैं। वास्तव मे इस विज्ञान के युग मे इन रूढियो का तर्क सम्मत समाधान नही मिलता है इसलिये वे पग पग पर प्रगति बाधक प्रतीत होती है। अत जब समाज उनको त्याग कर नवीन पथ का अनुसरण करता है तब कवि भी आनन्दमय स्वर मे कह उठता है —

'जीर्ण पुरातन परम्परा से पल्ला छूटा।
आज व्योम का प्रथम बार ध्रुवतारा टूटा।'[1]

× × ×

शक्ति खो बैठी पुरानी मान्यताए
आ रही सघर्ष करती सफलताए।'[2]

ये कवि लकीर के फकीर नही है। मूर्ति पूजा, धर्म के अन्य उपकरण इनकी दृष्टि मे तुच्छ है। वे इन सबको मिटाना चाहते है। वे मन्दिर मे भगवान की मूर्ति को पत्थर से अधिक कुछ नही समझते —

'मन्दिर मे जो बसता ईश्वर
वह तो पत्थर है पत्थर है"[3]

बडी बडी सभाओ मे पण्डित जी बठे बैठे भगवान के रूप का वर्णन करते रहते हैं परन्तु बीकानेर का प्रगतिवादी कवि इस रूप को स्वीकार नही करता है। उसके अनुसार तो आज भगवान की स्थिति कुछ इस प्रकार की हो रही है —

"सर पिचक गया है ईश्वर का
उसका मस्तक, उसका ललाट
सड गया आज,
कर रहे वहा कीडे किलबिल

---

२ मेघराज मुकुल	उमग—	पृष्ठ	६
३ ” ”	”	”	५२
४ आचार्य चन्द्रदेव	पडितजी गजब हो रहा है—	”	६६

भुजदड सूख बलहीन हुए—
छाती भीतर को सिकुड गई।"[1]

इन कवियो की दृष्टि म यदि आज किसी का महत्त्व है तो वह है मानव का। मानव स्वय अपना भगवान है। वह स्वय सब कुछ कर सकता है। उसे ईश्वर पर निर्भर रहने की कोई आवश्यकता नही है —

"मानव खुद अपना ईश्वर है
साहस उसका भाग्य विधाता"[2]

कवि रूढियो से ग्रस्त मानव को मानव एव पत्थर की मूर्ति को भगवान स्वीकार नही करना चाहता है —

"कायर रूढिवाद का कैदी
क्या उसको इन्सान समझ लू ?
परिवर्तन पथ का वह पत्थर
क्या उसको भगवान समझ लू ?"[3]

इसलिए कवि इस पत्थर के भगवान को पूर्णतया समाप्त ही कर देना चाहता है जिसमे मानव गुमराह एव आलसी न बन सके —

"उस पत्थर के परमेश्वर का अभिमार मिटाने आया हूँ।"[4]

ये कवि धर्म, समाज तथा उस तथाकथित ईश्वर द्वारा निर्मित नियमो और उप नियमो को छिन्न भिन्न कर देना चाहते हैं। इनके लिए मन्दिर, मस्जिद, गीता और कुरान आदि का कोई महत्त्व नही है और न ही ये कवि स्वर्ग, नरक आत्मा परमात्मा आदि म विश्वास रखते। इन सभी बातो का ये घोर विरोध करते हैं और इनका उन्मूलन कर देना चाहते है। विद्रोह करने से तो यमदूत से भी नही डरते —

ठहरो, ठहरो—मैं चीख उठा
मैं नरक भला क्या जाऊगा।"[5]

---

१ आचार्य चन्द्रदेव— पडितजी गजब हो रहा है— पृष्ठ ३
२ मालदान देवावत मनुज— विप्लवगान— " ५६
३ " " " " " ५८
४ " " " " " ८८
५ आचार्य चन्द्रदेव नरक विद्रोह कविता से—

इस प्रकार से ये कवि एक ओर तो समाज में व्याप्त रूढ़िया, परपराओं और धार्मिक पाखण्डों का विरोध करते हैं और उन्हें समाप्त कर देना चाहते हैं दूसरी ओर धार्मिक शोषकों को भी समाप्त कर देना चाहते हैं। इन सब के लिए सामाजिक क्रांति की आवश्यकता है। इसके साथ ही ये किसी भी प्रकार के समझौते या हृदय परिवर्तन में विश्वास नहीं रखते। ये फोड़े पर मरहम लगाकर उसे अंदर दबाना नहीं चाहते, अपितु उसे जड़ से नष्ट कर देना श्रेष्ठ समझते हैं। वे गीत भी गाते हैं तो प्यार के नहीं, अपितु प्रलय के गाते हैं —

> "मैं प्रलय वह्नि का वाहक हूँ
> मिट्टी के पुतले मानव का संसार मिटाने आया हूँ।[1]

और इस कार्य में वह अन्य सहकर्मियों को भी सहयोगी बनाना चाहता है —

> 'लोहित मसि में कलम डुबा कर
> कवि तुम प्रलय छंद लिख डालो।'[2]

किसी भी प्रकार की क्रांति करने से पूर्व उस क्रांति की तैयारी करना आवश्यक हो जाता है इसके लिए वह मानव को एकता के सूत्र में बांधना चाहता है जिससे क्रांति सफल हो सके —

> आओ पहले इन हाथों में, वज्र थमाले एक साथ हम।
> और धरा पर अंगद का सा, पांव जमाले एक साथ हम।'[3]

इस प्रकार कवि पहले समाज में क्रांति के लिए हर प्रकार की तैयारी करता है और वह चाहता है कि इस प्रकार की क्रांति हो जिससे पूंजीपतियों के ये गगन चुम्बी महल, धर्म के ठकेदार सामाजिक रूढ़िया और धार्मिक पाखण्ड आदि सभी नष्ट हो जाय। इन सब की समाप्ति के लिए इस क्रांति के अतिरिक्त दूसरा कोई मार्ग भी नहीं है जिससे समाज इन सब बुराइयों से, शोषक और शोषित की खाई भी दूर करने का यह एक ही उपाय है।

बीकानेर में धार्मिक प्रपंच कुछ अधिक है। अतः इन कवियों ने इन धार्मिक पाखण्डों और आडम्बरों को समाप्त करने का प्रयत्न किया है। साथ ही में कवियों का ध्यान देश में व्याप्त शोषण की ओर भी है। अतः देश में व्याप्त

१	मालदान दपावत मनुज—	विप्लवगान—	५८
२	' ' '	'	५८
३	मेघराज मुकुल—	उमंग—	' ६२

शापण को भी य कवि समाप्त करना चाहते हैं।

सामयिक वस्तुओ का चित्रण —

समय परिवर्तनशील है। समय के साथ साथ समाज भी बदल जाता है। एक समय म जो बात किसी समाज के लिए आदश होती है वही बात कुछ समय बाद उसी समाज के लिए अभिशाप बन जाती है। इस दष्टि से यदि हम हिन्दी साहित्य के इतिहास पर दष्टि डालें तो यह पूर्णतया स्पष्ट हो जायेगा कि किस प्रकार से कविता के विषय बदलते जा रहे हैं। वीर गाथा काल मे कवियों की लखनी राजाओ की वीरता और युद्ध वरान स दूर नहीं हटी और भक्ति काल म वही लखनी भगवान के गुणो के वर्णन म प्रयुक्त हुई। रीतिकाल म अपन आश्रयदाता की प्रशसा और नख शिख वर्णन मे कवियो ने अपनी सफलता समझी। इस समय की कविता एक वग की कविता थी। इसके अतिरिक्त आधुनिक काल की कविता जनता की कविता बनी। भारतेन्दु युग की कविता म राष्ट्रीय भावनाओ का वरान है, तो द्विवेदी युग म समाज सुधार कविता का विषय बना। छायावाद म कवि कल्पना लोक म खो गया और प्रगतिवाद मे वह तोड-फोड म ही लगा रहा।

इस समय का कवि समसामयिक वस्तुओ तथा व्यापारो का वर्णन कर रहा है। आज छोटी स छोटी वस्तु भी कविता का विषय बनी हुई है। बीकानेर के कवियो ने अपने चारो ओर की वस्तुओ का वर्णन अपनी कविताओ म किया है। यहा का कवि चाय का, रेलवे फाटक की भीड सडक पर चलती मोटरगाडी होटल आदि का वर्णन कर रहा है। चीनी क बतनो का प्रयोग आज काफी बढ रहा है तो कवि ने उसी का वर्णन कर दिया है।

'चीनी मिट्टी के बतनो
मानता हू
तुम्हारा दूधिया रग
किनारे की सुनहरी बाडर
बेल बूटा की डिजाइन
ग्राहक का
अपनी ओर खीच लेती है'[1]

[1] गौरी शकर अरुण — अर्थ पकती कविता न

कवि कटी हुइ पत ग और उसके पीछे दौडने हुए बच्चो का ही वरान करने लगता है —

> "कटी पतग
> पीछे दौडने बच्चे।"[1]

आज कवि यह मानता है कि ससार म कोई भी वस्तु निरथक नही है। इसी लिए कवि भी वस्तु के वरान करने म सकोच नही करता है —

> 'मैं एक सिगरट हूँ
> मुझे पीते है लखक, कवि या वियोगी,
> × × ×
> मुझे पीते हैं बाबू, लाला या अफसर
> शौक फरमाने के लिए
> रौब जमाने के लिए
> शान दिखान के लिए।'[2]

आज इस समय म चाय का महत्व बहुत ही बढता जा रहा है। मनुष्य का जीवन ही चाय मय बन गया है। इसलिए कवि न चाय को भी अपनी कविता का विषय बना लिया है और उसी का वरान उसन अपनी कविताओ म किया है —

> "चाय की ठडी सी प्याली का
> पकड लता हूँ हाथ'[3]

सस्कृति और परम्पराओ जैसे गम्भीर विषयो पर भी यहा के कवियो न प्रतिदिन के जीवन के आस पास बिखरे साधारण से साधारण बिम्बो द्वारा व्यग्य किया है —

> घिर गया है
> परम्पराओ का बुड्ढा शरीर
> कि जिस

---

१ शिवराम पुनिया की एक कविता स।
२ रामदेव आचाय अक्षरो का विद्रोह पृष्ठ ४२
३ स० नन्द किशोर आचाय —सवेदन इति " ६५

भरती करवा दिया गया है
सस्कृति रक्षा की जुडाई
के अस्पताल के
काटज वाड म
कि जहा
मोहनजोदडो डाक्टर
हडप्पाई नर्सें ।"[1]

सिगरेट जसी छोटी वस्तु का जीवन और मत्यु को समझाने के लिए प्रयोग किया गया है —

"मरना और जन्मना
केवल अचानक याद आ जाने पर
सिगरेट पी लेने जैसे ही है
आकस्मिक ।"[2]

निश्चय रूप मे यही कहा जा सकता है कि बीकानेर का आज का कवि प्रत्येक छोटी स छोटी वस्तु का वर्णन अपनी कविताओ म कर रहा है ।

अति यथार्थ एव बौद्धिकता का चित्रण –

आज का कवि कल्पना लोक म विचरण करता है । वह यथार्थ के बहुत समीप है । थोथे आदर्शवाद का वर्णन अधिक समय तक नही किया जा सकता इसलिए वह वास्तविकता से दूर नही रहना चाहता । बात भी ठीक है कि जो वस्तु जसी है उसको छिपाने से लाभ भी क्या है ? बीकानेर म कुछ कवियो ने इसका सीधा वर्णन किया है और कुछ ने व्यग्यात्मक शैली में इसका वर्णन किया है । इन सभी कवियो न यथार्थ के वातावरण म सास ली है और इसी कारण जीवन के साथ इन्होने सम्पक बनाया है । वह व्यावहारिक जगत की वास्तविकताओ की पृष्ठभूमि पर निर्मित हुआ है । आज देश म अनाज की कमी है । इस वास्तविक सत्य स कोई इकार नही कर सकता । भूख का बहुत ही यथार्थ चित्रण यहा के कवियो न किया है जिसम भारत की आर्थिक स्थिति का पूरा चित्र मिल जाता है ।[3] मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक स्थिति का कितना यथार्थ

१— भवानी शकर व्यास की कविता स ।
२— वातायन —सितम्बर, १९६६ पृ० २१
३— हरीश भादानी —सुलगते पिंड

चित्रण है —

> "यह मेरा ग्वाला है
> महीने भर म दिय गये दूध का
> हिसाब मागता है
> × × ×
> यह मेरा महाजन है
> शादी म दिय गय ऋण का
> भुगतान चाहता है।"[1]

इस प्रकार स आज क मानव के सामने आर्थिक समस्या मुह बाये खडी है और वह इस मानव को निगलना चाहती है। आज का सम्ब ध भी कितना स्वार्थपूर्ण हो गया है। मानव को प्रेम से पहल पट म कुछ खाने को चाहिए —

> 'नही अभी नही
> पहले किसी अच्छे होटल मे
> मुझे भर पेट भोजन खिलाओ।"[2]

इसी प्रकार से व्यग्यात्मक कविताओ म भी यथार्थ का चित्रण हुआ है।

आज की कविता मे बौद्धिक व्यायाम की उछल कूद बहुत अधिक है। नया कवि पाठक को तरगित और उद्वेलित न कर उसकी बुद्धि को अपनी पहेली बुझावल के चक्रव्यूह मे आवद्ध करके उसे परेशान करना चाहता है। आज का कवि अपनी कविता को मस्तिष्क से कुरेद कुरेद कर बाहर निकालता है और इस प्रकार मस्तिष्क मे निकली हुई वस्तु हृदय की नही अपितु मस्तिष्क की ही वस्तु बन सकती है। एसी कविताओ को समझने के लिए मस्तिष्क को बहुत अधिक व्यायाम करना पडता है। इसी मे आज का कवि अपनी सफलता समझता है पर बीकानेर के सभी कवि इस प्रकार के नही है। यहा के अधिकतर कवियो की कविताओ म बौद्धिकता का समावेश नही है। कुछ कवि अवश्य हैं जिनकी कविताओ म बौद्धिकता है —

> मौत अड देती रहती है
> डर के विभीषिका के[3]

१— राम देव आचाय	अक्षरो का विद्रोह	पृ० ५८,५६
२— योगेन्द्र किसलय	यथार्थवाद की कविता स	
३— स० नद किशोर आचाय	सवेदन इति	६६

इसी प्रकार से यह एक और कविता है —

'खिची हुई फेंसिग
स्टम्पस के दोना तरफ जाल
चिंतन की ओवर वालिग
पका हुआ शती का दार्शनिक"[1]

इस प्रकार की बौद्धिकता को देख कर आज के कवियो की अहम् भावना स्पष्ट रूप स सामने आ जाती है। यह ठीक है कि कविता को समझने के लिए पाठक का कुछ प्रयत्न करना पडता है पर तु इसका यह तो अथ नहीं कि पाठक चाहे जितना भी प्रयत्न करे तो भी इन कविताओं का अथ न समझ सके, और जब पाठक इन कविताओं का अथ नही समझता है तो कवि पाठक की बुद्धि की कमजोरी बताकर अपने महत्व को स्थापित करता है। वास्तव मे देखा जाय तो वह कविता ही निरथक है जिसे कोई पाठक समझ न सके। बौद्धिकता की यह बात बीकानेर के कवियो मे ही नही अपितु हि दी के अ य कवियों के साथ भी है।

वैयक्तिकता एव अह की भावना —

आज क कवि की आत्मा म अहनिष्ठ व्यक्तिवाद इस रूप स बद्धमूल है कि वह सामाजिक जीवन मे किसी प्रकार का सामजस्य और गठबधन नहीं कर सकता। कवि अपने समाज और आस पास को छाडकर अधिकतर अपनी ही बात करता है। इसका अथ यह नहीं कि यह वैयक्तिकता की प्रधानता और किसी काव्य धारा म नहीं हुई परन्तु उसका रूप यह नही था, क्योंकि उस व्यक्तिकता मे लोकव्यापक भावना भी थी। पर तु आज का कवि तो अपन आप को समाज से भी दूर समझता है और अपनी ही बात करता है समाज के प्रति वह अपन उत्तरदायित्व को स्वीकार करने को तैयार नहीं है। इस बात स बीकानेर का कवि दूर नहीं है। कवि अपनी कविता म व्यक्तिगत पीडा का वर्णन कर रहा है —

'अभी अभी
अध्ययन करक उठा हू
थक गया हूँ

१— राजान द भटनागर की दार्शनिक कविता स।

गेठ गइ रीढ की हड्डी
पसनिया द्रुम रही है।'[1]

पर तु इसस भी अधिक बात यह है कि कवि इम युग म अपने ज म को ही एक अच्छी घटना और इस सदी का सबसे उज्जवल दिन मानता है। यह निपट व्यक्तिवादी दष्टिकोण है।

'हमारे ज म मअच्छा
और क्या घटित होता
इस सदी मे।
\+ + ×
इस सदी का
एक केवल एक उजला दिन
कि जनम हम।''[2]

निष्कष रूप से यह कहा जा सकता है कि इम प्रकार की यह भावना बीकानेर के आज के कवि मे मिलती है। और वह अपने आप को ही सब कुछ समभता और उसकी दष्टि मे दूसरे का जीवन कुछ भी नही है।

अनास्था और आस्था का स्वर —

बीकानेर के आज के कविया की कविताम्रा पर यदि एक दष्टि डालें ता यह स्पष्ट हो जायेगा कि कुछ कविताम्रा म तो आस्था का स्वर है और कुछ म अनास्था का। इन कविया का इम ससार इम जीवन आदि से कोई सम्ब ध नही है। वे अब इस जीवन से ऊब चुके हैं। उ ह घुटन होती है इस ससार और जीवन से। अनास्था का यह स्वर इम कविता मे द्रष्टव्य है —

'जि दगी केवल अपाहिज है
कि जिसकी
करवटें सब मर गयी मेरे लिए
सड गय सारे गुलाब मेरे लिए[3]

कवि को इस ससार म कुछ भी दष्टिगोचर नही होता —

१— योगे द्र किसलय — एक कविता से
२— हरीश भादानी — भुलगत पिण्ड पृ० १०८ १०६
३— रामे द्र आचाय — अक्षरो का विद्रोह , २४

"बचा ही क्या है इस दोनों दुनिया म ऐ दोस्त
जिसे प्यार किया जा सके ।"[1]

आज इस ससार म उसका कहीं भी तो मन नही लगता । न वह पढ सकता है और न वह रेडियो सुनना चाहता है –

! 'कि कहीं भी जी नही लगता
पढने तो ध्यान कहीं और जाता है
×   ×   ×
मन न रेडियो सुनता है
मन न सिनमा दखना चाहता है
घूमो तो घूमना नही चाहता'[2]

कुछ एसी भी कविताए है जिनम अनास्थावादी स्वर ऊपरी है, उसके मूल म कवि का आस्थावादी स्वर भी है ।

'लेकिन जो भी मुझे ठगेगा
उस अपने ही अक का
अस्तित्व मैं समाप्त कर दूगा"[3]

परन्तु इसका अथ यह नही है कि आलोच्य काल की कविता म केवल अनास्था का ही स्वर हो, उसम आस्थावादी स्वर भी है । यहाँ का कवि नगर सभ्यता से आक्रान्त होने हुए भी कभी-कभी गलियो म भटक जाता है, परन्तु उसकी आखें चौराहे पर आस्था क स्वर का देखती ही रहती है । यह उसकी आस्था का प्रमाण है –

"कहीं कुछ एसा है
जो मुझे जीवित रखने के लिये
कृत सकल्प है
इसीलिए मैं मरा नही
अधेरे का हुआ नही"[4]

१— रामदेव आचाय –अक्षरो का विद्रोह   पृ० ७१
२— राजानन्द भटनागर   एक कविता से
३— नागेन्द्र किसलय   'अभिशप्त' कविता स
४— सरल की एक कविता स

आस्थावादी स्वर म कवि पर पडी हुई प्रत्येक चोट स्वय टूट जाती है उस कवि का वह कुछ नही बिगाड सकती –

"फिर जब अपने चारा ओर देखता हू
तो पाता हूँ
कि मुझ पर पडी प्रत्येक चोट
स्वय टूट गई है
बिखर गई है'[1]

यहा के कुछ कवियो म इतनी आस्था है कि 'कभी कुछ' सुरख (आस्था) को देखने के लिए वर्षो म राहु द्वारा ग्रसित सूरज की कालिमा को मिटाने के लिए भी वह अपना खून तक को फेंकत है —

"फेंकत हैं खून
कि कही कुछ सुरख तो दीख
वर्षो स काले पडे सूरज पर
कुछ लाल छीटे तो पडे"[2]

और भी कविताआ म आस्थावादी स्वर मिल जाता है। यह आस्थावादी स्वर ही ऐसा है जा दुनिया मे रहने योग्य और जिन्दगी को जीने योग्य बना देता है। इस प्रकार से बीकानेर के काव्य मे अनास्था और आस्थावादी दोना स्वर ही मिलते हैं परन्तु आस्थावादी स्वर ही यहा पर अधिक मुखरित हुआ है।

इस प्रकार से बीकानेर जिले म इस आलोच्य काल मे काव्य की विभिन्न प्रकार की प्रवत्तियो का विकास हुआ है। एक ओर जहा प्रकृति चित्रण और नारी को लेकर कविताए लिखी गई ता दूसरी ओर धार्मिक पाखण्ड सामाजिक रूढियो और परम्पराओ के खण्डन का भी प्रयास किया है। इसी प्रकार जहा राष्टीय कविताए लिखी गई वहा प्रत्यक छोटी स छोटी वस्तु को भी कविता का विषय बनाया गया है और साथ ही वहा हसी के फुवारे भी फेंके हैं। आज बीकानेर के काव्य म आधुनिक हिन्दी काव्य की सभी प्रवत्तियो को देखा जा सकता है। इस प्रकार से बहुत बाद म प्रारम्भ हाने वाला काव्य आज हिन्दी काव्यो के साथ चल रहा है।

==

२— रामदव आचाय — अक्षरा का विद्रोह — पृ० २४

१— हरीश भादानी — सुलगत पिण्ड — १०८

बीकानेर काव्य की बहिर्चेतना

भाव पक्ष काव्य का अन्तरग पक्ष है और कला पक्ष उसका बहिरग पक्ष है। काव्य साधना मे दोनो का समान महत्त्व है। वादो और सम्प्रदायो के चक्कर म पडकर आचार्यों ने कभी भाव पक्ष पर अधिक बल दिया है तो कभी कला पक्ष पर। परन्तु काव्य मे इन दोनो के होने से वह अधिक प्रभावशाली बन सकता है। भाव पक्ष यदि सबल भी हुआ और कला पक्ष उसका दुर्बल हुआ तो निश्चित रूप स वह काव्य प्रभावशाली नही बन सकता। इसी प्रकार यदि कवल बहिरग पक्ष की ओर अधिक ध्यान दिया गया तथा अन्तरग पक्ष की परवाह न की, तो वह काव्य भी श्रेष्ठ नही कहला सकता। काव्य की प्रभावोत्पादकता के लिए इन दोना पक्षों की ओर ध्यान कवि के लिए आवश्यक हो जाता है।

बीकानेर जिले क कवियो ने जहा काव्य के अन्तरग पक्ष की ओर ध्यान दिया वहा उसके साथ उसके बाह्य पक्ष को भी भूले नही। भाव पक्ष की नवीनता क साथ कला पक्ष म भी नवीनता का श्रीगणेश हुआ। अपने भावो को व्यक्त करने क लिए कवियो ने भाषा की सरलता की ओर भी ध्यान दिया है। इस दृष्टि से यहा के कवियो ने तद्भव और विदेशी शब्दो का प्रयोग प्रारम्भ किया है। यद्यपि यह बात नई पीढी के कवियो मे कुछ अधिक पायी जाती है। विदेशी शब्दो में भी उन्हीं को ग्रहण किया जो जन साधारण मे अधिक प्रचलित है। इसी प्रकार से नये पीढी के कवियो ने छ द के बन्धन को भी अस्वीकार किया है। किसी भी प्रकार से काव्य मे ऊपरी चमत्कार को महत्त्व नही दिया है। जहा एक ओर से यहा का कवि छ द के ब धन से मुक्त हुआ वहा दूसरी ओर नय नये प्रतीक और बिम्बो का प्रयोग काव्य मे हुआ है। उपमान भी जो ग्रहण किये हैं व नवीन एव अपने आस पास क वातावरण मे स ही ग्रहण किये है। शैली की दृष्टि से भी वर्णनात्मक शली की अपेक्षा व्यग्यात्मक शैली का प्रयोग अधिक किया है। इस प्रकार स जहाँ एक ओर बीकानेर का काव्य भाव पक्ष की ओर स बढा है वहा कला पक्ष न भी उसका साथ दिया है।

रस —

यद्यपि रस का विवेचन काव्य के भाव पक्ष के अ तगत किया जाता है । पर तु हम उसका विवेचन काव्य के वहिरग पक्ष के अ तगत ही कर रह हैं।

रस को काव्य की आत्मा माना जाता है । "वाक्य रसात्मक काव्यम् [1] सव प्रथम साहित्य म रस क महत्त्व का प्रतिपादन करने वाल भरत मुनि है। माहित्य दपण म रस की परिभाषा इस प्रकार स दो है —

'विभावनुभावेन व्यक्त सचारिणा तथा ।
रसतामति रत्यादि स्थायीभाव सचतसाम्'

अर्थात् सहृय-हृदय म (वासना रूप स विराजमान) रत्यादि रूप स्थायी भाव जब (कवि वर्णित) विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी के द्वारा अभिव्यक्त हो उठते, तब आस्वाद अथवा आन द रूप हो जाते है और उस रस कहा जाता है।" रस नौ माने गय है।

शृ गार हास्य करुण रौद्र वीर भयानका
वीभत्सोऽद्भुत इत्यष्टौ रसा शा तस्तथा मत [3]

शृ गार हास्य करुण रौद्र, वीर भयानक वीभत्स, अद्भुत और शा त रस माने गय हैं।

रस की इस विवचना क बाद हम यह देखना है कि बीकानेर के काव्य म कौन कौन से रस आय है । शृ गार रस को रसराज माना जाता है ।

शृ गार रस —

शृ गार रस का मूल आधार रति या प्रेम होता है । इसी के आधार पर इसकी सवव्यापकता सिद्ध होती है कि प्रेम एक ऐसी वत्ति है कि जिसका सचरण पशु-पक्षिया तक मे देखा जाता है। प्रेम क विभिन्न रूप होत हैं पर तु शृ गार के अ तगत जिस प्रेम की अवस्थिति होती है वह दाम्पत्य प्रेम कहलाता है। जहा दोना प्रेमिया का मिलन होता है वहा सयोग शृ गार और जहा दोना

१— माहित्य दपण	प्रथम परिच्छेद	पृ०	२३
२— " " "	"	"	८६
३— " " "	"	"	२२.

एक दूसरे स दूर रहत ह वहाँ वियोग शृ गार होता है ।

सयाग शृ गार मे युगल प्रेमियो की विभि न क्रीडाए मनोविनाद, रति प्रसग, सयुक्त दिनचर्या आदि का वर्णन होता है । रति का प्रमुख कारण सौदय हुआ करता है । यही कारण है कि कवि लोग अपन शृ गार रस क परिपाक म सौन्य का मनोमुग्धकारी वर्णन करते हैं । बीकानेर के काव्य मे इस प्रकार स शरीर का स्थूल वर्णन कम हुआ मिलन वर्णन ही अधिक हुआ ।

> "तारा की छाया के नीचे
> मिला रहे कौन दो तरुण हृदय,
> भावा की उठती आधी म
> जीवन का प्रारम्भिक अभिनय"[1]

इसी प्रकार प्रारम्भिक मिलन म प्रेमी व प्रेमिका जीवन और ससार तक भूल जाते ह ।

> 'वह वय सधि का प्यार विमल
> मस्ती का मादक भवर जाल
> जिसम भूले ह दो भावुक
> जीवन का जग का हाल चाल [2]

सयोग का अभाव वियोग है । आचार्यो न चार प्रकार का वियोग माना है — पूर्वानुराग, मान, प्रवास और करुण । पूर्वानुराग का वर्णन यहा नही क समान ह । मान का अवश्य ही वर्णन हुआ है । यह वियाग क्षणिक रहता है —

> "क्या पता, क्या कर रही तुम आज मुझसे मान
> स्वप्न सी पुकार, क्या कर बन गई पाषाण [3]

परन्तु यहा पर अधिक वर्णन 'प्रवास' का ही हुआ है । प्रवास काल मे सयोग की सुखदायी वस्तु कष्टमय बन जाती है —

> आग लगाने लगी चादनी, सौरभ जी मे शूल चुभाने
> च द्र-करो को बाट दिय है तुमने तीखे शर अनजान"[4]

१— मालदान देपावत मनुज— विष्नवगान— प० ५३
२— " " " " , ५३
३— माणक चन्द रामपुरिया स्वरालोक २१
४— शम्भूदयाल सक्सेना नीहारिका " ८२

वियोग मे सयोगकालीन घटनाए एक एक करके मानस पटल पर उभर आती है और इनके स्मरण आने स वियोग और अधिक बढता रहता है —

> प्रथम मिलन में क्या जादू था हुए नयन जब चार सखी
> तो क्षण भर मे रही मुग्ध सा सकी न तन सम्हार सखी
> तन को, मन को और माग को भूली मैं उस बार सखी
> कितना सत्य और सुदर-सा था वह नश्वर प्यार सखी'[1]

प्रवास काल मे आखो म आसू बहते हैं और आह निकलती रहती हैं और चारो ओर पतझर ही दिखाई देता है —

> 'आसू बहत आह उठती
> पतझर दिखलाई देता है
> यौवन का उन्माद कहा
> मधुमास विदाई लेता है'[2]

अभिलाषा भी प्रवास की एक दशा है। इसमे अपने आप को प्रियतम पर न्योछावर की आशा ही प्रमुख रहती है —

> मलय पवन बन कर आयें व
> प्राणो की अमराई म,
> तो पिक बन कर कूक उठूगी
> उनकी मुक्ति बधाई म।[3]

प्रवास म न रात को नीद आती है और न दिन को चैन मिलता है और प्रतीक्षा मे आँखे पथरा जाती है।

> रात रात भर रोती रही
> दिन दिन भर जागती रही
> पर वह न आया सो न आया
> प्रतीक्षा की आखे पथरा गई
> आतुरता के डैने शिथिल हो गये।'[4]

---

१ — शम्भुदयाल सक्सेना	नीहारिका	पृ० ५५
२ — श्याम ककलिया	शबनम	,, ४
३ — शम्भुदयाल सक्सेना	नीहारिका	,, १४
४ — ,,	रत्न रेणु	,, ३८

इस प्रकार से वियोग की अनेक दशाओं का वर्णन यहा के काव्य म मिल जाता है।

हसी का जीवन म बहुत महत्त्व है। यह जीवन का एक विटामिन है। हास्य रस बीकानेर के काव्य मे यत्र-तत्र बिखरा पडा है –

"जब दरवाजा मे घुसे आप तिरछे ही अन्दर आते हैं।
अपनी खटिया को खाती से स्पेशल ही बनवाते है॥
सोते रहते हैं आप नाक से बाजा बजता जाता है।
जब कभी बदल लेते करवट खटिया की बीमा बिक जाता"[1]

कवि खटमल का वर्णन करता हुआ हास्य बिखेर रहा है –

'पर मुरारजी खटमलजी तो सोने पर टेक्स लगाते है
वे स्वर्ण नियन्त्रण करते है ये शयन नियन्त्रण करते हैं
वे कामराज से डरते हैं ये काम रात को करते हैं
ये खटमल है या नट खटमल य जिनके पीछे पड जाते
तो पिंड छुडाना मुश्किल बीमा के एजेन्ट नजर आते हैं "[2]

वीर रस की कविताए तो यहा बहुत लिखी गई। प्राय प्रत्येक कवि ने ऐसी कविताए लिखी है —

'वतन के सिपाही सजग वीर प्रहरी
धरा ने तुम्हे आज फिर से पुकारा।
उठो वज्र हाथो मे हथियार साधो
तुम्हारा सदा मातृ भू को सहारा।'[3]

"विजय हमारी है" सग्रह इसी प्रकार की कविताओ का है। इनके अतिरिक्त वीभत्स रस की कविताए भी यहा लिखी गई है —

"सर पिचक गया है ईश्वर का
उसका मस्तक उसका ललाट
सड गया आज
कर रहे वहा कीडे किलबिल"[4]

१— भवानी शकर व्यास — हास्यमेव जयते — पृ० ४४-४५
२— " " " — " — " २
३— मेघराज मुकुल — अनुगूंज — " २८
४— आचार्य चन्द्रदेव शर्मा — पडितजी गजब हो रहा है " — ३

× × ×

मानव-मानव को खाता है
पीकर लोहू चाट कर जीभ
फिर हस कर दात दिखाता है ।'[1]

इन रसो के अतिरिक्त बाकी रस भी बीकानेर की कविताओ मे देखे जा सकते हैं और साथ ही मे आज की कविता मे बौद्धिक रस का समावेश हो गया है और इस रस की कविताओ की भी बीकानेर मे कोई कमी नही है ।

बीकानेर के काव्य मे अलकार —

मनुष्य स्वभावत सौ दर्यो पासक प्राणी है । वह प्रत्येक वस्तु मे सौ दय को ढूढता चाहता है । इसी भावना से काव्य मे अलकार का आविर्भाव हुआ है । अलकार शब्द का अर्थ आभूषण है । जिस प्रकार से आभूषण नायिका का सौ दय बढाते हैं उसी प्रकार अलकारो का प्रयोग भी काव्य की शोभा बढाने के लिए किया जाता है । जैसा कि दण्डी ने लिखा है —

'काव्य शोभा करान् धर्मानलकारान् प्रचक्षते ।'[2]

अर्थात् काव्य मे शोभा वद्धि करने वाले धर्म को अलकार कहते है । काव्य मे अलकारो का क्या महत्व है । इस बात को लेकर बहुत विवाद हुआ है और संस्कृत साहित्य मे इसके दो वर्ग बन गये । एक वर्ग तो अलकारो को काव्य का अनिवार्य धर्म मानता है और अलकार विहीन काव्य को काव्य नही मानता । दूसरा वर्ग उन विद्वानो का है जो काव्य मे अलकारो को अनिवार्य नहीं मानता । अलकारो को काव्य का अनिवार्य धर्म के रूप मे तो नही पर तु इनके सहज प्रयोग से काव्य मे रमणीयता का उत्कर्ष ही होता है । जिस प्रकार से स्वाभाविक सौ दर्य को आभूषणो की अपेक्षा नही होती और यदि उनका प्रयोग कर लिया जाय तो सौ दर्य और अधिक बढ जाता है । ठीक इसी प्रकार यदि सत्काव्य मे अलकारो का प्रयोग न किया जाय तो कोई अन्तर नहीं पडता और प्रयोग हो जाय तो उसकी शोभा दुगनी हो जाती है ।

अलकार शब्द मे, अर्थ मे तथा शब्द और अर्थ दोनो मे भी होते हैं । इस दृष्टि से अलकारो को तीन वर्गो मे विभाजित किया गया है —

---

१ मानदान देपावत मनुज— विप्लवगान— पृ० ३४
२ काव्यादर्श ' २-१

१—शब्दालकार
२—अर्थालकार
३—उभयालकार

अलकार की इस विवेचना के बाद हम यह देखना है कि बीकानेर के काव्य मे किस किस प्रकार के अलकार मिलते है।

आज अलकार प्रधान कविताओ का युग नही है। परन्तु इसका यह अर्थ नही है कि अलकारो का प्रयोग आज की कविताओ मे होता ही नही है। अलकारो का प्रयोग होता अवश्य है पर वह स्वाभाविक रूप मे होता है। बीकानेर की कविता म भी यत्र-तत्र अलकारो का प्रयोग देखा जा सकता है। अनुप्रास, उत्प्रेक्षा और उपमा आदि अलकारो का प्रयोग यहा की कविताओ म विशेष रूप स मिलता है।

अनुप्रास —

चरमर चरमर चू चरर मरर कुछ ऐसा करने लग जाती"[1]

जहा तक अनुप्रास अलकार का प्रश्न है वह प्रत्येक कवि की कविताओ म मिल जाता है। उपर्युक्त उदाहरण म अनुप्रास क साथ साथ अनुरणात्मकता (   ) भी उत्पन्न हुई है। उत्प्रेक्षा का एक उदाहरण यह है —

'दिन भर जो सूर्य चढा नभ पर
जग पर शासन करता करता
उदण्ड चण्ड पृथ्वी का पगतल
रौद भीति भरता भरता
जगती के कौन कौने म
मानो शकर का नेत्र तीसरा
उन्मीलित हो आया था।"[2]

परन्तु बीकानेर के काव्य मे सबसे अधिक उपमा अलकार का प्रयोग है और आज की कविता म तो इसका प्रयोग और अधिक बढता ही जा रहा है —

"चादर के नभ पर घिर आई ज्यो सावन घन माला ललाम [3]

× × ×

१ भवानी शकर व्यास —मुझे हमी आती है पृष्ठ ३
२ चन्द्रमौलि —गूँज ती पृष्ठ ८६
३ प नाम च द्रदव शर्मा —पडितजी गजल हो रहा है पृष्ठ ७

"सीली लकड़ी सा
सुलग रहा मन"[1]

\+ \+ ×

कुआरे बाप सा भोर अंधेरा [2]

इन अलकारो के अतिरिक्त अन्य अलकारो का प्रयोग भी यहा की कविता में हुआ है —

रूपक —

बकता जाता था नर पिशाच"[3]

× × ×

'कल्पना की इस विस्तत सडक पर"[4]

सदेह —

"या गम घडा हो पनघट का या तू बा एक लचीला हो'[5]

पुनरुक्ति —

'डरडा डरडा डरडा दुनिया रोजाना हसती है।"[6]

इनके अतिरिक्त भ्रातिमान, उल्लेख आदि अन्य अलकार भी बीकानेर की कविताओ म देखे जा सकते है। बीकानेर की कविताओ मे जितने भी अलकारो का प्रयोग हुआ है वह स्वाभाविक रूप से हुआ है। अलकारो के लिए कोई भी कविता नही लिखी गई है।

उपमानो की नवीनता —

किसी भी वस्तु के बार बार प्रयोग करने पर मन उससे ऊब जाता है। कवि लोग बहुत समय तक एक जसे उपमानो का प्रयोग करते रहे हैं। इन उपमानो के प्रयोगाधिक्य से उनकी सप्रेषणीयता सुप्त होने लगी थी। इसको आज के कवि ने अनुभव किया और उन्होने इन पुराने उपमानो को छोड दिया है।

---

१ स० नन्द किशोर आचार्य —सवेदन इति पृष्ठ ३६
२ हरीश भादानी —सुलगते पिण्ड १३
३ आचार्य चन्द्रदेव शर्मा —पण्डित जी गजब हो रहा है पृष्ठ ४५
४— स० नदकिशोर आचार्य —सवेदन इति पृ० ५७
५— भवानी शकर व्यास —मुझे हसी आती है " ८
६— " " —हास्यमेव जयते " ७

बीकानेर की नई पीढ़ी के सभी कवियों ने अपनी कविताओं मन ये उपमानों का प्रयोग किया है। पोस्टर, पेम्फलेट आदि को उपमान बनाया गया है —

मेरी वेदना कोई पेम्फलेट तो नहीं है
कि बाँट दू
+ + +
'मेरा दर्द कोई पोस्टर तो नहीं है
कि चिपका दू ।'[1]

उपर्युक्त विदेशी वस्तुओं को उपमानों के रूप में स्वीकृति मिली पर आस पास के वातावरण से भी कवि ने उपमान चुने हैं —

प्रात की मेहतरानी
किरणों की लम्बी झाडू लेकर"[2]

प्रकृति से भी उपमान चुने है पर वे भी परम्परागत न होकर नवीन दृष्टि की स्वीकृति में प्राये है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि इन कवियों ने अपनी कविताओं में बासी उपमानों को ग्रहण नहीं किया है। जितने भी उपमान ग्रहण किये वे सब के सब नवीन हैं। चन्द्रमा और कमल आदि से कोई उपमान ग्रहण नहीं किया गया है। आज से पहले जो एक परम्परागत उपमान हिन्दी साहित्य मे चले आ रहे थे वे प्राय सब समाप्त हो चुके हैं। अब से पहले कविता में उपमानों के क्षेत्र में एक बधी बधाई परम्परा रही है। परन्तु अब नये विषयों के आने के कारण कवियों ने उपमान भी नवीन ग्रहण किये हैं।

आज की कविता मे वैयक्तिकता अधिक है और बासीपन का इतना ध्यान रखा गया है कि एक कवि द्वारा अपनाये गये उपमानों को भी बासी समझ कर उन्हें नहीं ग्रहण करता। इस घोर वैयक्तिकता से पाठक व श्रोता के सम्मुख नई उलझनें भी पैदा हुई हैं और उसे आजकल भाव या बिम्ब ग्रहण करने के लिए एक विशेष सतर्कता और तनाव की स्थिति में से गुजरना पड़ता है।

बीकानेर काव्य में प्रतीक —

प्रतीक की व्याख्या करते हुए कहा गया है, 'प्रतीक शब्द का प्रयोग उस

१— रामदेव आचार्य — उमंग का विद्रोह — पृ० ७
२— स० नन्दकिशोर आचार्य — सर्वेन्द्रहति — , ३

दृश्य (अथवा गोचर) वस्तु के लिए किया जाता है जो किसी अदृश्य का विषय प्रति विधान उसके साथ अपने साहचर्य के कारण करती है । अमूत, अदृश्य, अप्रस्तुत विषय का प्रतीक – प्रतिविधान, मूत, दृश्य, श्रव्य प्रस्तुत विषय द्वारा करता है ।'[1] हम अपने दैनिक जीवन म प्रतीकों का ही आश्रय देकर बालते, सुनते और समझते रहते हैं। प्रतीक विस्तार को सक्षेप मे कहने का एक माध्यम है । काव्य और प्रतीक का बहुत घनिष्ट सम्ब ध रहा है । काव्य म प्रारम्भ से ही प्रतीकों का प्रयाग होता आ रहा है । यह दूसरी बात है कि उनक स्वरूपों का समय के साथ साथ परिवतन होता रहा है। कैलाश वाजपेयी न प्रतीकों को तीन भागा म विभाजित किया है – सास्कृतिक प्रतीक प्रकृति प्रतीक और सद्धातिक प्रतीक ।[2]

बीकानेर क काव्य म प्रतीकों का प्रयोग हुआ है। प्रतीका के तीना रूप स्वत त्रता से लेकर आज तक के काव्य मे देख जा सकते है —

> 'पर घिरे हुए हा तुम अब भी
> लक्ष्मण-नकार से
> रूद्ध हो गया जीवन का
> अविकल प्रवाह तो,"[3]

इसी प्रकार आज की कविताओं म भी इसी प्रकार क सास्कृतिक प्रतीका को देखा जा सकता है —

> 'न ईसा हूँ न बुद्ध
> और न कोइ मसीहा
> कि अपनी समझ का ही
> कोई नया स्वर गढ कर"[4]
> × × ×
> क्रास पर अब भी चढाये जाते हैं मसीहा [5]

इसी प्रकार रामायण, तुलसी, शकर आदि अनेक सास्कृतिक प्रतीका का प्रयोग

१— हि दी साहि य कोश पृ० २७१
२— कैलाश वाजपेयी आधुनिक हि दी कविता म शिल्प , ७७ ७८
३— मालदान दपावत 'मनुज' विप्लवगान , २७
४— स० नन्दकिशोर आचाय सवेदनशील , २२
५— हरीश भादानी सुलगते पिण्ड ११२

यहा की प्रारम्भ की और आज की कविता मे देखे जा सकते हैं।

बीकानेर काव्य मे सबसे अधिक प्रकृत प्रतीको का प्रयोग हुआ है। इनका प्रयोग आलोच्य काल के प्रारम्भ से हो रहा है —

"बूढी बतखे तैर रही है
टर्राते है बचे-खुचे कुछ दुबल दादुर"[1]

आज की कविता म भी इनका प्रयाग देखा जा सकता है –

या तो बिजलिया तड़प गयी है
या किसी बाग का उदास कोना' [2]

× × ×

वायु लहरिया, गीध रजतपख, राजहस, शिलालेख, नयी लिखावट, तग गली, अलबम, रात वाली लडकी, सस्ता होटल, अडियल पैन, आदि प्रतीको का प्रयोग बीकानेर की कविताओं म देखा जा सकता है।

सद्धातिक प्रतीको का प्रयोग प्रकृत प्रतीको की अपक्षाकृत कम हुआ है –

शीत ईथर के असीमित
तप किनारा पर लहराकर [3]

× × ×

भर जाने को
एक चौथा आयाम' [4]

इसी प्रकार रोटी चाय, एग्स हाराकिरी स्लेज आदि प्रतीको की योजना बीकानेर की कविता मे हुई है। उपयुक्त सभी प्रकार के प्रतीकों का प्रयोग सभी प्रकार की कविताओं मे हुआ है।

बिम्ब विधान —

बिम्ब योजना का सम्बन्ध कवि की भाव विधायिनी कल्पना स होता है। बिम्ब और काव्य का गहरा सम्बन्ध है। रामचन्द्र शुक्ल ने भी बिम्ब की

१— मालदान देपावत 'मनुज'	विप्लवगान	पृ०- २७
२— स० नन्दकिशोर आचाय	सवेदनइति	४८
३— मालदान देपावत 'मनुज'	विप्लवगान	,, ३०
४— स० नन्दकिशोर आचाय	सवेदनइति	, २१

अनिवार्यता को स्वीकार किया है । "काव्य मे अर्थ ग्रहण मात्र से काम नहीं चलता, बिम्ब ग्रहण अपेक्षित है ।'[1] डा० कुमार विमल ने बिम्ब पर विचार करते हुए लिखा है, 'बिम्ब विधान कला का क्रिया पक्ष है जो कल्पना से उत्थित होता है । कला जगत म कल्पना के विकास की एक सारणी है । कल्पना स बिंब का अविर्भाव होता है, तब बिम्बो की सृष्टि होती है और जब बिम्ब प्रतिमित या व्युत्प न अथवा प्रयोग के पौन पु य स किसी निश्चित अथ म निर्धारित हो जाते हैं तब उनमे प्रतीका का निर्माण होता है । अत कला विवेचन की तात्विक दृष्टि से बिम्ब कल्पना और प्रतीक का म"यस्थ है ।"[2]

बिम्बा का वर्गीकरण भी अनेक विद्वाना ने विभि न प्रकार स किया है । वस्तु चित्रण यजना तथा अलकृति क आधार पर जो कलाश वाजपेयी न बिम्बा को तीन वर्गो म रखा है[3] –

(१) वस्तु प्रधान बिम्ब
(२) भाव प्रधान बिम्ब
(३) अलकार प्रधान बिम्ब

वस्तु प्रधान बिम्बो मे यथाथ की दढ रेखाओ द्वारा कलात्मक मूर्तीकरण होता है । भाव प्रधान बिम्बो म अभिव्यक्ति पक्ष दुवल होता है कि तु अनुभूति की तीव्रता के कारण य चित्र सवेद्य अधिक होत है । अलकार प्रधान बिम्बो मे अलकृति और सज्जात्मकता की प्रधानता होती है । वैस तो प्रत्येक बिम्ब ही कुछ अशो मे अलकार पूण होता है पर तु इनम सज्जात्मकता की प्रधानता होती है अनुभूति की नही ।

बीकानेर की कविताओ म भी बिम्बो का प्रयोग हुआ है । हि दी म बिम्बो का आग्रह जितना आज के कवि म दिखाई दता है उतना पूववर्ती कवि म नही रहा था । यही दष्टि बीकानेर क काव्य म प्रारम्भ से लेकर आज तक की कविता म देखी जा सकती है ।

वस्तु प्रधान बिम्ब का यह उदाहरण दष्टव्य है –

१— रामच द्र शुक्ल — चि तामणि (पहला भाग) — पृ० १३
२— डा० कुमार विमल — सौ दयशास्त्र के तत्व — २०१
३— कैलाश वाजपेयी — आधुनिक हि दी कविता शिल्प — ,, ८०

मंदिर मे एक सभा बैठी
पण्डितजी कथा सुनाते थे,
श्रोता कुछ ऊंघे जाते थे,
कुछ बैठे पान चबाते थे ।"[1]

आज की कविताओं मे वस्तु प्रधानता की योजना है परन्तु उसका प्रयोग अधिक नही हुआ है —

आक्रमण का कारण जानना चाहा मैंने
पास था एक पेड
पेड पर था घोसला
घोसले मे होंगे अनेक शिशु'[2]

वस्तु बिम्बों के अतिरिक्त भाव बिम्ब भी यहां की कविता मे देखे जा सकते हैं। ये बिम्ब भी प्रारम्भ से लेकर आज तक की कविताओं मे है —

"नगी पडी धरा थी पहले भूख स्वयं अब नगी है।
मा की छाती से चिपटे शिशु को जीने की तगी है।
प्यासी आंखें बना रही है खून चूकता जाता है'[3]

आलोच्य कविता मे गरीबी और भूख का यह बिम्ब सुन्दर रूप मे प्रस्तुत किया गया है —

'मास फूली हुई
पेट चिपका हुआ
हाथ ताने हुए
आख मे सुखिया[4]

वस्तु बिम्बो और भाव बिम्बों के साथ अलकृत बिम्ब योजना भी बीकानेर की कविता मे है —

१— आचार्य चन्द्रदेव — पडित जी गजर हो रहा है — पृ० १
२— रामदेव आचार्य — अक्षरो का विद्रोह — ,, ४६
३— मेघराज मुकुल — उमग — ,, २०
४— हरीश भादानी — सुलगते पिण्ड — ,, ६१

"पनघटो पर पायली झकार
केवल एक बूद की प्यास
कोई चातकी मनुहार
गहराई घटाओ से
रिमझिम बरसता सावन
फिर कौन से आकाश आता है
साथ'[1]

× × ×

"जीवन की इस विस्तृत सडक
अभावो की चुस्त पाशाको म लिपटी
झुण्डाकार हो विचरती है
कल्पना की य जवान किशोरिया'[2]

इस प्रकार स बीकानेर की कविताओ म बिम्ब योजना का भी पूरा निर्वाह हुआ है और सभी तरह के बिम्बो का समावेश किया गया है ।

शैली —

कविता म कल्पना भाव और भाषा के साथ-साथ शैली का भी महत्व कम नही है । काव्य म शब्द या वाक्य का वही महत्व है जो शरीर मे अस्थियो और शिराओ का है । शैली वाक्यो का ही समन्वित रूप है वह एक प्रकार भाषा का वह गुण है जो भावना और विचारो को साकार करता है । जहा कही भाषा म विचार प्रभुत्व होता है वहा कलाकार अपने को गद्य म अभिव्यक्त करता है और जहा भाषा म भावपूर्ण अनुभूति का प्राधान्य होता है वहा अधिकतर अभिव्यक्ति काव्य रूप म होती है ।'[3] रस को काव्य की आत्मा माना जाता है परन्तु शरीर क अभाव म आत्मा का अस्तित्व सम्भव नही । जिस प्रकार से आत्मा क लिए शरीर की आवश्यकता है उसी प्रकार कविता के लिए शैली की आवश्यकता है । वास्तव म शैली के अभाव म साहित्य के अस्तित्व की कल्पना भी नही की जा सकती । शैली केवल काव्य के बाह्य रूप को अलकृत नही करती उसके भावगत रूप को भी विकसित करने का काय करती है । भाव सौन्दय की

१— हरीश भादानी — सुलगत पिण्ड — पृ० ६३
२— म० न दकिशोर आचाय — सवेदनकृति — „ ८७
३— कलाश वाजपेयी — आधुनिक कविता मे शिल्प — ७२

माधकता सु र शैली म है। हमारे हृदय मे नाना प्रकार के भावा का उदय होता है परन्तु उनका हम तब तक अभिव्यक्त नही कर सकते जब तक उसके लिए काई उचित भाषा न हो।[1] श्यामसु दर दास के शब्दो म कहा जा सकता है" किसी कवि या लेखक की शब्द योजना, वाक्याशा का प्रयोग वाक्या की बनावट और उनकी ध्वनि आदि का नाम ही शैली है।"[2]

इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि काव्य म भावा के साथ ही साथ शैली का महत्व कम नहीं है। अच्छी शैली के अभाव म काव्य प्रभावशाली नही बन सकता। काव्य को प्रभावशाली बनाने म शैली का बहुत हाथ रहता है। काव्य प्रवत्तिया के साथ ही साथ शैली का भी रूप परिवर्तन हो रहा है।

बीकानेर जिले की कविता म शैली के कई रूप देखे जा सकते है। प्रारम्भ में यहा पर कुछ प्रकृति सम्बन्धी कविताए लिखी गई और वह भी प्रकृति को कई स्थानो पर मानवीकरण के रूप म चित्रण किया है ऐसी कविताओ म प्रतीकात्मक और चित्रात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। प्रगतिवादी रचनाओ म उद्बोधनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। इसम किसी को सम्बोधन किया जाता है।

कवि युग कवि को सम्बोधन करते हुए लिखता है -

'तुम उन दीप भर छाओ म
रस का अमृत पान कर रहे
मौत यहाँ पर नाच रही
तुम पीरया का आह्वान कर रहे।"[3]

उद्बोधन शैली के साथ यहा पर व्यगात्मक शैली का प्रयोग भी हुआ है —

'य काल घन जब जब बरसे
सग लिए पावन पुरवाई
नभ की गोदी मे स्पन्दित हो
सध्या सोती ले अगडाई"[4]

१— सरोजिनी मिश्रा	साहित्य शास्त्र के सिद्धात	पृ० ५६
२— श्यामसु दर दास	साहित्य लोचन	, ३०२
३— मालदान देपावत 'मनुज	विप्लवगान	५८
४— मेघराज 'मुकुल'	उमग	, ४१

बीकानेर म आज का कवि प्रतीको, सकेतो आदि के माध्यम से अपने भावो का अभिव्यक्त कर रहा है और साथ ही म व्यग्य का स्वर भी काफी सशक्त रूप मे निखरा है। यह व्यग्य कही तो समाज पर है और कही आज की व्यवस्था पर है —

'जैसे कोई तेज स्पीड से भागती हुई मोटर
जैसे ऐसी मोटर के पहियो म
फसकर कुचल गया कबूतर
जैसे कबूतर के लोथड़े पर
अपनी समझदार गरदन ठाय
बुभुक्षित कौए
वैसी ही यह आधुनिकता
वैसा ही यह परिवेश
वस ही ये सभ्य लोग।"[1]

आज के समाज और उसमे कहे जाने वाले सभ्य लोगो पर इससे अधिक करारा व्यग्य और क्या हो सकता है। आधुनिकता पर एक करारा व्यग्य और देखने योग्य हैं —

"चौदह केरट साने का
एक गहना
हमारी आधुनिकता"[2]

यह व्यग्य बीकानेर के आलोच्य काल के पूर्वार्द्ध की कविताओ मे भी है। आचाय चन्द्रदेव की कविताए इसका प्रमुख उदाहरण है। इन व्यग्यात्मक कविताओ की भाषा भी बहुत तीखी बन जाती है जिससे व्यग्य का स्वर बहुत पैनी और गहरी मार करता है। इन्ही के साथ ही साथ उपमानो ने भी नवीनता का रूप धारण किया है। उपमानो का प्रयोग काव्य मे प्रारम्भ से ही हो रहा है परन्तु आज उनके रूपो मे परिवतन हो गया है। नवीन उपमानो के साथ यहा की कविता म बहुत विदेशी शब्दो का प्रयोग हो रहा है।

---

१ रामदेव आचाय — अक्षरो का विद्रोह — पृष्ठ १६
२ नन्दकिशोर आचाय — सवेदन इति — ' ३४

बीकानेर जिले के काव्य की भाषा

स्वतन्त्रता के पश्चात से आज तक बीकानेर के काव्य मे कई परिवतन हुए। इसी परिवतन के साथ ही साथ भाषा मे भी परिवतन होता रहा है। काव्य और भाषा का बहुत गहरा सम्बन्ध है। अनुभूति जब अपनी चरम सीमा पर पहुच जाती है तो वह अभिव्यक्ति चाहती है और उस अभिव्यक्ति के लिए भाषा की आवश्यकता होती है। कवि अनुभूति के साथ साथ भाषा का भी धनी होता है, जिसमे वह अपनी अनुभूति को सही और समय अभिव्यक्ति देता है। यदि अनुभूति अच्छी है और भाषा ने उसका पूरा साथ नही दिया है तो यह स्पष्ट है कि कवि की वह अनुभूति उस रूप मे पाठक तक नही पहुच पायेगी और इसलिए वह अभीष्ट के प्रभाव को उत्पन्न नही कर पायेगी। इस दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि काव्य के लिए समय भाषा का होना बहुत आवश्यक है।

भाषा से सम्बन्धित इन सब बातो को दृष्टिगत रखते हुए हम बीकानेर के काव्य की भाषा पर विचार करना है। किसी भी कवि द्वारा अपनी रचना मे केवल एक ही भाषा के शब्दो का प्रयोग करना बहुत कठिन है। अत उसकी रचनाओ म दूसरी भाषाओ के शब्दो का आना भी स्वाभाविक बात है।

(क) बीकानेर-कविता का शब्द समूह

खडी बोली के शब्द तद्भव और तत्सम

बीकानेर की कविता म तत्सम शब्दो का प्रयोग प्रारम्भिक कविताओ म अधिक हुआ है या आज भी हास्य रस की कविताओ म हो रहा है। हास्य की कविताओ म तो कही-कही पक्ति ही सस्कृत की है —

'क्योकि चरमा उनम कहता कि 'कतव्य मास्यगम पाथ
त्वम् सर्वं धर्माणि परित्यज मामेक शरण व्रज'[1]

मलयज, गन्तव्य, स्वत्वो सुपुष्ति, शत्रुमँन्य आदि अनेक तत्सम शब्दो का प्रयोग हुआ है। तत्सम शब्दो का प्रयोग आलोच्यकाल के पूर्वार्द्ध म कुछ अधिक हुआ है। आज तद्भव शब्दो का प्रयोग बढता जा रहा है —

"मुझ मे ऐसा क्या है
कि मैं टूटता नही हू
मैं बिखरता नही हूँ

१— भवानी शकर व्यास मुझे हसी आती है पृ० ५

नाट सहता हू अनेक
हर चोट खाकर तिलमिलाता हू ।"[1]

इसी प्रकार आज यहा की कविता म तत्सम शब्दो का प्रयोग कम हो रहा है और तद्भव और विदेशी शब्दो का प्रयोग बढ़ता जा रहा है ।

राजस्थानी शब्दावली

कोई भी साहित्य अपने समाज स अलग नही रह सकता । अपने समाज का प्रभाव उस पर अवश्य पडता है । बीकानेर जिला एक ऐसा क्षेत्र है जहा की राजस्थानी मातृभाषा है यद्यपि बीकानेर म आज हिन्दी को साहित्य के क्षेत्रमें अपनाया गया है फिर भी राजस्थानी भाषा म तो यहा बहुत पहल स ही रचना हो रही थी, और आज भी वह बोल चाल म प्रयोग म आ रही है । साहित्यिक और बोल चाल की भाषा म सदैव ही अन्तर रहा है परन्तु इन दोनो भाषाओ के बीच म एक विभाजन रेखा नही खीची जा सकती । इस दृष्टि से बोल चाल की भाषा के शब्द भी काव्य म आना स्वाभाविक है । इसलिए बीकानेर जिले के कवियो की कविताओ म राजस्थानी भाषा के शब्द यत्र-तत्र आ गये हैं। पर इनके प्रयोग से कविता म किसी भी प्रकार की क्लिष्टता नही आयी है अपितु इनके प्रयोग से कविता का कुछ सौंदय ही बढा है । राजस्थानी शब्दो के प्रयोग का एक कारण और भी है यहा के कुछ कवियो ने पहले राजस्थानी मे कविताए लिखनी आरम्भ की और बाद मे हिन्दी म । अत राजस्थानी का प्रभाव आना स्वाभाविक है । राजस्थानी शब्दो का जहा प्रयोग हुआ है वह कविता अपने स्थान विशेष का बोध कराती है । यदि उस शब्द को वहा से हटा कर दूसरा खडी बोली का या अन्य भाषा का शब्द प्रयोग करें तो उससे कवि अभीष्ट सफल नहीं हो सकता –

'घर का ही था राज काज सब खमा धणी कहत थे ।[2]

× × ×

'तरे रेतीले धोरो पर
उल्लास बिछाती सुबह–शाम''[3]

इस प्रकार से यहा पर तुडा मोटे तगडे, लिपला, थेपडी, सुरगा मरुधर आदि शब्दो को यहा की कविताओ म देख जा सकते है । एक बात और स्पष्ट है वह

१— रामदेव आचाय अक्षरो का विद्रोह पृ० २४
२— चन्द्रदेव शर्मा महाराज युनियन कविता से ।
३— मालदान देपावत 'मनुज' विप्लवगान ,, ३४

यह कि राजस्थानी शब्दों का प्रयोग जितना प्रारम्भ के कवियों ने किया है उतना प्रयोग आज के कवि नहीं कर रहे है।

विदेशी शब्दावली

भारतवर्ष पर अंग्रेजों से पहले मुगलों ने शासन किया और हिन्दुओं के साथ उनका सम्बन्ध काफी समय तक रहा है। इतने समय में एक साथ रहने के कारण ये दोनों संस्कृति परस्पर प्रभावित हुई है और भाषा का भी आदान प्रदान हुआ है। काव्य की भाषा भी उससे अप्रभावित नहीं रह सकी है। यहां तक कि संकल्प के साथ कविता लिखने वाले कवियों तक की भाषा में (प्रिय प्रवास) उर्दू के शब्द आ गये है। कुछ कवियों की कविताओं में इनका प्रयोग अधिक हुआ है

कहीं गम के फसाने है
कहीं पर जाम चलते है

× × ×

गुलशन में खिजाओं को, कही किश्ती है मौजों में'[1]

इन प्रारम्भिक कविताओं में इनका उपयोग कुछ कम हुआ है। हास्य कविताओं में भी इनका प्रयोग यत्र तत्र देखा जा सकता है —

'तो खुदा हसीनों की दुनिया में इनका भी नम्बर लावे।[2]

इस प्रकार से यहां की कविताओं में जन्नत जुल्फें हकीम आदि शब्दों को यत्र तत्र देखा जा सकता है।

भारतवर्ष पर अंग्रेजों ने करीब सौ वर्ष तक राज्य किया। अतः उनकी भाषा सीखना भी यहां के लोगों के लिए आर्थिक दृष्टि से आवश्यक हो गया था। इतने अधिक समय के कारण अंग्रेजी शब्द हमारी भाषा में बहुत अधिक घुल मिल गये हैं और बहुत अधिक ही प्रचलित है। प्रयोगवाद के साथ हिन्दी कविता में अंग्रेजी शब्दों का प्रचलन हो गया है। बीकानेर की कविता में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी हुआ है। यह प्रयोग प्रारम्भ की अपेक्षा बादकी कविता में अधिक हो रहा है —

१— ओम केवलिया — शबनम — पृ० ६१
२— भवानी शंकर व्यास — मुझे हंसी आती है — पृष्ठ १२

वह ड्यूक विलिंगटन बन बैठी
मुख की मशीनगन का फायर "[1]

× × ×

वह उठे सभी मुझको लग कर 'आ गया गधा तो एक नया
मै फस्ट इयर का फूल बना यह सब भी मैंने बहुत सहा ।'[2]

आज की कविता मे इनका प्रयोग कुछ और अधिक हा रहा है —

'सवत्र सिनेमा 'नो स्मोकिंग इन आडिटोरियम' कहे भल
इफ आब्जेक्टेड वाई को पैसेंजस नो स्मोकिंग इन ट्रेन चले ।"[3]

पर तु ऐसा प्रयोग प्रत्यक्ष कविता मे नही हुआ है और न ही कवियो ने ऐसा प्रयोग किया है ।

इस प्रकार स बीकानेर के काव्य म राजस्थानी सस्कृत उदू और अग्रेजी शब्दो का प्रयाग यत्र तत्र देखने का मिलता है । पर तु इन शब्दा स किसी भी प्रकार स कविता म क्लिष्टता नही आयी है, अपितु उसका सौ दय बढा हा है ।

(ख) मुहावरो का प्रयोग

डा० ओमप्रकाश गुप्त के अनुसार 'प्राय शारीरिक चेष्टाओ अस्पष्ट ध्वनियो कहानी और कहावतो अथवा भाषा के कतिपय विलक्षण प्रयोगो क अनुकरण या आधार पर निर्मित और अभिधेयाथ से भि न कोई विशेष अथ दने वाले किसी भाषा के गठे हुए रूढ वाक्य, वाक्यांश अथवा शब्द इत्यादि को मुहावरा कहते हैं ।'[4] मुहावरा क प्रयोग म काव्य मे एक अनूठा सौ दय आ जाता है । भावो की अभिव्यक्ति का ममस्पर्शी एव हृदयग्राही बनाने मे मुहावरे बहुत सहायक सिद्ध होते है । डा० मनोहर लाल गौड के अनुसार मुहावरेदार वाक्यो म वाचक वाक्यो की अपेक्षा चमत्कार और अथद्योतन की विस्तृत भूमि ता अधिक होती है पर लक्षणाओ की सी दुरूहता इनम नही होती । इसलिए इसका

१— भवानी शकर व्यास मुझे हसी आती है प० ७
२— आचाय चद्रदेव पडित जी गजब हो रहा है प० १४
३ — योगेन्द्र किसलय की कविता स ।
४— डा० ओमप्रकाश गुप्त मुहावरा मीमासा ४

सब साधारण मे प्रयोग किया जा सकता है।"[1]

बीकानेर की कविता म भी यत्र तत्र मुहावरा का प्रयोग हुआ है। मुहावरा का प्रयोग अन्य कविताओ की अपेक्षा हास्यरस की कविताओ म अधिक हुआ है, अ य प्रकार की कविताओ म इनका प्रयोग हुआ अवश्य है पर इतना नही —

सावन के अ धे मौन स्तब्ध कुछ समझ न पाते क्या होगा"[2]

राष्ट्रीय कविताओ म भी मुहावरो का प्रयोग हुआ है —

'युग-युग तक तो छुपा रहा है आस्तीन म
दात उखाडे ही जायेंगे उस विषधर के
सौ सुनार क फिर लुहार की आखिरी"[3]

हास्यरस की कविताओ मे ता मुहावरा ने हसी को और अधिक बढा दिया है —

'मा बाप बात करत हो तो चुपक स कान लगाती है
हो जाय सगाई पक्की तो गाला पर लाली छा जाती है।'[4]

× × ×

जो भौ ह चढान म न मिले जो आठ हिलाने म न मिले
वह मजा प्राप्त हो खिल खिल कर बस दात दिखाने मे"[5]

इस प्रकार स इन मुहावरो का प्रयोग आज हास्य की कविताओ और राष्ट्रीय कविताओ म तो हो ही रहा है परन्तु अब अ य प्रकार की कविताओ म इनका प्रयोग कुछ कम हो रहा है।

(ग) शब्द शक्तिया व काव्य गुण

काव्य म तीन प्रकार की शब्द शक्तिया मिलती है और तीन प्रकार के गुण भी —

शक्तिया

१) अभिधा

१— डा० मनोहर लाल गौड स्वच्छ द काव्य धारा और घनानद प० १३१
२— मेघराज मुकुल उमग ,, १८
३— ,, अनुगु ज ,, २१
४— भवानी शकर व्यास हास्यमेव जयते ,, ६८
५— ,, ,, ,, ६

२) लक्षणा

३) व्यजना

गुण —

१) ओज

२) माधुय

३) प्रसाद

आज की कविता ने भाषा के प्रयाग मे क्रातिकारी परिवतन किय हैं। उसमे अभिव्यक्ति के ऐस ऐसे अनेक माग खोज निकाले हैं जिनस पूव कवि परिचित नही थे। उन मार्गों के अनुसधान म लक्षणा शब्द शक्ति न भी काफी याग-दान दिया है।

बिम्ब विधान को भी अधिक बल मिला है। एमे कुछ लाक्षणिक प्रयोगो के उदाहरण यहा दिये जा रहे हैं —

'तेरा नफरत से मुसकाना
मुझ म अगारे भरता हैं [1]

+ + ×

जो तलवार स कटे नही
मैं तो वह बहता पानी हू। [2]

हास्य की कविताओ मे भी लक्षणा शब्द शक्ति का प्रयोग हुआ है —

' जयपुर अजमेर रोड चलती कितनो के बाचा बीच यहा [3]

व्यजना की क्रिया तो यत्र तत्र बिखरी पडी है —

"एक स्वस्थ व सु दर घोडे पर
आसन जमाय
जब एक कुरूप गधे ने

१	आचाय च द्रदेव शर्मा	--पण्डित जी गजब हो रहा है	पष्ठ ५५
२		-- ,, ,,	, १६
३	भवानी शकर व्यास	--मुझे हसी आती है	पष्ठ ६

घोडे पर चाबुक चलायो
तो घोडा तिलमिला उठा।"[1]

अभिधा शब्द शक्ति का तो कही भी अभाव नही है। निष्कर्ष रूप म यही कहा जा सकता है कि बीकानेर के काव्य म तीना ही शब्द शक्तियो का प्रयोग हुआ है।

बीकानेर के काव्य की भाषा में ओज माधुर्य और प्रसाद तीना गुण है। राष्ट्रीय कविताए यहाँ बहुत लिखी गई है और इन कविताओ म ओज गुण ही है और इसके अतिरिक्त अन्य कविताओ में भी इस गुण को देखा जा सकता है —

'मैं वह अगारे फेंकूगा
मैं वह ज्वाला धधकाऊगा
जो धधक उठेगी धाय धाय
जिसस मैं जलन मिटाऊगा।"[2]

"विजय हमारी है" सग्रह की भाषा ओज गुण प्रधान है। वीर रस प्रधान इस सग्रह की कविताओ मे भाषा मे महाप्राण व्यजनो म युक्त शब्दावली जिसम अनुरणात्मकता होती है, अधिक मिलती है। ओज क साथ माधुर्य गुण की भी यहा कमी नही है —

आचल सिक्त त्रिवेणी उर पर
अविकल अश्रुमति है कौन
आप निमज्जित अपने म है
भीगी पलका वाली कौन।"[3]

ओज और माधुर्य के साथ प्रसाद गुण सवत्र मिलता है, जा इस काल की सभी कविताओ म फैला हुआ है —

'कब स तेरे द्वार खडा हू
मदिर के पट बन्द पडे हैं
बडी भीड है भक्त खडे हैं

१— रामदेव आचाय — अक्षरा का विद्रोह — पृ० ३
२— आचाय चन्द्रदेव शर्मा — पडित जो गजब हो रहा है — पृष्ठ २०
२ चन्द्रमौलि — वैजयन्ती — पृष्ठ २६

अर्चा हो स्वीकार दीन की, चरण शरण मे आन पड़ा हू ।[1]"

× × +

उपनिषदों की इस भूमि मे धम कम सब पून
सस्कृति भूली यही टाल कर ऊचे ऊचे भूले ।"[2]

इस प्रकार बीकानेर की कविताओं मे कवि ने भाषा के गुण द्वारा भी उस प्रभाव को उत्पन्न करने की चेष्टा की है जो उसके अन्तरग द्वारा उत्पन्न करना कवि का अभीष्ट होता है और उसे उसमे पर्याप्त सफलता भी मिली है ।

बीकानेर काव्य मे छन्द योजना

छन्द और काव्य का आदि काल मे ही सम्बन्ध है । आदि मानव के कठ मे जब कविता फूटी होगी तो उसका रूप भी छन्दोबद्ध ही होगा । इससे यह तो स्पष्ट है कि छन्द का जन्म बहुत पहले हो गया था परन्तु कब हुआ इसके बारे में निश्चित रूप से कुछ नही कहा जा सकता छन्द शास्त्र के आदि प्रवतक महर्षि पिंगल माने जाते हैं । इसलिए छन्दशास्त्र को पिंगल भी कहते हैं । मात्रा, वर्ण विराम, गति लय तथा तुक आदि के व्यवस्थित सामजस्य को ही छन्द की सज्ञा दी जाती है ।

ऐतिहासिक दृष्टि से छन्दों के दो भेद हैं — वदिक और लौकिक । लौकिक छन्द को भी दो भागों मे बाटा जाता है — मात्रिक और वर्णिक । मात्रा के आधार पर रचे गये छन्द मात्रिक और वर्ण के आधार पर रचे हुए छन्द वर्णिक कहलाता है ।[3]

अब यह देखना है कि बीकानेर के काव्य मे किस प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया गया है । बीकानेर के काव्य मे मात्रिक छन्द ही लिखे गये हैं और वे भी आलोच्यकाल की सभी कविताओं मे नही मिलते अपितु शम्भूदयाल आचार्य चन्द्रमौलि मेघराज मुकुल माणकचन्द रामपुरिया आदि कवियों की कविताओं मे विशेष रूप से देखे जा सकते हैं । इन कवियों मे भी छन्द योजना प्रारम्भिक कविताओं मे है बाद की कविताओं मे अभाव है ।

१— आचार्य चन्द्रमौलि	विथिका	पृ० १२
२— शम्भूदयाल सक्सेना	नीहारिका	,, ८५
३— नन्ददुलारे वाजपेयी	आधुनिक हिन्दी कविता म निबन्ध	,, २३

मात्रिक छ दो मे ही सबसे अधिक १६ मात्राओ वाले छ दो की रचना हुई है। यह सभी कवियो की कविताओ मे है।

पद्धरि छद

"परिवर्तित गति बहता समीर
विहगावलि के स्वर म विलास।
वेदना-सदन, अस्तित्व हीन,
कण कण मे छाया मधुर हास।"[1]

इ दुकला

"वह मदन भस्म से बनी हुई,
वह छवि-सुषमा की छुई मुई
पड आसमान की चादर के
नीचे सोती ले निश्चलता। [2]

आचार्य च द्रमौलि, की वीथिका' और माणकच द रामपुरिया के 'आभास' मे इसी छद का प्रयोग अधिक हुआ है। इसी प्रकार 'मधुज्वाल' और 'स्वरालोक' में भी १६ मात्राओ के छन्द का प्रयोग हुआ है। १६ मात्राओ के अतिरिक्त अन्य मात्राओ के छन्द भी है —

राधिका

"यह अर्थहीन कल्पना स्वप्न-द्रष्टा की
मानस मे रह व्यभिचार किया करती है।
कुछ महल हवा म बनते और बिगडते,
विकृत जीवन की लाश यहा जलती है।" [3]

सार छ द —

जाने कौन भाव स मैंने खीची थी वह रेखा
मेरी मधुर कल्पना को किस दिव्य दष्टि न देखा। [4]

१	आचाय च द्रमौलि	वैजय ती	पृ० १
२	शम्भूदयाल सक्सेना	रैनबसेरा	' ५०
३	मेघराज मुकुल	उमग	" ३६
४	शम्भूदयाल सक्सेना	नीहारिका	पृ० ३१

ताटक छ द —

भाई रण को चले, बहिन । तुम रक्षा-ब धन लाओ ता ।
हस हस तिलक करा जब जायें गीत विजय क गाग्रो तो ।
ग्रौर चले जाने पर बन कर देश-सेविका धाग्रो तो ।
पग-पग पर आहत हो कि तु न तुम घबराग्रो ता । '[1]

उपयु क्त छ दो के ग्रतिरिक्त ग्रौर छन्द भी काव्य मे दखे जा सक्ते है । पर तु वह केवल प्रारम्भ की कविताग्रा मे ही है ग्राज की कविताग्रा म नही ।

इम प्रकार से जहा बीकानर जिले मे म्वात=त्र्योत्तर काव्य चेतना आयी उससे काव्य का बहिरग पक्ष भी अछूता नही रहा है । यहा के कवि ने जहा स्थानीय विपयो का वरान किया है वहा पर स्थानीय शब्दो का भी यत्र तत्र प्रयोग किया जिससे विषय की स्थानीयता अधिक प्रभावशाली बन कर पाठक के सम्मुख उपस्थित हुई । इसके साथ ही जहा बीकानेर के काव्य ने कुछ समय तक हि दी काव्य का ग्रनुकरण किया ग्रौर ग्राज वह उसके कदम से कदम मिलाकर चल रहा है यही बात यहा के कला-पक्ष के बारे मे कही जा सकती है । यहा का कवि केवल भाव-पक्ष की दष्टि से ही ग्रागे बढने म सफल नही हुग्रा है ग्रपितु उसने कला-पक्ष को भी साथ रखा ग्रौर उसमे भी नवीनता का प्रयोग कर रहा है ।

= =

१ शम्भूदयाल सक्सेना —नीहारिका पृ० ३१

हिन्दी साहित्य में बीकानेर काव्य का वैशिष्ट्य और योगदान

हिन्दी काव्य के इतिहास पर यदि हम दृष्टि डालें तो उससे यह स्पष्ट हो जायगा कि हिन्दी काव्य में आज तक बहुत सी प्रवृत्तियां जन्म ले चुकी हैं। किसी प्रवृत्ति का समय कुछ अधिक रहा है और किसी का कम। आधुनिक युग में ही कविता ने कई करवटें बदली है। रीतिकाल की समाप्ति पर जहां से आधुनिक काल (सं० १६००) प्रारम्भ होता है वहां कविता का एक अलग स्वरूप है जिसे भारतेन्दु काल की कविता कहा जाता है। उसके बाद कुछ समय तक द्विवेदी युग की कविता का बोलबाला रहा है और फिर छायावाद, प्रगतिवाद और प्रयोगवाद का समय रहा है। इस प्रकार आधुनिक काल में स्वतन्त्रता से पूर्व हिन्दी काव्य में कई प्रवृत्तियों ने जन्म लिया है।

सन १६४७ को भारत स्वतन्त्र हुआ और रियासतों का एकीकरण हुआ तथा इससे आपस में सम्पर्क बढ़ने लगा। देशी राज्यों में वाणी पर लगा हुआ प्रतिबंध भी इसी परतन्त्रता के साथ चला गया। जो भावनाएं स्वतन्त्रता से पूर्व दबी पड़ी थी उनको अब अभिव्यक्ति मिलने लगी। बीकानेर में यद्यपि स्वतन्त्रता से पूर्व भी कविताएं लिखी जा रही थी परन्तु स्वतन्त्र होते ही यहां के लोगों का ध्यान हिन्दी के अनुकरण पर साहित्य-सर्जना की ओर गया और सभी ने अपनी अपनी रुचि के विषयों के अनुसार कविताएं लिखनी प्रारम्भ कर दी। यही कारण है कि यहां आलोच्यकाल में सभी प्रवृत्तियों की कविताएं एक साथ लिखी जाने लगी। किसी ने छायावादी ढंग की रचनाएं प्रारम्भ की, तो किसी ने प्रगतिवादी ढंग की। और इस प्रकार एक साथ ही बहुत सी दबी हुई वाणी को अभिव्यक्ति प्राप्त हुई।

साहित्य का वातावरण तो यहां पर प्रारम्भ से रहा है चाहे वह संस्कृत साहित्य परक हो और चाहे वह डिंगल साहित्य परक हो। स्वतन्त्रता से पूर्व

यद्यपि ड्गर महाविद्यालय उच्च शिक्षा का केन्द्र बना हुआ था, परन्तु स्वतन्त्रता के पश्चात् यहां पर अनेक साहित्य संस्थाओं की स्थापना हुई और साथ ही पत्र पत्रिकाएं भी निकलनी प्रारम्भ हुई, जिनमें इस समय में काव्य सृजना करने वाले कवियों को प्रोत्साहन मिला और वे पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होकर जनता के सामने आये। इस प्रकार स्वतन्त्रता प्राप्ति से लेकर आज तक निरन्तर यहां पर काव्य सृजना हो रही है और इस आलोच्य काल के प्रारम्भिक दशक में यहां के कवियों ने एक साथ हिन्दी के अनुकरण पर जो अनेक वादों की कविताएं लिखना प्रारम्भ किया तो उससे बीकानेर के काव्य में एक अभाव की पूर्ति तो हुई है पर साथ ही उसके द्वारा हिन्दी के आधुनिक युग की प्रवृत्तियों की एक संक्षिप्त उद्धरणी भी हुई है। और उसके बाद वह हिन्दी जगत के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने लगा है।

भाव वैशिष्ट्य और योगदान

स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय हिन्दी काव्य में प्रयोगवाद चल रहा था और बीकानेर में हिन्दी कविता की यह शैशव अवस्था थी। इसी समय में यहां पर एक साथ कई प्रवृत्तियों का प्रचलन हुआ। हिन्दी काव्य के अनुकरण पर ही यहाँ जो छायावादी कविताएं लिखी गई वे कविताएं उस स्तर तक नहीं पहुंच पायी जिस प्रकार की हिन्दी काव्य में छायावादी कविताएं अपने समय में लिखी जा चुकी थी। इसका कारण यह है कि बीकानेर में तो यह हिन्दी कविताओं का प्रारम्भिक काल था और हिन्दी साहित्य में छायावादी कविता उसके विकास की स्थिति की द्योतक है। परन्तु इससे यह अवश्य हुआ कि बीकानेर में हिन्दी कविता का एक ऐसा वातावरण सा बन गया था जिससे अन्य प्रवृत्तियों और कवियों का भी प्रोत्साहन और मार्ग दर्शन हुआ। इस समय में अधिकतर कविताएं प्रकृति चित्रण और राष्ट्रीय भावना को लेकर ही लिखी गई थी। राष्ट्रीय कविता के रूप में कवियों के जो उद्गार प्रस्फुटित हुए उसमें उनकी राष्ट्रीय भावना झलकती है और प्रकृति चित्रण में स्थानीय रंग का पुट दिखाई दे रहा है। परन्तु इस प्रवृत्ति का प्रचलन अधिक समय नहीं रहा और प्रगतिवादी स्वर अधिक मुखरित होने लगा। इसका यह अर्थ नहीं कि छायावादी स्वर पूर्णतया ही लुप्त हो गया।

समाज में चली आ रही मान्यताओं परम्पराओं और रूढ़ियों आदि सभी का विरोध करना वास्तव में कठिन काम है। सामाजिक इतिहास पर दृष्टिपात करने पर ज्ञात होता है कि समाज में व्याप्त इन परम्पराओं का विरोध

करने वालो मे बहुतो को अपने प्राण तक से हाथ धोने पडे है । बीकानेर म भी इस प्रकार की पुरानी परम्पराओ धार्मिक अधविश्वास और सामाजिक रूढियो आदि ने समाज को बुरी तरह से जकड रखा था । बीकानेर के कुछ कवियो ने धार्मिक पाखण्ड, सामाजिक रूढियो आदि के विरुद्ध आवाज उठायी और उन्ह समाप्त करने की घोषणा की । इसका यह अथ नही कि प्रगतिवादी काव्य मे इन सबके विरुद्ध मे आवाज लगाई जाती है अपितु यहा के कवि को वास्तव मे अपने आस पास क समाज और धम मे य सब बातें नजर आ रही थी अत वह विद्रोहात्मक स्वर मे इन सभी का नष्ट-भ्रष्ट करन लगा और साथ ही क्राति का आवाहन भी उसने किया क्योकि बिना क्राति के इन सबका नष्ट होना सम्भव नही है । इन कवियो ने मूर्ति पूजा का खडन किया और पत्थर के भगवान का अस्तित्व ही समाप्त करन की घोषणा की और यह बताया कि मदिर म बसने वाला ईश्वर साधारण पत्थर क सिवाय कुछ नही है । इन धार्मिक पाखण्डो के विरोध के साथ इन्होने शोषको का भी विरोध किया और इनको समाज का सबस बडा शत्रु घोषित किया । इस प्रकार से इन कवियो न धार्मिक पाखण्डो सामाजिक रूढिया और परम्पराओ का घोर विरोध किया है और इन सबको नष्ट करने के लिए सामाजिक क्राति का नारा लगाया । इस प्रकार की कविताए लिखने वाले कविया म अधिकतर वे थे जो स्वतत्रता से पूव ही दबी जबान स कुछ बोलत थे परन्तु स्वतन्त्रता क उपरान्त य पूर्ण खुलकर बोले । जब इस प्रकार की कविताए बीकानेर म लिखी जा रही थी तो उसी समय मे नये पीढी के कविया ने काव्य के क्षेत्र म पदापण किया ।

जिस प्रकार की अस्पष्ट अभिव्यक्ति, रामानियत और हल्के फुल्के भाव आदि किसी भी कवि की आरम्भिक कविताओ म होना स्वाभाविक है । वसी ही दृष्टि बीकानर की नया पीढी की प्रारम्भिक कविताओ म है । पर नयी पीढी का कवि इस समय पीछे की प्रवृत्ति का अनुकरण नही करना चाहता था । वह जल्दी से जल्दी हिदी काव्य क साथ चलना चाहता था और इसी लालसा स उसने अपनी गति को कुछ तज किया जिसक परिणाम स्वरूप वह आज हिन्दी काव्य के साथ चल रहा है, पीछे नही है । इसस यह बात निश्चित रूप स कही जा सकती है कि आगे आने वाल काल म बीकानर का कवि हिदी काव्य को बहुत कुछ दे सकेगा ।

बीकानेर म हास्य की कविताए भी लिखी गई हैं । प्रारम्भ मे आचाय चन्द्रदेव शर्मा ने ऐसी ही कविताए लिखी, परन्तु वहाँ हास्य की अपेक्षा व्यग्य की

प्रधानता है। आगे चलकर भवानी शकर व्यास ने शुद्ध हास्य की कविताए लिखी है और उनके दूसरे सग्रह की कविताओ म यद्यपि कही कही व्यग्य भी है, पर हास्य की कमी नही है। हास्य रस की इन कविताओ का हिन्दी के हास्य रस म विशेष योगदान माना जा सकता है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद देश पर दो बार आक्रमण हो गये और दोना अवसरो पर ही देश भर मे बहुत सी राष्ट्रीय कविताए लिखी गई है। इन कविताओ म कही राष्ट्रीय गौरव की बात है तो कही अपनी मातृभूमि पर बलिदान होने वाले वीरो की गाथा है। कही शत्रुओ को ललकारा है तो कही उनकी दुष्टता का कोसा है। इन दोनो अवसरो पर बीकानेर मे भी इसी प्रकार के काव्य की रचना हुई है। ऐसे समय मे यहा के पिछडे हुए काव्य ने हिन्दी काव्य के साथ ही कदम बढाने प्रारम्भ कर दिये है।

शिल्प वैशिष्ट्य और योगदान

बीकानेर म स्वतन्त्रता से पूर्व सस्कृत और डिंगल म बहुत कुछ लिखा गया है। अत उनका प्रभाव आलोच्य काल पर पडना स्वाभाविक ही है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात उसी समय मे लिखने वाले कवियो की भाषा म तत्सम शब्दो का प्रयोग बहुत अधिक हुआ परन्तु कालान्तर म यह बात नही पायी जाती और उसके बाद निरन्तर यहा के काव्य मे तद्भव शब्दो का प्रयोग बढ रहा है। नयी पीढी के कवियों की कविताओ में विदेशी शब्दो का प्रयोग भी बहुत बढ रहा है और यह प्रयोग केवल बीकानेर मे ही नही अपितु आज की हिन्दी कविता म भी ऐसा हो रहा है। अत इस प्रभाव से बीकानेर के काव्य का अछूता रहना असम्भव है।

बीकानेर काव्य की भाषा सम्बन्धी एक विशेषता यह है कि बहुत से कवियो ने जब स्थानीय जीवन व प्रकृति का चित्रण किया है तो उसके लिए स्थानीय शब्दावली का प्रयोग आवश्यकतावश किया है क्योकि कुछ वस्तुओ के लिए हिन्दी म शब्द है ही नहीं। इस प्रकार म इन शब्दो का अधिक प्रयोग होने पर ये वास्तव म हिन्दी कोश के शब्द बन जायेंगे और इस दृष्टि से इनका यह योगदान हिन्दी भाषा के लिए प्रशसनीय ही माना जायगा। वास्तव मे देखा जाय तो भाषा के विकास म इस प्रकार के कवियो का योगदान बहुत होता रहा है। कविता मे तुक मिलाने के लिए या फिर अपने छद की आवश्यकता के कारण उन्होने शब्दो का रूप परिवर्तन कर उन्हे कविता म प्रयोग किया है और इस

प्रकार वे धीरे धीरे प्रयाग म आने लग गये हैं।

राजस्थानी के 'मादक' 'भवरजाल', 'सदा सुरगा' मरुधरा और 'भू गे का भूत' आदि ऐसे शब्द हैं जो यहा की सस्कृति से सम्बन्ध रखते हैं और उनके पीछे एक परम्परा है ऐसे शब्द आकर हिन्दी की श्री वृद्धि कर रहे हैं। इसी प्रकार और अनेक शब्दो का प्रयोग हुआ है। जिससे एक ओर तो स्थानीय वातावरण की झलक मिलती है और दूसरे नय शब्दो का प्रयोग भी हुआ है। इस प्रकार अनेक नये शब्दा का निर्माण यहा पर हुआ है और होता जा रहा है। धीरे धीरे इन शब्दा के प्रयोग करने पर एक दिन ये हिन्दीकोश म अवश्य ही वृद्धि करेंगे।

बीकानेर जिले मे, कविताओ के साथ साथ गीत भी लिखे गये हैं पर कविताओ की अपेक्षा गीत कम लिखे गय हैं। बीकानेर के प्रारम्भिक गीत अवश्य ही छद मे वध कर आय हैं, परन्तु आगे चल कर इस ब धन को गीतकार ताडता हुआ दृष्टिगोचर होता है। आज किसी भी प्रकार से गीत छ द के वधन म नही है। उसमे अपनी एक लय है। यद्यपि यहा पर लम्ब गीत भी लिखे जा रहे हैं पर साथ ही गीतो को छोटे छोटे टुकडा मे ताड कर भी गाया जा रहा है। यहा क गीत राजस्थानी सस्कृति का चित्र प्रस्तुत करत हैं, और उसमे सहायता इनम प्रयुक्त शब्द देते हैं जिसस उनमे स्थानीय रग आ जाता है।

बीकानेर के काव्य म उद्बोधनात्मक, वर्णनात्मक, प्रतीकात्मक, व्यग्यात्मक आदि शैलियों का प्रयोग रहा है। प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग अब और अधिक बढ रहा है। व्यग्यात्मक शैली यहा पर प्रारम्भ स ही रही है। आज भी उसका प्रयोग बढता ही जा रहा है।

इस प्रकार स बीकानेर म काव्य का जन्म यद्यपि हिन्दी काव्य जन्म से बहुत बाद म हुआ है और इस दृष्टि से जन्म के उपरा त इस काव्य ने हिन्दी काव्य से बहुत कुछ सीखा है और कुछ समय तक उसी के चरण चिन्हा पर चलता रहा है परन्तु इसक चलने की गति काफी तेज रहा है और इस प्रकार स जिस रास्ते को पार करने के लिए हिन्दी काव्य जगत का बहुत से वर्ष दो देने पडे उसी रास्त को बीकानेर काव्य ने बहुत ही कम समय म पार कर लिया और उसी तेजी के कारण आज वह हिन्दी काव्य से पीछे नही है अपितु साथ साथ चल रहा है।

==

आधार पुस्तकें

आचाय चन्द्रदेव शर्मा —पंडित जी गजब हो रहा है
आचाय चन्द्रमौलि —वीथिका
" " —वैजयन्ती
ओम केवलिया —शबनम
सं० नन्दकिशोर आचाय —संवेदन इति
बल्लभेश दिवाकर —नई वाणी
" " —मैं एकाकी नही चलूगा
" " —मैं गीत सुनाता जाऊगा
भरत व्यास —मरुधरा
भवानी शकर व्यास 'विनोद' —मुझे हसी आती है
" " " " —हास्यमेव जयते
मगल सक्सेना —मैं तुम्हारा स्वर
माणकचन्द रामपुरिया —आभास
" " —कल्लोल
" —मधुज्वाल
" " —सदीप्ति
" " —सवेग
" " —स्वरालोक
मालदान देपावत 'मनुज' —विप्लवगान
मेघराज 'मुकुल' —उमग
" " —अनुगूज
रामदेव आचाय —अक्षरो का विद्रोह
सहिता द्वारा सम्पादित —विजय हमारी है।
शम्भूदयाल सक्सेना —अमरलता
" " —उत्सग
" " —नीहारिका
" " —भिखारिन

शम्भूदयाल सक्सेना	—मन्वन्तर
,, ,,	—रत्न रेणु
,, ,,	—रैन बसेरा
हरीश भादानी	—अधूरे गीत
,, ,,	—एक उजली नजर की सुई
,, ,,	—सपन की गली
,, ,,	—सुलगते पिंड
,, ,,	—हँसिनी याद की
सम्पा० ज्ञान भारिल्ल प्रेम सक्सेना	—प्रस्तुति

सहायक पुस्तकें

डा० ओम प्रकाश	—मुहावरा मीमांसा
कर्नल टाड	—राजस्थान का इतिहास
डॉ० करणी सिंह	—बीकानेर राजघराने का केन्द्रिय सत्ता से सम्बन्ध
Caption P W Powlett	Gazetteer of the Bikaner State
डॉ० कुमार विमल	—सौन्दर्य शास्त्र के तत्व
कैलाश वाजपेयी	—आधुनिक हिन्दी कविता मे शिल्प
डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त	—साहित्यिक निबन्ध
गुलाब राय	—काव्य के रूप
गौरीशंकर आचार्य	—बीकानेर परिचय
गौरीशंकर हीराचन्द ओझा	—बीकानेर राज्य का इतिहास—पहला भाग
,, ,,	—बीकानेर राज्य का इतिहास—दूसरा भाग
दिवाकर शर्मा	संस्कृत साहित्य को बीकानेर क्षेत्र की देन (अप्रकाशित)
पण्डित विष्णुदत्त शर्मा	—श्री कपिलायतनतीर्थमहात्म्यम्

डॉ॰ मनोहर लाल गौड —स्वच्छन्द काव्य धारा और घनानद
महादेवी वर्मा —विवेचनात्मक गद्य
रामचन्द्र शुक्ल —चिन्तामणि –प्रथम भाग
स॰ श्री सत्यदेव विद्यालकार —बीकानेर का राजनैतिक विकास और पण्डित मघाराम वैद्य
सरोजिनी मिश्रा —साहित्य शास्त्र के सिद्धात
डॉ॰ शकुन्तला दुबे —काव्य रूपों का मूल स्त्रोत और उनका विकास
श्यामसुन्दर दास —साहित्यालोचन साहित्य दपण, अग्नि पुराण, काव्यानुशासन

पत्र-पत्रिकाएं

मतवाला —सन् १६५१ से ५५ तक
लोकमत —सन १६५५ से ६८ तक
वातायन —सन् १६६१ से ६६ तक
सेनानी —सन १६५० से ६८ तक
सप्ताहान्त —सन् १६६८



बनवारी लाल सहू



★ जन्म
श्रावण बदी दूज, स
महाराली (पाकिस्त

★ शिक्षा
डूगर महाविद्यालय
एम० ए० (हिन्दी)

★ प्रकाशन
कॉलिज एव अन्य लघु
मे कहानिया एव ि
प्रकाशित

★ सम्प्रति
'राजस्थान का हिन्द
साहित्य' विषय पर
में सलग्न

★ सम्पर्क
द्वारा बोरवल सोनी
ग्राम० पो० पीलीबग
श्री गगानगर